॥ श्रीः ॥

जगत्प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपीयर के

'जुलियस सीज़र' का प्लाट

काली नागिन।

(बम्बई की पारसी नाटक कम्पनियों का एक प्रसिद्ध खेल)

जिसे

"उपन्यास-बहार आफिस" काशी; बनारस के अध्यक्ष
जयरामदास गुप्त ने नाटक प्रेमियों के विनोदार्थ,
बहुत व्यय और परिश्रम के उपरांत, अपने मित्र
मुंशी जलालअहमद 'शाद' लेट आफ दि
टाइम्स थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ कल-
कत्ता से मांगकर नागराक्षरों में
सम्पादित और प्रकाशित किया।

पण्डित सुदर्शनाचार्य्य बी. ए. द्वारा
सुदर्शन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित।

प्रथम बार] सेप्टेम्बर १९१४ ई० [मूल्य

खुलासा तमाशा।

पहिला एक्ट; पहिला सीन—मिश्र की हसीन मल्का दिलफरेब के हुक्म से परीजमालों का बज्म निशात तरतीब देना। जवानान तुर्क की हसीनान मिश्र से छेड़ छाड़; मल्का दिलफरेब और बहादुर गज़न्फरपाशा नायब जहांदारशाह मरहूम की बाहम प्यार व मोहब्बत की बातें; वफादार तौफीक की इनकी हालत पर मलाल करना। ऐसे वक्त पर शहर रूम से मल्का रौशनअख़्तर का भेजवाया हुआ एक जासूस आता है और वहाँ से लाया हुआ नामा पेश करता है। लेकिन यह बात उसे बहुत बुरी लगती है। तौफीक मल्का की सच्ची तहरीर की ताईद करता है। मगर दिलफरेब के मोहब्बत के चलते हुए जादू से इसकी कोशिशें बेकार होती हैं और गज़न्फर दिलफरेब की मरजी पाकर उस कासिद को पाबजंजीर का खत के जवाब में रूम ले जाने का हुक्म देकर चला जाता है। दूसरा सीन—हर दो हरीफ शेरदिल व जातशरीफ शहनाज के पास शादी के तलबगार बनकर आते हैं। शहनाज़ मजबूर होकर यह शर्त पेश करती है कि, अगर तुम दोनों में से कोई एक दूसरे को किसी हीला से मेरे मकान से निकाल देगा तो वही मुझ से शादी करने का मुस्तहक़ होगा। दोनों ख्वास्तगार शर्त को मंजूर करके शहनाज़ के चालाक नौकरों के जरिये से एक दूसरे को घर से निकाल देने के लिये फरेब की बाजी बिछाते हैं। जातशरीफ शेरदिल के फरेब की बंदूक का निशाना होता है और नाकामी पर रोता चला जाता है।

तीसरा सीन—वलीअहद जर्रारपाशा फरजिन्द शाह जहांदार मरहूम गजन्फर की गफलत से फायदा उठाना चाहता है। खुशामद नौकर की जबानी यह खबर सुन कर कि जुमला रियाया-रूम गजन्फर से बगावत पर आमादा है, अपनी नुमायां कामयाबी पर मुसर्रत जाहिर करता है। इस असना में गजन्फर का बड़ा भाई रज़ापाशा वहां दाखिल होकर वलीअहद जर्रार को नसीहत के परदे में बहुत कुछ मलामत करता है। जिसके सिलसिले कलाम को बागियों के गोल का शोर गुल तोड़ देता है। और वे हाथों में मशाल पकड़े हुए दाखिल होते हैं। कुछ देर तक रज़ापाशा और बागियों के बीच जबान आराइयां होती हैं, यहां तक कि ज़र्रार से तेग़ आजमाई की नौबत पहुँचती है। मगर रौशन-अख्तर और शाहजादा यूसुफ के अचानक आ जाने से रज़ा-पाशा का हाथ झुक जाता है। मलका बागियों की बगावत को फरोग़ करने में कामयाब होती है। बाग़ी खामोश हो कर चले जाते हैं। इसके बाद ही कासिद को पाबोजंजीर सामने खड़ा पाती है। दरियाफ़्त हाल से कासिद की बेगुनाही और अपने शौहर की बेवफाई का इनकशाफ हाल होता है। जिससे यह नाशाद मलका गम की आँसू बहाती हुई मिश्र को अकेले रवाना हो जाती है। इधर ज़र्रार भी अपने नौकर खुशामद को शाहजादा यूसुफ का सर काट लेने की हिदायत करके चला जाता है। चौथा सीन—खुशामद यूसुफ के ख्वाबगाह में दाखिल होता है। कब्ल इसके कि वह उसे कत्ल करे शाहजादा एक खौफनाक ख्वाब के नजारे के सदमे से जाग उठता है और खुशामद को खूंरेज़ी पर

आमादा पाकर मिन्नतें करता है; आखिर जल्लाद का सख्त दिल नर्म पड़ जाता है और उसे शहर रूम छोड़ने की ताकीद करके वह खुद चला जाता है। पांचवां सीन— ज़ातशरीफ, छलावा और बिगड़ेदिल व दिलनवाज़ शादी के इंतजार में खुश खुशनज़र आते हैं। दिलेरजंग छलावा का हाथ ज़ातशरीफ और दिलनवाज़ का हाथ बिगड़ेदिल के हाथ में पकड़ा देना चाहता है कि एक नौकर किसी गुमनाम शख़्स की भेजी हुई चिट्ठी लाकर दिलेरजंग के हवाले करता है। बुड्ढा इस खत को पढ़ कर अपने होने वाले दामादों को नौकर से धक्का दे कर घर से निकलवा देता है। ज़ातशरीफ और बिगड़ेदिल यह मालूम करके कि किसी ने बूढ़े को हमारे बुज़दिल होने का यकीन दिलाया है, यह सलाह ठहराते हैं कि नकली लड़ाई का तमाशा दिखा कर बेवकूफ बूढ़े को अपने बहादुर होने का यकीन दिलायें। बूढ़ा दोबारा अपने दामादों की बहादुरी का तमाशा देखने के लिये आता है। ज़ातशरीफ और बिगड़ेदिल मसनूई जंग का तमाशा दिखा दिखा कर बूढ़े को बहुत ही दिक करते हैं। यहां तक कि बूढ़ा अपने बुज़दिल दामादों की जवांमर्दी का कायल हो जाता है। तालिब और मतलूब का हाथ मिला देता है। छठां सीन— रौशनअख़्तर फरियाद करती हुई अपने शौहर और दिल-फरेब की खिदमत में हाजिर होती है। नामुन्सिफ बादशाह अपनी मल्का के यों बेहुक्म ख़्वाबगाह में चले आने से नाराज होकर निहायत हिकारत के साथ पेश आता है और बिगड़े-दिल पहरेदार के कत्ल का हुक्म देता है। मल्का के गिड़-गिड़ाने से गजन्फर का दिल दिलफरेब की मोहब्बत से हट

जाता है। चालाक दिलफरेब शाह को अपनी खुदकशी की बुज़दिलाना धमकी से फिर अपनी तरफ मायल कर लेती है; गज़न्फर इसकी फरेब में आकर रौशनअख्तर को गोली मार देता है। ठीक इसी वक्त एक रूमी मुखबिर शाहजादे यूसुफ के मरने की खबर देता है और वह इस अचानक चोट से बेहोश होकर गिर पड़ता है। ड्राप।

दूसरा एक्ट; पहिला सीन—गज़न्फर अपने लड़के के खूनी का पता लगाने के लिये रूम आया हुआ है। और अपने भाई रज़ापाशा और वली अहद ज़र्रार की गफलत पर अफसोस जाहिर करता है। कीनावर ज़र्रार रज़ा पर कत्ल का झूठा इलजाम लगाता है। गज़न्फर अपने भाई की हालत पर हिकारत जाहिर करता है और ज़र्रार की इस्तदुआ पर उसकी बहन हुस्नपरवर से शादी करने पर राजी होकर मय आराकान दौलत शादी के इंतजाम के लिये जाता है। दूसरा सीन—गज़न्फर मय अराकान दौलत शादी के खुशा-मन्द जल्सा में शरीक फरमाता है। ज़र्रार अपनी बहिन की शादी गज़न्फर से कर देता है। दूल्हा दुलहिन अपनी ऐश की घड़ियां बिताने के लिये रूम से छावनी की तरफ रवाना हो जाते हैं। दग़ाबाज ज़र्रार सिपाहियों को बुलाकर रज़ापाशा के गिर-फ्तारी की ताकीद कर चला जाता है। तीसरा सीन—दिलफरेब गज़न्फर की जुदाई में बेकरार नज़र आती है। ऐन इंतजार में कासिद आकर गज़न्फर की नई शादी की खबर देता है। मल्का इस खबर को सुन कर बदहवास हो जाती है, फिर अपने हमजलीसों के इसरार से मजबूर

होकर शहर रूम जाने की ठहराती है। चौथा सीन—
ज़ातशरीफ बिगड़ेदिल की रूह बन कर दिलनवाज के
घर में घुस आता है। छलावा जो कि इस वक्त अपनी बहन
से मिलने को आती थी, आहट पाकर छिप जाती है। ज़ात-
शरीफ हस्बदस्तूर दिलनवाज को जगा कर बिगड़ेदिल की
सफर में मर जाने का यकीन दिला कर वसीयत करता है
कि, तू ज़ातशरीफ से अपना निकाह पढ़वा ले। छलावा
अपने बदकिरदार खाविंद के फरेब से आगाह होकर उसके
जाने के बाद दिलनवाज से सब असली माजरा कह सुनाती
है और उसके कहने से पुलिस बुलाने जाती है। इत्तफाकन
बिगड़ेदिल जा खुशकिस्मती से गिरफ्तार होने से पहिले ही
किसी तरफ को भाग गया था, घर में खुफिया तौर से
दाखिल होता है और अपनी बीबी दिलनवाज को आती हुई
देख कर खुशी से मिलने को आगे बढ़ता है। दिलनवाज इस
ख्याल से कि, यह ज़ातशरीफ है बिगड़ेदिल को झिड़क
देती है और धोके धोके में अपने शौहर की खूब ही फजीहता
करती है। और उसे गिरफ्तार कराने के लिये खुद पुलिस लेने
जाती है। ज़ातशरीफ दोबारह बिगड़ेदिल की रूह बन कर
आता है और धीरे धीरे ज़ातशरीफ की कारस्तानी बिगड़े-
दिल को मालूम हो जाती है और वह खुद दिलनवाज की
जगह पलंग पर लेट जाता है। ज़ातशरीफ धोके में बिगड़े-
दिल को वसीयत सुनाता है। बिगड़ेदिल आखिरकार जाहिर
हो जाता है और इधर दिलनवाज पुलिस को लेकर आन
पहुँचती है और ज़ातशरीफ को अपना शौहर बता के गिर-
फ्तार करवा देती है। मगर छलावा बीच में पड़ कर अपने

शौहर को छुड़ा लेती है। खुशकिस्मती से बिगड़ेदिल की गिरफ़ारी के वारंट की मन्सूखी का हुक्म पुलिस के नाम आता है और बिगड़ेदिल ज़ाहिर होकर अपनी बीवी के बगलगीर होता है। पांचवा सीन—गज़न्फर अपने भाई के खत को पढ़कर उसके मारे जाने की खबर पर गम का आँसू बहाता है और ज़रीर से अपने भाई के खून का बदला लेने के लिये दिल को मजबूर करता है। हुस्नपरवर अपने भाई की नालायक हरकतों पर अफसोस जाहिर करके शाह की हमदर्दी फरमाती है और अपने भाई को इस काम से बाज रखने के लिये रूम को अकेले रवाना होती है। छठां सीन—छलावा अपने शौहर के हथकड़ों से वाकिफ होकर उसके ख्वाजासरा से अपने यार मुश्ताक को बुलवाती है। असनाए मुलाकात में ज़ातशरीफ आ पहुँचता है। छलावा यार को फौरन् एक संदूक में छिपा देती है। ज़ातशरीफ घर में दाखिल होने पर बकरा काटने के लिये संदूक को खोलता है। मुश्ताक फिकरा बना कर वहाँ से भाग निकलता है। ज़ातशरीफ के दिल में शक गुजरने से वह मुश्ताक को ललकार कर ठहरा लेता है और बातों बात में राज़ फाश होने की नौबत पहुँचती है। मुश्ताक मौका पाकर उड़नछू हो जाता है। इधर वह छलावा को बदकारी के जुर्म में बांध कर सो जाता है। ख्वाजासरा दोबारा आता है और छलावा को मुश्ताक से मिलने की तरगीब दिला कर खुद छलावा की जगह लटक पड़ता है। ज़ातशरीफ ख्वाजासरा के चिल्लाने से जाग कर छलावा के धोखे में ख्वाजासरा की नाक काट लेता है। इस अरसे में छलावा यार से मिल कर अपनी

जगह आ जाती है; ख्वाजामरा जाता है। छलावा एक नया फिकरा गढ़ती है और खुदा से दोबारा नाक पाने का इज़हार करके बेवकूफ शौहर के दिल से सब बदगुमानियां दूर कर देती है। सातवां सीन—शाहज़ादा यूसुफपाशा जो अब डाकुओं की जमाअत में शामिल हो गया है, एक शिकार के तअकुब में मय अपने साथी डाकुओं के आता है। रज़ापाशा जो किसी हीले से जान बचा कर भाग निकलता है, डाकुओं के हल्के में घिर जाता है। शाहज़ादा अपने चचा को पहिचान कर साथियों को ग़ारतगिरी से रोक देता है और दोनों आवारा-वतन आपस में मिल कर शाद होते हैं। आठवां सीन—ज़रीर रज़ापाशा के कत्ल हो जाने की खुशी में अपने चंद खुशीमदी मुशाहिबों के साथ शराब ढाल रहा है कि, हुस्नपरवर आती है और उसके दिल से कीना और इंतकाम के ख्याल को दूर करने की कोशिश करती है। इतने में एक मुखबिर गज़न्फर का दिलफरेब के साथ मिश्र चले जाने की खबर देता है। इस खबर को सुनते ही हुस्नपरवर बेहोश होकर गिर पड़ती है, होश में आने पर अपने भाई को पहिले इरादे पर तुला हुआ पाती है और दीवानों की तरह बड़बड़ाती हुई जंगल की तरफ निकल जाती है। दूसरा ड्राप।

तीसरा एक्ट; पहिला सीन—मल्लाहों का बहरी (समुद्री) लड़ाई के लिये रवाना होना। दूसरा सीन—गज़न्फर दिलफरेब के साथ बहरी जंग के इहतमाम में नज़र आता है। दिलफरेब लड़ाई के खौफनाक सीन के देखने की ताब न लाकर खिलाफ़ वादा खुश्की की राह से भाग

जाती है। गज़न्फर दिलफरेब को न देख लड़ाई से मुंह मोड़ लेता है और दिलफरेब की खोज में रवाना हो जाता है। तीसरा सीन—शिकस्तखुरदा बहादुर शाहगज़न्फर की बद-किस्मती पर अफसोस करते हुए आते हैं। जिल्लतनसीब शाह के दिल पर सख्त चोट पहुँचती है और दिलफरेब की मोहब्बत नफरत से बदल जाती है। दिलफरेब आती है और गज़न्फर की मिन्नत खुशामद करके अपनी खताओं को बख्शवा लेती है। एक एलची हाजिर होकर सुलहनामे के नामंजूरी और ज़र्रार की धमकी की खबर देता है। गज़न्फर फिर जंग की तैयारियों में लग जाता है। खुशामद आकर ज़र्रार का पैगाम-शौक सुनाता है। दिलफरेब 'कतई इन्कार के बाद उसकी इसरार और धमकी से मजबूर होकर इस शर्त पर ज़र्रार की चाहती मल्का बनने का इकरार करती है कि वह सुलह पर राजी हो जाये। खुशामद पक्के वादा के लिये मल्का को कौल का हाथ देता है। गज़न्फर आता है और खुशामद और मल्का को आपस में हाथ मिलाते हुए देख दिलफरेब की तरफ से बदज़न हो जाता है। मगर असली हालात मालूम होने पर उसका दिल फिर साफ हो जाता है। ऐन खुशी के हंगाम में एक जासूस दाखिल होकर ज़र्रार के खिलाफ मुआहिदा लश्करकशी पर आमादा होने की खबर सुनाता है। जिसके सुनते ही गज़न्फर दिलफरेब की तरफ से दुबारा बदगुमान होकर और उसे वहीं नीम बिस्मिल छोड़ मैदानजंग की तरफ चल देता है। चौथा सीन—छलावा अपने यार मुश्ताक के इंतजार में खड़ी रहती है। ज़ातशरीफ छलावा के चाल चलन पर बदगुमान होकर बुड्ढे फकीर

का भेष करके घर में पहुँचता है। इस असना में छलावा का यार आता है। दोनों की निगाहें मिलती हैं; शराब की बोतलें खुलती हैं। आखीर को जातशरीफ एक अजीब चाल से उन दोनों पर जाहिर हो जाता है। पांचवां सीन— मैदानजंग में दोनों तरफ की फौजें लड़ रही हैं। कारज़ार में गज़न्फर और ज़र्रार का मुकाबिला होता है। पहिले तो आपस में तेग़ज़बान के वार चलते हैं; फिर म्यानों से तलवारें निकल पड़ती हैं। मगर हुस्नपरवर के एकाएक आ जाने से दोनों रुक जाते हैं। हुस्नपरवर दोनों को न लड़ने के लिये बहुत समझाती है पर उनके बाज़ न आने से दीवानगी के जोश में जंगल की तरफ चली जाती है। इधर गज़न्फर ज़र्रार के खंजर से जख्मी होकर जमीन पर गिर पड़ता है। मगर वफादारों के कोशिश से उसकी जान बच जाती है। छठवां सीन—रज़ा व शाहजादा यूसुफ जिन्होंने ज़र्रार की फातह फौज पर अचानक हमलावर होकर फतह पाई है ज़ातशरीफ को साथ लेकर गज़न्फर को फतह की खुशखबरी सुनाने के लिये जाते हैं। सातवां सीन—दिलफरेब अपनी शर्मनाक जिन्दगी का ख़ातमा करने के लिये सरीउलअसर ज़हर दस्तयाब होने से गज़बनाक होकर जबर्दस्ती आदमियों को पकड़वा पकड़वा कर शराबे मौत पिला कर ज़हर का इम्तिहान कर रही है। यहां तक कि तमाम ज़हर बेअसर साबित होते हैं। फिर वह एक नील के सांप को संदूकची से निकालती है। कब्ल इसके कि सांप उसे कोई नुकसान पहुँचाये ज़र्रार दाखिल होकर इस इरादे से उसे बाज़ रखता है और गज़न्फर के मारे जाने की झूठी खबर

सुना कर उसके जबरदस्त दिल पर मुश्किल से फतह पाता है; फिर दोनों जाते हैं। तौफीक घायल गज़न्फर को लेकर दाखिल होता है। यहां शाह को दिलनवाज की जबानी दिल-फरेब के मरने की खबर मिलती है। गज़न्फर अपनी आधी जिन्दगी तमाम कर देने के लिये वफादार तौफीक से इल्तजा करता है। वफादार अपने आक़ा के इसरार से मजबूर होकर तलवार लेता है और अपने मालिक की जान लेने के बदले अपनी जान निसार कर देता है। इसके बाद ज़र्रार उस कालीनागिन को लिये हुए आता है और दिलफरेब गज़न्फ़र को अपने सामने सही सलामत खड़ा पाकर ताज्जुब करती है। गज़न्फर गज़बनाक होकर दोनों को कत्ल करना चाहता है। मगर ज़र्रार के इशारे पर जंजीरों में जकड़ दिया जाता है। ऐसे वक्त में हुस्नपरवर फिर आती है और अपने शौहर को रिहाई के लिये दोनों बदबख्तारों से इल्तजा करती है। जिसकी कोई सुनवाई नहीं होती। ठीक इसी वक्त रज़ापाशा व यूसुफपाशा मय अपने जांनिसारों के आ पहुँचते हैं और दिलफरेब व ज़र्रार को गिरफ्तार कर लेते हैं। हुस्न-परवर शाह से मिन्नत व समाजित करके अपने भाई की जान बख्शवा लेती है और दिलफरेब अपनी बेजार जिन्दगी से नाउम्मेद होकर नील के सांप से कटवा लेती है और मर जाती है।

॥ तमामशुद ॥

काली नागिन

अंक पहला। सीन पहिला।

बाग़ ग़ज़न्फ़र।

गाना-सहेलियां।

शान रब देखो खिले हैं फूल डाली डाली।
जायें वारी शान पै तेरी शान पै तेरी आली॥
फूलन के बन बन कुंजन में लेत निरंजन नाम।
मोर पपीहा और कोइलिया तेरे सुबहो शाम॥
गाओ हम्द आरी सखियां सारी आरी आरी खुश-तर होकर शानवाला मुखलिस देखा तेरे सिवा नहीं ऐ जग वाली॥ शानरब०—

शेरदिल—आहा हा, देखना मिर्ज़ा, यहां का कुछ रंग ही और है, हसीनों का बदला हुआ तौर है।

बिगड़ेदिल—वाक़ई यह जाय और है, समा और है, ज़मीन और आस्मान और है।

ज़ातशरीफ़—अजी, मैं कहता हूं कि जो कोई इस मिश्र की सरज़मीन में दाखिल हुआ, वह गोया जीते जी फ़िरदौस में दाखिल हुआ।

बिगड़े०—और जो किसी काम तायेदिल दुकान हुस्न में रेहन हुआ ।

ज़ात०—बस समझ लो कि वह जीते जी ज़मीन में दफन हुआ ।

शेर०—जैसे हमारे हुज़ूर ।

ज़ात०—अजी हुज़ूर तो रहे दूर मगर क्या हम इनसे किसी बात में हेठे हैं—अगर वह आशकी में फरहाद के बाप हैं तो हम मजनूं के बेटे हैं ।

शेर०—कसम है मिर्ज़ा मेरी होने वाली बीबी की, क्या खूब कही ।

(छलावा का आना)

छलावा—हटो बचो जगह दो ।

दिलनवाज़—अरबाब निशात कम कर एहतेलात ।

शहनाज़—खड़े रहो अदब के साथ ।

छ०—क्यों सबा ने जारोबकशी की, शबनम ने आबपाशी की ?

दिलन०—नरगिस बीमार तो नहीं, लाला दाग़दार तो नहीं ?

शह०—सुंबल परेशाँ तो नहीं, गुल नाफ़रमान तो नहीं ?

छ०—शम्ओ से कहो कि दिन को बूंदें—मली से कहो आवे जू देः—

इस बज़्म में है रूम के सुल्तान की आमद,
है तने बेजान में अब जान की आमद;
यानी मलकये मिश्र के मेहमान की आमद ।

ज़ात०—क्या ख़ूब: तूने यह पहले ही से क्यों न कह दिया कि शाह और मलका तशरीफ़ लाते हैं और हम ख़वासें उनके आमद का तराना गाते हैं—न तो सबा ने जारोबकशी की न शबनम ने आबपाशी की और ख़ुदा जाने क्या ख़ाक धूल बला बदतर बकबका के आपने क्यों हमारी दिमाग़ख़राशी की।

छु०—आ हा ! तो यह कहिये कि आप भी दिमाग रखते हैं ?

शह०—अजी कहीं अंधे भी घर में चिराग़ रखते हैं ?

ज़ात०—अए नाज़नीन ! तुम्हारे इश्क़ का जो दिल में दाग़ रखते हैं, वह कब अपने मकान में चिराग़ रखते हैं।

शह०—वाह साहेब।

शेर०—जैसे आक़ा वैसे मुसाहब।

दिलन०—तुम्हारे आक़ा और हमारी मलकये दिलफ़रेब का तो ऐसा साथ है।

तीनों—जैसे धूप और छाँव का।

शह०—बहिन दिलनवाज़ ! यह भी तो हैं तुम्हारे तालिब।

दिल०—ना बहिन ! यह जोड़ा तो तेरे लिए है मुनासिब।

शह०—बहिन ! मेरे तो दो ख़्वास्तगार हैं।

जात०—और दोनों भी तरहदार हैं।

शह०—उई ! तो क्या मैं दोनों से करूं शादी ?

जात०—हां हां कर लो मुज़ायका का क्या है।

शेर०—अगर एक हो गया दुनिया से नाबूद।

जात०—तो दूसरा रहेगा मौजूद।

गाना

छ०—जा जा हवा खा दीवाने जाकर पागलखाने की ।

दिल०—बहक कर शेखी न मारिये सिधारिये ।

शह०—जो दिल से चाहे हम को ब्याहे और रहे बनकर नौकर जोरू का । रखे नौकरचाकर साईकिल मोटर और हो बी. ए. पास ॥

जाल०—नहीं पाओगी मुझसा हज़ारों में ।

शेर०—नाम मेरा है पांचवें सवारों में ।

छ०—क्या बात है जनाब की ।

दिल०—जाऐ जाऐ नटखट अब जा ॥ जा जा०—

(तीन अवाज का होना गजनफर और दिलफरेब का आना)

दिलफ़०—क्या खूब ! ऐ मेरे दिल की बादशाहत पर हुकूमत चलाने वाले सुलतान ! क्या वाक़ई आपका मुझपर इस क़दर प्यार है ?

गज़न०—इसमें क्या शक ।

दिलफ़०—तो इरशाद हो मुझे इसका अन्दाज़ा दरकार है ।

जाल०—वाह ! यह निराला सवाल है । क्या प्यार भी कोई आटा दाल है ।

गज़न०—ऐ भोली भाली बागहुस्न की नौखेज़ डाली ! जो प्यार कि अन्दाज़ा करनेसे शुमार में आ सकता हो उसका बतला देना सहल है । मगर जो प्यार कि गैर महदूद है उसका बतलाना अम्र मुश्किल है ।

दिलफ़०—यह मैंने माना कि अम्र मुश्किल है मगर आप को बतलाना पड़ेगा वरना मैं यों समझूंगी कि आपका दावा बातिल हैः—

करते माशूक की आशिक हैं हमेशा तारीफ़।

आशिकों का तो अज़ल ही से है पेशा तारीफ़॥

गज़न०—जानमन! यह तुम्हारा हुस्न ज़न है या तबियत का भोलापन। मगर खैरः—

मर्ज़ी अपनी भी वही जिसमें रज़ा तेरी हो।

ऐन समझेंगे वफ़ा जिसमें नफ़ा तेरी हो॥

मगर मैं वह अलफ़ाज कहां से लाऊं सख्त हैरान हूं क्योंकर तेरे बेहद प्यार व मोहब्बत का अन्दाज़ा लगाऊं।

जान०—हुक्म हो तो बनिये से तराज़ू लाऊं।

गज़न०—बस समझ लो प्यारी समुद्र की लहरें शुमार में जितनी हैं मोहब्बत व प्यार की अदद गिन्ती में उतनी हैं।

दिलफ़०—दुरुस्त, बिलकुल बजा।

तुम मुझे चाहो तो मैं क्योंकर न चाहूंगी तुम्हें।

दूंगी आंखों पै जगह दिल में बिठाऊंगी तुम्हें॥

तौफी०—आफ़! यह कैसी दफ़अतन काया पलट गई, एक अनमोल हीरे की क़ीमत कौड़ियों के दामों से घट गई।

दिलफ़०—सरकार! पहनिये मेरी मोहब्बत के फूलों का बनाया हुआ हार।

वह फूल शगुफ्ता मेरे गुलशन में न होगा।

जो आके हमायल तेरी गरदन में न होगा॥

गज़न्०—आ हा ! ताबोगुल जिसके तेरा हार जाय, नगद दिल व जान को वह हार जाय । ऐ गुले राना ! वदले हाले कि अगर हार यह पहिने एक बार, रहना मन्जूर करे चांद गहन में ताहश्र ।

दिलफ०—है मुनासिब दौर जामें अरगवानी का चले । गुलशने इशरत में झोंका शादमानी का चले ॥

गज़न्०—बेहतर है, वह गई तुम अपने हाथ से भरकर जो जाम में, होगा न जाहिदों में फिर बदनाम नाम के । हो जायगी हलाल हर एक पर हराम मय (शराब पीकर) ऐ दिलरुबा !

है बहुत शोहरये आफाक़ तुम्हारा गाना ।
हम भी सुनने के हैं मुश्ताक तुम्हारा गाना ॥

दिलफ०—जरूर ।

गाना

जान पाई है गमें उलफत में खोने के लिये,
दिल तड़फने के लिये है आंख रोने के लिये ।
डाले यार जादू मतवारे यह नैना तोरे रे ।
मनहर के नजर करके मतवाली गुनवाली
छबि आली लट काली है लासानी ।
फूलों में फूलों के रंगों से बाला,
हूरों में परियों में तू हुस्न वाला ।
मन भावे सुहावे क्या शान तेरी,
तूही मेरा दिलरुबा जान पाई०—

(ख़्वाजासरा का आना)

ख़्वाजा०—दौलतपनाह! रूम से एक जासूस आया है और दरेदौलत पर इजाज़त का मुन्तज़िर बाहर खड़ा है।

गज़न०—ख़ैर जा तूही उससे समझ ले।

ख़्वा०—उई अल्लाह! मैं क्या समझ लूं।

दिल०—अपना प्यारा।

ख़्वा०—चुप ओ नाकारा! अगर ख़ुदा न ख़ास्ता मेरा होने वाला शौहर सुन लेगा तो वह तेरी और मेरी फज़ीहती कर के छोड़ेगा।

दिलफ०—बलबे तेरा चाव चूनी भी कहे मुझे घी से खाव भला बहिन! उस मूये खुन्से को कौन शादी करेगा।

छला०—अगर दुनिया में औरत का काल पड़ जाये तो शायद इसका नसीबा लड़ जाये।

शह०—या जिस शख़्स को बांझ औरत की जरूरत हो वह शादी करे।

ख़्वा०—ख़ुदा न करे। बांझ हों मेरे दुशमन। कल एक नजूमी मुझसे कहता था कि तुझे एक दर्जन बच्चे होने वाले हैं। हुज़ूर! अब आप ही उससे समझ लें, बन्दी उसको यहां बुला लाती है।

गज़न०—बस ठेर जा।

ख़्वा०—उई!

दिलफ०—जाने दीजिये, जाने दीजिये, गालबन किसी का इश्तियाक़ नामा लाया होगा या शायद आपकी मलका रोशनअख्तर ने भेजवाया होगा।

गज़न०—और नाम में मज़मून क्या लिखवाया होगा?

दिलफ़०—यही आपकी बदनामी और रियासत की तबाहियों की झूठी हिकायतें, अपनी बनावटी मुहब्बत की प्यार भरी बातें, आपको मुझसे जुदा कर देने वाली बातें।

तौफ़ी०—देखिये इस बदज़ात का तौर, किस तरह समझा रही हैं, कुछ का कुछ, और का और।

दिलफ़०—हैं क्यों यक बयक हुज़ूर का गुलाब सा चेहरा मुरझा गया? कौन सा ऐसा दिल दुखाने का ख़्याल इस वक़्त पर आ गया। आह! मैं समझ गई, मलका की पुरानी मोहब्बत की हसरत भरी तसवीर इस वक़्त अपनी झलक दिखला गई। इस लिये चेहरे मुबारक पर मुरदनी सी छा गई।

गज़न०—दिलफ़रेब! दिलफ़रेब! तुम्हारे तानों के तीरों से मेरा सीना चलनी हुआ जाता है: यह नहीं मालूम किस अदावत के एवज़ मुझसे लिया जाता है। क्या तुम ख़्याल करती हो कि मैं पोशीदा रौशनअख़्तर से मुहब्बत करता हूं मगर मैं क़सम खा के कहता हूं कि एक रौशनअख़्तर तो क्या क्या चीज़ है मुझे जिस क़दर तुम अज़ीज़ हो दुनियां भी नहीं अज़ीज़ है।

जात०—सच है, गधे को खुशी की क्या तमीज़ है।

दिलफ़०—मगर प्यारे! जासूस को तो बुलवा लो।

गज़न०—बस मरने दो जासूस की शक्ल मनहूस को, प्यारी! अगर तुझे जासूस की ज़रूरत है तो ले जासूस हाज़िर ख़िदमत है। दिल के भेदों से जो वाक़िफ़ हो वह जासूस हूँ मैं।

जात०—अरे इसके दिल के भेदों से तो आपके फ़रिश्ते भी नावाक़िफ़ होंगे।

गज़न०—जाव कह दो जासूस को कि हम आज तेरा पैग़ाम सुनना नहीं चाहते।

दिलफ़०—नहीं, अभी पयग़ाम आपको सुनना पड़ेगा? अरे जाव इनकी बीवी के भिजवाये हुए जासूस को बुला लाओ?

गज़न०—ओफ़! इन्तेहा की ज़िद; बला का गुस्सा; (जासूस को हाजिर पाकर) तुझको किसने भिजवाया है?

जासूस—गुलाम मलका के हुक्म से आया है।

गजन०—तौफीक! लो यह नामा पढ़ो।

तौफी०—ऐ हमराजखिल्वत शाह नवाज आप इस पाये तख्तके आगे न झुकनेवाले नाफरमानों की गरदनों को झुकाने के लिये रूम से मिश्र की तरफ रवाना हुए। और जल्द वापस आने का वादा फरमा गये थे। लेकिन अफ़सोस मिश्र की माशूका दिलफरेब की सूरत को देखकर ऐसे फूल गये कि मेरे इन वादों को और अपना फर्ज मनसबी भी बजा लाना भूल गये और इधर वह वलीअहद जर्रार कि, जिसको आपने अपनी औलाद की तरह पाला और जिसके बाप की सल्तनत को आज तक सँभाला अब वह आपको गाफिल पाकर सल्तनत कब्जे में लाने की कोशिश कर रहा है, रिआया रूम को अपनी जानिब से भड़का रहा है। लेहाजा आप इस नामे को देखते ही मिश्र से मुराजिअत फरमायें, रूम तशरीफ लायें।

अलराकिमगुजनरौशन अख़्तर।

गजन०—हैं, यह क्योंकर हो सकता है कि जिस दरख्त को मैंने खून जिगर से पाला पोसा वह अब बड़ा होकर मुझे जहरीला फल देगा? क्या वलीअहद जर्रार मुझसे सल्तनत छीन लेगा? नहीं, हरगिज नहीं। किसी बेवकूफ़ को इस तहरीर का एतबार आयेगा?

तौफी०—हुजूर ! खता माफ। अगर हुक्म हो तो गुलाम अर्ज करे साफ साफ ।

गजन०—क्या ?

तौफी०–आजकल बागे जहाँ की है हवा बदली हुई ।
रंग गुल बदला हुआ बूये वफा बदली हुई ॥

चूं कि आपकी अक़्ल इस वक्त ठिकाने पर नहीं, इस लिये तजस्सुस की नजर ज़माने पर नहीं। दिलफरेब के चलते हुए जादू ने आपको दीवाना बना रखा है।

जातशरीफ—और दिमाग़शरीफ को बरेली का पागलखाना बना रखा है।

तौफी०—क्या होगा सूझता नहीं अन्जाम आपको ।
देखोगे आगे यह बुते खुद काम आपको ॥
कर देगी एक जहान में बदनाम आपको ।

गजन०—तौफीक़! तौफीक़! क्या तू यह चाहता है कि मैं दिलफरेब की मोहब्बत को छोड़ दूँ, अपनी रगेजान से बने हुए मजबूत रिश्ते को चीर कर हाथों से तोड़ दूँ? नहीं; नहीं;—

तोड़ देना सहेल है फौलाद की जंजीर को ।
तोड़ना आसान नहीं है इश्क की तासीर को ॥
होते जो आज सीने में मेरे हज़ार दिल ।
हर एक दिलफरेब पर करता निसार दिल ॥

तौफी०—और जो इस वक्त मैं भी अपने मुंह में हज़ार जबानें रखता तो उन हज़ारों जबानों से आपके इन बेहूदा ख्यालातों की मुख़ालिफत करता।

गज़न्०—अफसोस, तौफीक़! अगर तू उल्फत के मज़े से वाक़िफ होता तो दिलफरेब की शान में यों गुश्ताखी करने से ख़ायफ होता ।

तौफी०—अगर आप भी सख़्तिये मोहब्बत के अंजाम से आगाह होते तो आज एक ग़ैर औरत की मोहब्बत में तबाह न होते ।

दिलफ०—(आकर) चोर मुंहज़ोर बदलगाम मुर्ग़ बेहंगाम! शान में मेरी यह बेहूदा कलाम ।

गज़न्०—क्या तुम छिप कर सुन रही थीं ऐ गुल अन्दाम ।

दिलफ०—बस जनाब! आपकी मोहब्बत को बन्दी का सलाम । अफसोस, उदू मेरी बदगोई में ज़ुबान खोले और दोस्त सुन कर कुछ न बोले । क्या इसी वफा पर नाज़ फरमाते थे सरकार? क्या इसी प्यार के लिये समुन्दर की लहरें थीं दरकार? कुछ नहीं, सिर्फ जान लेने की सारी घातें थीं, मुंह देखने की यह बातें थीं ।

ज़ात०—क्या तंग जूती की तरह काट रही है ।

दिलफ०—मेरे ख़्याल में आप एक आईना हो, जो रूबरू में साफ और पसेपुश्त बरखिलाफ हो :—

जो बसर हो मुंह पै कुछ बातिन में कुछ,
हो शबे तारीक में कुछ दिल में कुछ ।
प्यार ऐसे को न करना चाहिये ॥

गाना—दिलफरेब ।

बाज़ आई सइयां जा जा जा जा इस प्यार से मैं,

लड़ाऊं नैना न भूठे दिलदार यार से मैं ॥ देखा भाला कातिल हो तुम बेदिल हो तुम कामिल हो तुम। ऐय्यार हो पूरे पूरे जा जा जा जा ॥ लूटा जो जोबन जादू डाल के घात चाल से लड़ाये दिल क्या ऐय्यार से मैं ॥ बाज़ आई०—

गजन्०—जानी ?

दिलफ०—बस अब आप रहने दें अपनी चर्ब जुबानी। अब यह दिल आपकी आतिश बयानी से पिघलने वाला नहीं: इन तिलों में तेल निकलने वाला नहीं :—

धोका खा के भी अगर इन्सान हुशियार न बने।

जान की अपनी वह खुद दुश्मने खूंख्वार बने ॥

गजन्०—ओफ! यह सर्दये हरी, यह कजअदाई, यह रुखाई, ऐ गुलेरानाई माफ कर :—

मुजरिम हूं कुसूरवार तेरा हूं।

आसी हूं गुनहगार तेरा हूं ॥

आह! अगर तू मेरी जिन्दगी में मुझसे छूट जायेगी तो कसम है इस हुस्न आफरी की: मेरी जिन्दगी की आस टूट जायेगी। जिस तरह बग़ैर पानी के मछली की जिन्दगी मोहाल है उसी तरह मेरा भी यही हाल है :—

जिस्म मै हूं और मेरी जान है तू।

किब्लाये मकसूद दीनो ईमान है तू।

तौफी०—अस्तग़फरुल्ला!

जात०—कम्बख्त फिर बोला।

दिलफ०—खैर; मैं अबकी तो माफ करती हूं खता, मगर इस नाबकार को तो जरूर दूंगी सजा।

गज़न०—नहीं; नहीं :—

बख्श दे बहरे खुदा कुश्तये बेदाद न कर।
बेगुनाहों की अबस तू खाक को बरबाद न कर॥

दिल०—नहीं; ऐसा कभी नहीं हो सकता।

गज़न०—आह! यह मेरा कदीमी यार मददगार है।

दिल०—क्या खूब; दांत अगर्चे आदमी के कदीम मदद-गार हैं मगर जब दर्द करते हैं तो फौरन उखाड़ दिये जाते हैं।

गज़न०—आह! रहम! रहम! देख आज वह शख्स दो घुटनों के बल खड़ा हो के तेरी आजिज़ी कर रहा है जिसने आज तक किसी मगरूर के आगे सर न झुकाया।

दिल०—लाचारी मजबूरी दुशवारी; मुझ पर फर्ज है आपकी फ़रमाबरदारी। मगर ... ...

गज़न०—क्या?

दिलफ०—इस रूमी कासिद को क़ैद करके मलका के ख़त के जवाब में भेज दीजिये।

गज़न०—हां, यह मुमकिन है। (एक सिपाही का आना) अरे कोई हाजिर है?

जान०—यह बदकार औरत गजब की बदजातिन है बल्कि इन्सान के भेस में चुड़ैल है या डायन है?

गज़न०—इस रूमी कासिद को तौक़ व जंजीर में जकड़ लो।

जासूस—बे गुनाह और मुब्तिलाय आफाक़, बस मेरा इन्साफ है खुदा के हाथ।

तौफी०—आला हज़रत! यह कैसी नाइन्साफी। खता कोई करे पाये सज़ा कोई। न देखा है न ऐसा सुना कोई।

गज़न्०—बस तो चुप रहो इस वक्त तुम कुछ न बोलो। मैं तुम्हारी ज़ुबान से एक लफ़्ज भी इस वक्त दिलफरेब की मर्जी के खिलाफ नहीं सुनना चाहता हूँ।

तौफी०—अफ़सोस! आपको एक हक़ीर मिट्टी की मूरत का तो इतना पास है मगर उस पैदा करने वाले की नाराजी से कुछ भी नहीं हेरास है।

गज़न्०—अगर दिलफरेब मुझसे उदास नहीं तो फिर मुझे कुछ वसवास नहीं।

तौफी०—तो क्या आपको एक रोज़ दुनियां से जाना नहीं है खुदा को मुंह दिखाना नहीं है?

गज़न्०—अगर दिलफरेब वहाँ भी साथ होगी तो दिन ईद रात शबेबरात होगी।

तौफी०—ऐ मेरे रहमदिल सुल्तान, आमान! आमान!!

गज़न्०—चुप, ओ नाफरमान।

दिलफ०—(अप्रकट) आहा! फाँसा चल गया।

गज़न्०—क्यों प्यारी! अब तो पूरी हुई खुशी तुम्हारी?

दिल०—जी हाँ:—

रंज पहुंचा था जो मुझको बरमला जाता रहा।
एक निगाहे लुत्फ़ में सारा गिला जाता रहा॥

हां ले जाओ इस बूम शूम को शहर रूम को।

अंक पहिला । सीन दूसरा ।

मकान ।

गाना शहनाज़ ।

चले आते हैं मेरे डेरे बाँके तिरछे रँगीले जवान । तेग दोनों अबरू निगाह भरी जादू गेसू हैं जहरीले मार । किस किस को चाहूं किस किस को ब्याहूं आशिक हुए हैं हजार ॥ चले आते०—

ज़ातशरीफ—तसलीमात ।

शेरदिल—कोरनिशात ।

शहनाज़—आइये आइये खैरिअत तो है फरमाइये ।

ज़ात०—अजी खैरियत कैसी, अब तो मर चुके ।

शह०—मगर जनाजा नहीं पाया मरते सबको देखा ।

शेर०—अजी यह न कहो अगर हम सच मुच मर जायेंगे तो फिर तुम्हारे नाज़ कौन उठायेंगे । क्यों मिर्जा ?

ज़ात०—कसम है साढ़े चार आने की क्या खूब कही । खैर जनाब अब मतलब पर आइये क्या इरशाद होता है फरमाइये । आँखें पथरा गईं इन्तेज़ारी करते ।

शेर०—टाँगें टूट गईं उम्मेदवारी करते ।

शह०—क्या खूब अच्छा तो मेरी एक शर्त है बजा लाओ तो फिर शौक़ से शादी रचाओ ।

दोनों—फरमाओ फरमाओ ।

शह०—(दोनों के कान में बारी बारी से) देखो अगर तुम अपने हरीफ को मेरे मकान से कोई झाँसा देकर टाल दोगे तो मैं तुम से शादी रचाऊँगी।

ज़ात०—क्या सच ?

शह०—हाँ।

ज़ात०—अच्छा तो अजी एक फिकरे में इस महदूद को करता हूँ नाबूद।

शेर०—क़सम है इन क़दमों की कि वह दिया चकमा कि याद ही करे चचा।

गाना शहनाज़।

नेहों तुमसे लगाके सइयाँ हारीरे जोबन बीता जाय मेरा। शर्त उल्फत पूरी करना चाहते हो गर, आशिक बनना हरदम पुरनित सूनी पड़ी सेज-रिया रात हमारी गमसद में सहना सारी सारी तुम बिन प्यारी॥ नेहों तुमसे०—

ज़ात०—क्यों दोस्त क्या मामिला है ?

शेर०—एक उल्लू से मुकाबिला है।

ज़ात०—देखो यार मैं तुझ से सीधी तरह कहता हूँ कि तू यहां से निकल जा।

शे०—और मैं भी सीधी तरह कहता हूँ कि तुम दुम दबा के भाग जा।

ज़ात०—बच्चा यह झाँसे किसी और को दो।

शेर०—चचा यह चकमे हम से न चलो।

ज़ात०—इनशाअल्लाह शहनाज मेरी होगी।

शेर०—खुदा जाने तेरी होगी या मेरी होगी।

ज़ात०—अच्छा देख लेना। बन्दा वह फ़िकरा जोड़ेगा कि तेरा सारा दम खम तोड़ेगा।

शेर०—और बन्दा भी वह रगड़े घिस्से देगा कि तुझे चचा ही बना के छोड़ेगा!

जात०—वसूले आरजू के फिक्र में दे देंगे दम अपना।
न रखेंगे कभी इस घर के बाहर हम कदम अपना॥

शेर०—न ले के निकलेंगे इस घर से जबतक हम सनम अपना। कदम तो क्या जनाजा भी न उठने देंगे हम अपना॥

ज़ात०—अच्छा देख लेना।

शेर०—जा बच्चा, देख लेना।

गाना।

दोनों—मारूँ घुटना फूटे आँख।

ज़ात०—मुझसे मत तू शेखी हाँक।

शेर०—देखा बलबे तेरा हाँक।

ज़ात०—दूं घूँसा।

शेर०—दूं ठोंसा।

ज़ात०—जा घर जा।

शेर०—जा मर जा।

दोनों—तेरी बीबी मेरी बने॥ मारूँ घुटना०—

(ज़ातशरीफ का जाना खुदायार का आना)

शेर०—ओहो ! कौन खुदायार ?

खुदायार—बले सरकार।

शेर०—मुझे तुमसे एक काम लेना है।

खुदा०—चे कार ?

शेर०—बात यह है यार कि, शहनाज़ ने अपनी शादी का वादा मुझसे इस शर्त पर किया है कि मैं ज़ातशरीफ को कोई फरेब दे के यहां से निकाल दूँ।

खुदा०—बा बा शना खतम।

शेर०—देख, अगर तू किसी तरकीब से इसको यहां से निकाल देगा तो फिर बन्दा तुझे निहाल कर देगा।

खुदा०—शुमा बेफिक्र रहो। मन अभी ऊँ जा से उसको निकाल दूँगा।

शेर०—यह नौकर मुझसे भी चालाकी में है अव्वल नंबर। इसी से मेरा मतलब बर आयेगा मुकर्रर।

(ज़ातशरीफ का मय नौकर के आना)

ज़ात०—देख, अगर तू शेरदिल को किसी तरकीब से निकाल देगा तो मैं अपने मतलब को पहुँचूंगा।

नौ०—तो क्या इसको धक्के मार के निकाल दूं ? सरकार !

ज़ात०—अबे नहीं फरेब के हथियार से, ओ गँवार !

नौ०—अच्छा, अच्छा, मैं समझा; देखिये अब मैं जाता हूं और उसकी सत्यानाशी का मसाला तैयार करके लाता हूं।

खुदा०—ओ, इधर आना; इधर आना। यह खत अभी अज़ मुल्क तुम्हारे से आमदा है।

ज़ात०—हैं हैं ! यह ख़त कहां से मिला ?

खुदा०—पट्टा वाला दादा है।

ज़ात०—अबे दादा होगा तेरा।

खुदा०—नहीं नहीं, ऊ मुल्क तुम्हारे से लायाअम; ईंजा लेकर आया।

ज़ात०—ख़ैर ला देखूं तो।

खुदा०—ख़ैर बाशद; ओ आग़ा! चेहरा उदास हो गया शुमा का।

ज़ात०—हाय! क्या करूं; ख़त में लिखा है कि मेरी मा सख्त बीमार है और खुदा के घर जाने को तैयार है।

खुदा०—ओफ़! ओफ़! अफसोस!! सद हज़ार अफ़सोस!!!

ज़ात०—और लिखा है कि अगर खाना खा चुके हो तो हाथ वहां आके धोना।

खुदा०—बले आग़ा! अगर मैं शुमा का हुक्म पाऊं तो इसी आन घोड़ा गाड़ी तैयार करदा ले आऊं।

ज़ात०—मगर हाय! क्या करूं; शहनाज़ की मोहब्बत की जंजीरों ने मुझे कुछ ऐसा जकड़ दिया है कि अगर आंधी भी चले तो मुझसे दो इंच भी यहां से नहीं सरका जा सकता।

खुदा०—ईं चे आग़ा! ऊं जा तुम्हारा माँ बीमार अस्त; जीना दुशवार अस्त; शौक़ दीदार अस्त। बस हाल उज़्रो हुज्जत मत करो बेचारी का क्या होगा हाल।

ज़ात०—मैं सब जानता हूं तेरी चाल।

खुदा०—ओ आग़ा, लाऊँ घोड़ा गाड़ी?

ज़ात०—अभी नहीं, ठैर जाव गवारी।

खुदा०—ईं चे?

ज़ात०—हो सत्यानाश तेरा; ज़रा मुझे इस ख़त के सही होने में शक़ है।

खुदा०—नहीं नहीं; शक नहीं।

ज़ात०—हाँ हाँ मेरी माँ ने १५ बरस हुए कि ख़ुदा का घर बसाया फिर यह बीमार होने की खबर किसने भेजवाया?

खुदा०—अरा रा! सब कचूँबर हो गया; भेद खुल गया। ओ आग़ा! शुमा भूलते हो। शायद तुम्हारा नानी वानी मर गया होगा।

ज़ात०—अबे नहीं; मुझे अच्छी तरह याद है कि माँ के मरने के बाद जो चीज़ मुझे वर्से में मिली थी वह इस वक्त मेरे पास मौजूद है।

खुदा०—वह क्या?

ज़ात०—देख, ये लात और घूंसा।

खुदा०—वाह! बहुत अच्छा वरसा है।

ज़ात०—बस या और लेगा?

खुदा०—नहीं नहीं, बाबा नहीं मांगता।

ज़ात०—मरदूद, मुझे धोका देने आया था?

परवा नहीं दिलेर जो अपना हरीफ़ है।
तो बन्दा भी अपने नाम का ज़ातेशरीफ़ है॥

खुदा०—अगरचे तुम ज़ात शरीफ अस्त तो मन तुम्हारा हरीफ अस्त। लेकिन अफ़सोस, अम्बा काश्तम पत्ता बरदाश्तम्।

शेर०—क्यों खुदायार! फरार हुआ या नहीं ओ नाबकार।

खुदा०—नहीं नहीं।

शेर०--क्यों, क्या हुआ?

खुदा०—मादरे ऊ पिदरे सग सब घोटाला कर दिया।

शेर०—यानी ?

खुदा०—अम बोला तुम्हारा माँ बीमार अस्त। वह गुफ़्, ादरे माँ पन्दरह बरस शुदा खुदा के घर राफ़् और हनोज़ ापस न गस्त।

शेर०—हत्तेरे गधे की।

खुदा०—लेकिन आग़ा! मारा यह ख़बर नबूद कि उसका ादर पंद्रह बरस शुदा ग़तरबूद।

(नौकर का आना)

नौ०—हाँ, लेना दौड़ना आग लगी, आग लगी।

ज़ात०—अरे भागो आग लगी आग लगी। चल यार ारदिल! हम तुम आग बुझाने में हों शामिल।

शेर०—हाँ चलो चलो खुदायार।

खुदा०—बले सरकार।

शेर०—जल्दी मेरी सवारी का टट्टू ला नाबकार।

ज़ात०—अब क्या है चल गया मेरा वार।

खुदा०—ओ आग़ा! खबरदार बाश, खबरदार बाश!

शेर०—अबे मेरा टट्टू तो ला बदमाश।

खुदा०—टट्टू भी नहीं, आग भी नहीं।

शेर०—तो ?

खुदा०—ज़ातशीफ फरेब करदा अस्त।

शेर०—फरेब ?

खुदा०—बले मकानवाला रा देह रुपया दादा आतिश अफ़रोख़्ता अस्त।

शेर०—वाह! फरेब तो खूब चला।

नौ०—हाँ हाँ, चालिये चलिये सरकार।

शेर०—हाँ, चलो चलो।

ज़ात०—बाहरे मैं और मेरा झाँसा, सच कहना किस आसानी से इस उल्लू को फाँसा। अब शहनाज़ मेरी होगी; हुर्रे हुर्रे।

नौ०—(लौटा कर) श्रो जीता, श्रो बाज़ी मारा।

शेर०—ज़रा इधर तो देख, श्रो नाकारा।

नौ०—कौन? अरेर ढेले का घर मिट्टी हो गया।

ज़ात०—कौन शेरदिल?

शेर०—हाँ तेरा हरीफ मुक़ाबिल।

ज़ात०—लाहौलबिला, अभी तुम यहीं हो, मैं समझा कि दफ़्न हो गये।.

शेर०—और तुम कहां खो गये।

ज़ात०—क्या कहूं मिर्ज़ा! रास्ते में घोड़ा ठोकर खा गया! इसी वजह से मैं वापस आ गया। क्यों है न यही बात?

नौ०—जी हां; यही बात है, यही बात है।'

शेर०—और मेरे टट्टू का भी एक बारगी पाँव फिसला और मुझे भी मज़बूरन पलटना पड़ा। क्यों है न यही बात?

खुदा०—बले सरकार। बले सरकार।

ज़ात०—इन्शाअल्लाह अबकी ऐसा चकमा दूं कि तेरी सारी शेखी भुला दूं।

शेर०—अपने ही मुंह मियाँ मिट्ठु—अरे वाहरे निखट्टू।

ज़ात०—अबे! तू बड़ा ही सफ्फाफ है।

शेर०—देख, ज़बान सँभाल वरना एक ही फ़ेर में कर दूंगा ढेर। ओफ! मुआ मुआ।

(पटाखे की आवाज़ होना)

शेर०—हुर्रे हुर्रे हुर्रे तब वह मुआ और मैं जीआ।

ज़ात०—हैं! यह क्या हुआ।

पड़ोसी—खबर लो, खबर लो, खून हुआ, खून हुआ।

जात०—या इलाही! यह आवाज़ कहां से आती है; कहीं पुलीस मेरी गिरफतारी के लिए तो तशरीफ नहीं लाती है?

शेर०—दोस्त अबभी तो यहां से भाग जा, अपनी जान बचा।

जात०—हाय! क्या करूं भाई, मुझे जाने की इजाज़त नहीं देती तेरी तनहाई खूब हुआ मरदूद की आ गई क़ज़ा।

शह०—(आकर) हैं! यह कौन? शेरदिल!

पड़ोसी पहिला—मगर इसका कातिल कौन होगा बद बातिल।

ज़ात०—जनाब! यह आप अपना ही है कातिल।

शह०—अब तुम जल्दी जाओ और किसी होशियार डाक्टर को बुला लाओ।

ज़ात०—हाँ यह चला।

शेर०—जी छूट रहा है, दम टूट रहा है।

शह०—मेरे प्यारे शेरदिल! तेरी खुदा आसान करे मुश्किल। अफ़सोस मैंने ही तुम पर यह सितम तोड़ा मेरी ही शर्त ने तेरी जान लेकर छोड़ा।

शेर०—क्या आपने डाक्टर को बुलवाया है?

शह०—हां।

शेर०—किसको भिजवाया है?

शह०—ज़ात शरीफ को।

शेर०—क्या मेरे हरीफ को?

शह०—हां।

(उठ खड़ा होता है।)

सब पड़ोसी—हैं यह क्या !

शेर०—यह भी मैंने एक फरेब की बाज़ी बिछाई थी। सिर्फ़ हवा पर गोली चलाई थी। ज़ख्मी हो कर गिरने का महज़ इसलिए किया था बहाना; ताकि ज़ातशरीफ का हो किसी हीले से यहां से जाना।

पड़ोसी दूसरा—बाहरे दाना ऐय्यार ज़माना।

गाना शहनाज़।

वाह वाह वाह वाह जी साहेब, तुम भी बड़े हो
चलते पुरजे, तेरी बांकी अदा पर निसार।
हो तुम ऐय्यार प्यारे न्यारे मक्रो हुनर में उस्ताद
हो जी ला जवाब॥ वाह०—

ज़ात०—आइये जनाब डाकृर साहेब ! यह देखिये बीमार है। हैं, यह क्या ! जी गया।

शेर०—जो मर गया था वह जी गया और जो जीता था वह मर गया।

अंक पहिला। सीन तीसरा।

जर्रार का महल।

गाना ज़र्रार।

रखूं ताज शाही सरपर काटूँ सरे गज़न्फर।
दग़ा फरेब व धोका है यह तेग़ खन्जर॥
पिऊँगा लोहू का पानी; परेशानी हो उठानी।
मेरे दुश्मन को न हो रिहाई सैद मरमर कर॥ रखूं०—

मैं कौन ? गुलजारे शाही का गुलाब। मैं कौन ? सिपहरे सल्तनत का आफताब। शान, आन, तमकनत, हुकूमत, किसके तख़्त के उठाने वाली किसकी परियां हैं ? मेरे बाप रश्के सुलेमान को शौकत सौलत, अज़मत, इज़्ज़त, किसकी जर खरीद बांदियां है ? मुझ शाही खान्दान की। फिर क्यों ? किस लिये मैं रिआया के मानिन्द जिन्दगी बसर करूं और गज़न्फर मेरे खान्दानी नौकर को तख़्तेहुक्मरानी करने दूं। माना कि मेरे वालिद मरहूम बिचारे इसको सल्तनत देके सिधारे मगर कब तक ? जब तक मैं गुलज़ार जवानी में कदम धरूं, तो क्या अब मैं जवान नहीं ? मुझमें जवानों की शान नहीं ? क्या मेरा सर ताज के नाकाबिल है ? क्या यह ज़र्रार राज के नाकाबिल है ? क्या मेरा कलम खामये तक़दीर का सानी नहीं ? क्या मेरी तलवार साक़ये आसमानी नहीं ? है और बेशक है। खुशामद बहादुर !

खुशामद—बन्दापरवर।

ज़र्रार—मा बदौलत की निस्बत रिआया का क्या ख़्याल है ?

खु०—जनाब ! हर मुतनफ्फ़िस हुज़ूर के ख़्याल में ऐसा मदहोश है कि एक गजन्फर तो क्या बल्कि खुदा की याद भी दिल से फरामोश है।

ज़र्रा०—भला कितने ऐसे आमादा फ़साद हैं ?

खु०—अनगिनती और बे तादाद हैं।

ज़र्रा०—क्या वह मेरा साथ देंगे ?

खु०—जरूर हाथ देंगे।

ज़र्रा०—अच्छा वह क्या चाहते हैं ?

खु०—हुजूर की रज़ा।

जर्रा०—और क्या मांगते हैं ?

खु०—दुश्मन की कज़ा।

जर्रा०—आह! मैंने जा कोने की आग रौशन की थी वह रफ़्ता रफ़्ता ऐसो मुश्तैल हुई कि इस सल्तनत के ज़बरदस्त दरख़्त की बेख व बुनियाद को जलाकर खाकस्तर कर दिया। जुमला रिआया को मुन्तशिर करा दिया। अब तमाम शहर भर में हड़ताल पड़ गई।

(रज़ा पाशा का आना)

रज़ापाशा—कौन, जर्रार ?

जर्रा०—हाँ वही दिल आज़ार।

रज़ा०—इस तेरी दिल आज़ारी का सबब ?

जर्रा०—तरीक़ हुसूल मतलब।

रज़ा०—मगर इस चाल से तू कुछ फायदा नहीं उठा सकता।

जर्रा०—क्यों नहीं; जब तक इन्सान दरख़्त पर पत्थर न मारे फल नहीं पा सकता।

रज़ा०—ऐ नादान ! यह ख़ाम ख़याली छोड़, अपने बुज़ुर्गों के अहद को न तोड़; ज़ाती गरज़ के लिये ज़माने में फसाद न फैला।

जर्रा०—क्या खूब !

मुस्तहक बेटा न हो गर बाप की मीरास का।
गैर क्या वारिस बनेगा आप की मीरास का॥

(हाथ में मसाल जलाये हुए बागियों का आना)

सब बागी—दोहाई है; दोहाई है।

रज़ा०—यह बेवक्त ख़िलक़त का कैसा अम्बोह है ?

जर्रा०—यह मुफसिद बागियों का गरोह है।

सब बागी—दोहाई है; दोहाई है।

रजा०—ठैरो ठैरो; ऐ दिन के अन्धो! जल्द बतलाओ कि यह बेवक्त मसालें रौशन करके फिरने से क्या मक्सद है तुम्हारा?

पहिला बागी—मक्सद यह कि जिस सल्तनत के आफताब में इन्साफ़ की रौशनी नहीं रहती वहां का रौशन दिन रात की तरह तारीक नज़र आता है। इस लिये हमको भी इन तारिकियों के पेश आनेवाले खतरों से बचने के लिये हाथ में मसालें लेकर फिरना पड़ता है।

रजा०—ऐ बेवकूफो!

चश्म नाबीना हो कामिद जब्के लुत्फे दीद से।
फिर गिला बेजा है हमको चश्मये खुर्शीद से॥

सब बागी—हैं! तो क्या हम लोग ख़ता पर हैं?

रजा०—बेशक; तुम लोग दग़ा पर हो।

सब बाग़ी—हरगिज़ नहीं।

रजा०—क्यों नहीं?

पहिला बागी—इसलिये कि:—

शाहे गाफ़िल पासबाने मुल्क कहलाता नहीं।
छिप के सूरज रोशनी आलम को पहुँचाता नहीं॥

क्या यह ज़माना नहीं जानता है कि हमारा बादशाह ग़फ़लत की नींद में सो रहा है और एक मिश्र की माशूका पर जान दिल से फिदा हो रहा है।

रज़ा०—यह सब कुछ सही, लेकिन फिर भी उस नेक बादशाह के इनसाफ़ पर कोई भी हरफ़ न आ सकेगा। लाख बादल स्याह हो, लेकिन पानी तो सुफ़ेद ही बरसेगा।

खु०—हाँ हाँ हाँ हाँ यह तो वही मसल हुई, जनाब आली ! कि अगर मेरी मुर्गी काली है मगर अन्डा तो सुफ़ेद देने वाली है।

रज़ा०—हैं; तू कौन है नाबकार।

खु०—बन्दा बन्दा अपने ज़र्रार बादशाह का मुलाज़िम ज़ी इक्तेदार।

रज़ा०—खबरदार ! अगर अब की जबान हिलाया तो समझ रखना कि मैंने तुझे खाक में मिलाया।

खु०—अव्वल मुझे तो कौन हाथ लगा सकता है।

रज़ा०—देखूं मेरे हाथ से तुझे कौन बचा सकता है।

(दोनों का लड़ना रोशनअख़्तर का आना)

ज़र्रा०—खबरदार !

रोशनअख़्तर—रोक लो, रोक लो, अपने दस्त सितम को रोक लो। ज़र्रार ! यह कैसी बेवफाई।

ज़र्रा०—हैं, बेवफ़ाई मैंने क्या की

रोशन०— हां हां तूने तूने, ओ जालिम तूने, यह बुराई की है जिसको बयान करते हुए दिल कांप उठता है; कलेजा इसकी याद से फटा पड़ता है।

ज़र्रा०—और तुमने भी मेरे साथ वह सलूक किया है जो किसी जमाने में हज़रत यूसुफ से उनके हक़ीक़ी भाइयों ने किया था।

रौशन०—ऐ काश तेरे साथ भी वह सलूक किया जाता और तुझे भी शीर के बदले जहर दिया जाताः—

के ता नालाँ सितम से तेरे एक आलम नहीं होता।
जो पैदा ही न होता तू तो पैदा ग़म नहीं होता॥

ज़र्रा०—यह तो नहीं; अलबत्ता अगर मैं पैदा न होता तो तुम्हें मेरे बाप की सल्तनत पर कबजा पाने का काफी मौका मिलता।

रौशन०—तो क्या अब इस सल्तनत पर काफी कब्ज़ा नहीं है हमारा?

पहिला बाग़ी—नहीं नहीं; अब इस सल्तनत पर कुछ भी कब्जा नहीं है तुम्हारा। इस वक्त हम लोग बादशाह गजन्फर की हुकूमत से आज़ाद हैं।

रौशन०—क्या आज़ाद?

सब बागी—हाँ आज़ाद! आज़ाद!! आज़ाद!!!

रौशन०—ऐ बागियों, मुफसिदों! सोचो समझो और ग़ौर करो कि, तुम किसको मुबारक हुकूमत से आज़ाद होने की तमन्ना करते हो। क्या उस बादशाह की मुबारक हुकूमत से कि जिसने आजतक इस सल्तनत पर पड़ने वाली मुसीबतों के तीरों की बौछाड़ों को खुदासिपर बनकर तुम्हारे नन्हें नन्हें बच्चे और उनकी बेबस माओं की जानें बचाता रहा। आह! वह मिस्ल बाप के तुमको चाहता था और माँ की तरह प्यार करता था।

सब बाग़ी—बेशक! बेशक!

रौशन०—हकीकत में वह इन्साफ का देवता था और तुम सब उसके पूजने वाले थे।

सब बाग़ी—बेशक; बेशक।

ज़र्रा०—अफ़सोस! इस औरत की चर्बज़ुबानी ने फेर दिया मेरी सब उम्मीदों पर पानी।

रौशन०—ऐ मेरी जान से ज़ियादह अज़ीज़ रिआया! तुम अपनी इस नाचीज़ मलका को हमेशा के लिये अपना बिहीख्वा समझो और बेफ़िक्र होकर अपने घरों में बैठ रहो। मुफसिदों की झूठी अफ़वाहों पर कान न धरो। अब यह मुबारक दिन क़रीब है कि तुम फिर अपने बादशाह को इस सल्तनत के तख़्त हुकूमत पर बैठा हुआ देखोगे।

पहिला बाग़ी—तो क्या हमारा बादशाह मिश्र से निकल चुका?

रौशन०—हाँ, शायद।

सब बाग़ी—हुर्रे हुर्रे।

सब बाग़ी—क्या वह दिलफ़रेब की क़ैद मोहब्बत से आज़ाद हो गया।

रौशन०—हाँ, शायद।

सब बाग़ी—हुर्रे हुर्रे।

रौशन०—मुझे यक़ीन है कि बादशाह मेरा दिलसोज़ ख़त का मुलाहेजा फ़रमाते ही मिश्र से निकल चुका होगा और क़रीब क़रीब शहर रूम पहुँच गया होगा। (बाग़ियों का जाना) हैं, यह क्या?

(जासूस का पाबज़ंजीर आना)

ज़र्रा०—ख़त की रसीद।

रौशन०—या ख़ुदा! यह मैं क्या देख रही हूं बरगस्तः तक़दीर।

ज़र्रा०—अपने बावफा शौहर की मुहब्बत भरी तसवीर।

रौशन०—क्यों ऐ गिरफ़्तार क़ैदिये जंजीर! बोल किसने किया यह तेरा हाल तबाह?

जासूस—वही मगरूर दिलफरेब रूसियाह।

रौशन०—सबब तबाही।

जासूस—बेगुनाही।

रौशन०—आह! यह कैसा ज़ुल्म! क्या बेगुनाही भी है कोई जुर्म?

गर दिया हुक्म गिरफ्तारी का उस बदख़्वाह ने।
क्यों रिहाई तुझको दिलवाई न आदिलशाह ने॥

जासूस—ऐ मलका! जो खुद क़ैद मोहब्बत से रिहाई नहीं पा सकता; औरों को क्योंकर रिहाई दिलायेगा भला! दिलफरेब ने उस आदिल बादशाह के दिल को ऐसा कस लिया है जिस तरह इस बेड़ी और हथकड़ी ने मुझको बेबस कर दिया है।

रौशन०—क्या वह मग़रूर बादशाह इतना भी मुतबद्देर नहीं था जो उसके हुक्म के ख़िलाफ करता।

जासू०—ऐ मलका, जिस तरह एक मुकद्दस पैगंबर खुदा के भेजे हुए फरमान के खिलाफ़ नहीं कर सकता; इसी तरह बादशाह भी दिलफरेब के एक मामूली हुक्म से भी इनहराफ नहीं कर सकता।

ज़र्रा०—क्यों मलका! देखा आपने अपने शौहर की बेजा तरफदारी का नतीजाः—

नाज था जिसकी तुझे मेहर वफ़ादारी पर।
वही आमादा है अब तेरी दिला आजारी पर॥

यूसफ—अम्माजान, क्या अब्बाजान नहीं आये ?

रौशन०—हाय नहीं आये । ओफ ! रजापाशा यही बेह-तर है कि मैं खुद मिश्र को जाऊं और शाह को समझा के मना के साथ लाऊं ।

यू०—अम्माजान, क्या तुम तनहा मिश्र का सफर करोगी? मुझे साथ न ले जावगी ?

रौशन०—हाँ बेटा ! मैं तनहा जाऊंगी और इन्शाअल्ला बहुत जल्द वापस आऊंगीः—

उम्मीद तो नहीं उस बेवफा के आने की ।

न यह तवक्का है उस पास जाके आने की ॥

उम्मीद है तो फक्त एक कज़ा के आने की ॥

(दोनों का जाना)

ज़र्रा०—निकला कदम यहां से तो इस नाशकेब का ।

हां वक्त यही है मेरे मक्रो फरेब का ॥

खुशामद ! फौरन् जाओ और गजन्फर के चिराग यूसुफ को बाद अजल से बुझा ।

खु०—लीजिये यह चला ।

ज़र्रा०—मगर देखना कहीं उसकी आँसुओं की बरसात तेरे आतशी कीने को बुझा न दे । कहीं उसकी बेबसी की आह तेरे आहनी दिल को मोम न बना दे ।

खु०—बलंद एकबाल ! मेरी निसबत और आपका यह ख्यालः—

आह—दिल तो मेरा है इस कदर पत्थर ।

नाच समझूं जो तड़पे वह मुज़तर ॥

शोर व गुल और नाला उस गुलका।
जैसे तराना है बुलबुल का॥

ज़र्रा०—आह, शाबाश! मरहबा! फौरन जा देर न लगा।
(जाता है)

खु०—यह चला।

जर्रा०—सफहे दुनियां से बिल्कुल नेस्त जब नामे उदू होगा। मेरा सर सब्ज बारआवर नेहाले आरजू होगा।

गाना।

तख़्ते क्यानी हो, ताज़े शहानी हो, ऐसी जहानी हो, सारे जहाँ में मेरी सुलतानी हो; शाने लासानी, हो कत्ल जो दुश्मन, आरजू बर आवे हासिल शादमानी हो। खा जाऊँ साँप को नेवला बन के छोड़ूंगा न जीता लिपटूं बला बन के—हूंह मैं वह आफत; ख्वार करूंगा, ज़ार करूंगा, वार करूंगा, खाक़ करूंगा, चाक करूंगा मैं सीना॥ तख्ते०—

अंक पहिला। सीन चौथा।

ख्वाबगाह।

(सीन ख्वाबगाह का बदल कर खून के दरिया का दिखाई देना, फेर ख्वाबगाह का दिखाई देना)

खुशामद—ख्वाबगाह के दरवाजे खुले पड़े हैं और दरवाज़ेपर कज़ा के पहरे खड़े हैं। आहा! कैसी मीठी नींद में सो

रहा है। नींद के मतवाले ! तू कुछ नहीं जानता और यहां तेरी मौत का सामान हो रहा है। ऐ रात ! आज तू इस कदर स्याह हो के खन्जर भी अपने मकतूल से न आगाह हो। ऐ आसमान के रौशन सितारों ! अब्र के नकाब में अपने मुंह को छिपा लो, क्योंकि तुम इस हौलनाक मन्जर के देखने की ताब न ला सकोगे; शोर व गुल मचा के हमारे शिकार को बिस्तरे-मौत से जगा दोगे। ऐ जहन्नम की आग ! मेरे जिस्म में ज़रा भी रहम का हिस्सा बाकी रह गया हो तो उसको जला दे हाथ फौलाद से ज्यादा सख़्त और दिल पत्थर से ज्यादा कड़ा बना दे।

(चार बजने की आवाज आना)

लो घड़ियाल ने भी इसकी उम्र की आखरी घडी बजादी।

यूसुफ—(ख़्वाब में बड़बड़ाता है) खून ! खून ! खून !

खु०—यह क्या बकता है मजनून।

यूसुफ—हैं, क्या वह ख्वाब था जो अभी मैंने देखा। (जाग उठता है) आह ! कैसा खौफनाक ख़्वाब पुरअज़ाबहै। यह कौन ? खुशामद ! क्या अच्छे वक्त पर हुआ तेरा आना। वरना मेरी जान खौफ से निकल जाती या यह हुशयारी दीवानगी से बदल जाती।

खु०—अगर तू नींद से न चौंका होता तो यह छुरी तेरे सीने पर चल जाती।

यूसुफ—आह ! ख्वाब में क्या देखता हूं कि खून का दरिया है और निहायत जोश व खरोश से बह रहा है। और बजाय होबाब के सतह आब पर मकतूल इनसानों के सर मौजों की ठोकरें खाते फिरते हैं। और प्यारी मां इस खून के

दरिया में डूबती हुई नजर आई और अपने खून आलूदा हाथों से खून का भरा हुआ कटोरा मेरे हाथ में दिया, जिसको मैं लेते ही पी गया और इधर मेरी प्यारी माँ ने ऐसी खौफनाक चीख़ मारी कि जिसकी दहशत से मैं चौंक उठा। ऐ मेरे अच्छे खुशामद! कह इसकी क्या ताबीर होगी।

खु०—बस तेरा गला और मेरी शमशीर होगी।

यूसुफ—हैं, यह क्या? तू कुछ बोलता नहीं; ख्वाब का ओक़दा खोलता नहीं। या खुदा! यह तेरा बदन बेंत की तरह क्यों थर्राता है; इस कदर क्यों घबराता है।

खु०—चल ओ गिरफ़्तार अजल, मेरे करीब आ और अपनी गरदन झुका।

यूसुफ—ओ खुदाया! तू क्या, तू मेरे कत्ल के इरादे से है यहां आया?

खु०—हाँ।

यूसुफ—किसके हुक्म से?

खु०—अपने मालिक के हुक्म से।

यूसुक—मालिक कौन? क्या मेरे अब्बजान?

खु०—नहीं; जर्रार जी शान।

यूसुफ—यह तू झूठ कहता है। वह ऐसा शख्स नहीं जो अमानत में ख़यानत करे। बागबान होके फूलों से नफ़रत करे।

खु०—ऐ बेवकूफ लड़के! जर्रार की मुरव्वत का ख्याल छोड़; चिराग होके हवा से न रिश्ता जोड़।

यूसुफ—मगर मैंने तेरे आक़ा को कौन सा ऐसा सदमा पहुँचाया है; जिसका इन्तेकाम लेने के लिए तुझे यहां भिजवाया है।

खु०—हाँ बस; जिस तरह साँप और नेवले की अदावत का कोई सबब नहीं; इसी तरह तेरी और उसकी खुसूमत का भी कोई सबब नहीं।

यूसुफ—हाय ! कोई कहदे जाके मेरी प्यारी मां से।
कि तेरा लख्त जीगर जाताहै अपनी जाँ से॥

लो खबर के मरता है तुम्हारा बेटा।
माल दौलत से सिवा जान से प्यारा बेटा॥

खु०—चल।

यूसुफ—आह ! ओ जालिम क्या भूल गया वह ज़माना जब कभी तेरे सर में दर्द हुआ करता था तो मैं बावजूद शाहज़ादा होने के इन नाज़क २ हाथों से पहरों तेरा सर दबाया करता था, जो किसी गरीब का लड़का भी इतनी तकलीफ गवारा न करता होगा। ओ जालिम ! क्या मेरी खिदमतों का यही सिला है ? जो तू मेरी जान लेने पर तुला है।

खु०—आह ! यह नाज़ुक शीशा पत्थर को चकना चूर कर रहा है, दिल इसकी भोली बातों से नरम पड़ के मुझे इस पर रहम करने पर मजबूर कर रहा है। क्या मैं इसको छोड़ दूं; आक़ा से किया हुआ अहद तोड़ दूं। नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं; बस चल गरदन झुका।

यूसुफ—आह ! नहीं; ऐ मेरे अच्छे खुशामद ! यह वही गरदन है जिसको तू घन्टों अपने जानू पर रख कर बोसे लिया करता था और अपने हाथों से गून्द गून्द के खुश रंग फूलों का हार पहनाया करता था। आह ! बाल बोल क्या

यह वही हाथ हैं जो आज मेरी गरदन पर छुरी फेरने के लिए तैयार हैं।

खु०—उफ! दिल में रहम का दरिया उमंड चला। ओ खूनी देवता! मुझे हिम्मत दिला।

यूसुफ—जिसके फूल से बदन को तू अर्क गुलाब से नहलाया करता था क्या यह वही जिस्म है जिसको तू अब खाक खून में मिलाया चाहता है।

खु०—हाय! कदम इसी इरादे से हटा जाता है, दिल इसकी तेग़ ज़ुबान से कटा जाता है।

यूसुफ—जिसकी आँखों में प्यार से सुरमा लगाया करता था, क्या यह वही आँखें हैं जिन आँखों में अब गोर की स्याही छा जायगी; मौत की नींद आ जायगी।

खु०—नहीं; नहीं; हरगिज़ नहीं; जा ऐ लड़के! मैं बहुत पशेमान हुआ इस ख्याल खाम में पड़के।

यूसुफ—तो क्या तू ने मेरा खून माफ किया?

खु०—हाँ मैंने तेरी ज़ानिब से अपना दिल साफ किया। प्यारे लड़के! अब तू यहां से किसी तरफ को भाग जा। मेरी और अपनी जान बचा। (यूसुफ भाग जाता है) हाय! वह तो गया! ऐ बेवकूफ खुशामद! यह तू ने क्या किया। अगर यह राज़ तख्त अज़बाम होगा तो तेरी गरदन पर यह खन्जर बेनयाम होगा। अब यही मुनासिब है कि इसके पीराहन को खून में आलूदा करके ले जाऊं और उसको दिखा के अपनी जान बचाऊं।

अंक पहिला। सीन पांचवा।

दिलेरजंग का मकान।

गाना दिलनवाज़ व छलावा।

दोनों—डाले बाहें गले यार प्यार से, अब फिरूंगी बेखटके मैं लटके से।

दिलनवाज़—होवेगी शादी खाना आबादी।

छलावा—हिलमिल मनाये रंगरेलियां।

बिगड़ेदिल—लादूं साड़ी ज़रदार अच्छी अच्छी दिलदार।

जात०—तुझे लादूं मैं नार हीरे मोती का हार।

बिगड़ेदिल व ज़ातशरीफ़—जनाब को तसलीमात।

दिलेरजंग—(आकर) अलहम्दलिल्लाह, आज खुदा ने मेरी आखिरी आरज़ू पूरी कर दी जिसके बर आने की मुझे उम्मीद न थी। यह दोनों बहादुर नौजवान शरीफ खान्दान मेरी अज़ीज लड़कियों के ख़ास्तगार हैं। चुनांचे ज़ातशरीफ मेरी बड़ी लड़की छलावा का ख़ास्तग़ार है और बिगड़ेदिल मेरी दूसरी लख़्तजिगर दिलनवाज़ का तलबगार है। शान इलाही, दामाद भी मिले तो दोनों के दोनों बहादुर सिपाही और मुलाजिम शाही। मुझे भी थी ऐसे ही दामादों की जरूरत, वरना नामर्द और बुजदिलों से तो मुझे सख्त है नफ़रत। आओ मेरे अज़ीज़ बेटो:—

खुदा ने दिन दिखाया है तुम्हें यह शादमानी का।
गुज़ारो ऐश व इशरत से ज़माना ज़िंदगानी का॥

ऐ कारसाज आलम ! यह जोड़ा।

(चालाक का ख़त लाकर दिलेरजंग को देना)

दोनों—निकल जा तू अभी यहां से टल जा।

दिलेरजंग—(ख़त पढ़के) चालाक ! जल्दी इन बदमाशों को घर से निकाल दे।

ज़ात०—निकल जा।

बिगड़े०—टल जा।

छु०—निकल जायें।

दिलन०—टल जायें।

दिलेर०—हां इसी आन निकलो। चालाक ! जल्द इन शैतानों को टाल; धक्के देके निकाल।

चालाक—बहुत खूब।

ज़ात०—अजी जनाब !

बिगड़े०—अजी हुजूर !

छु०—अब्बाजान !

दिलन०—अब्बा !

ज़ात०—अजी जनाब ! कुछ तो खुलासा कीजिये।

बिगड़े०—यह क्या बात है ?

दिलेर०—मैं तुम्हें हरगिज नहीं बता सकता। बस इसी आन हो जाओ दफान।

ज़ात०—यह अजीब तरह का नज़र आया इन्सान।

दिलेर०—अबे निकाल तू क्या बकता है वो बदअकल !

ज़ात०—यार बिगड़े बुरे नसीब लड़े।

बिगड़े०—कुछ तुम्हारी समझ में भी आया कि यह मामिला है क्या ?

ज़ात०—मेरी समझ में ख़ाक नहीं आता तुमने कुछ जाना।

बिगड़े०—ख़ाक न पहचाना।

ज़ात०—शायद इसके दिमाग़ में खलल हो गया है।

बिगड़े०—हाँ; जब तो कहो यह बुड्ढा पागल हो गया।

ज़ात०—लाहौलविला, मैं भी अपनी किस्मत को तक़दीर से मिला। न वह मुझे सताना छोड़ती है; न मेरी तबियत किसी हसीन से दिल लगाना छोड़ती है। पहले जो शादी की तो शादी की बरबादी होकर रह गई और इधर जो शादी की तो आधी होकर रह गई। उधर तो उस शेरदिल हरीफ ने बाज़ी बिगाड़ी और इधर हमारे आधे सुसरे दिलेरजंग ने बाज़ी बिगाड़ी। हत्तेरी किस्मत की दुम में नम्दा।

बिगड़े०—चलो फिर पूछें। आपको जरूर बतलाना पड़ेगा।

ज़ात०—हां जनाब! वर्ना बन्दा यहां से एक क़दम भी न बढ़ेगा।

दिलेर०—नहीं; मैं तुम्हें कुछ न बताऊँगा। बस जाओ मेरे घर से निकलो।

(दोनों को निकाल देता है)

ज़ात० व बिगड़े०—ओ बापरे!

दिलन०—अच्छे अब्बाजान! क्या हमसे भी न करोगे बयान?

दिलेर०—बेटियो, आज खुदा ने बड़ी आफत से तुम्हें बचाया।

छु०—मगर वह थी क्या बात?

दिलेर०—बात यह है कि वह दोनों इन्सान नहीं थे बद्जात !

छु०—इन्सान नहीं थे ? तो फिर वह कौन थे ?

दिलेर०—कौन थे, हैवान थे।

दिलन०—वह कैसे ?

दिलेर०—देखो ऐसे।

(दिलेरजंग का ख़त देना; दिलनवाज़ का पढ़ना)

दिलन०—मुशिफकम्मन् जनाब दिलेरजंग बहादुर, आप अपनी सुफैद डाढ़ी पर रुसवाई का डामर फिरवाना चाहते हैं। बेटियों को ऐसे शख़्सों से ब्याहते हैं जो कि दुनिया में कम हौसला, ना महफूज, बुज़दिल और डरपोक हैं।

अलराकिम—आपका खैरख्वाह।

दिलेर०—अब तुम भी इन दोनों का ख़्याल दिल से निकाल दो और अपनी उम्मीदों पर ख़ाक डाल दो।

(जाता है)

दिलन०—अफसोस ! किस्मत उलट गई।

छु०—यह क्या, काया पलट गई।

दिलन०—यह कैसे मालूम था कि तेरा प्यारा निकलेगा ऐसा नामर्द हेचकारा।

छु०—और यह किसे खबर थी कि तेरा बिगड़ेदिल इन्तेहा का होगा बुज़दिल।

दिलन०—बस बस, बहिन तू अपने प्यारे की बड़ाई न कर।

छु०—और तूभी मेरे प्यारे की बुराई न कर।

दिलन०—मैं अपने प्यारे के लिये जान लड़ा दूंगी।

छु०—और मैं अपने प्यारे के मिलने के लिये आराम गँवा दूंगी।

दिलन०—अच्छा हम तुम मिल के रोयें और अपनी जान खोयें।

(ज़ातशरीफ और बिगड़ेदिल का आना)

ज़ात०—क्यों सुना, किसी नाबकार ने खत लिख के इस बूढ़े खुदाये ख्वार पर हमारे नामर्द और बुज़दिल होने का राज इफ्सा कर दिया और बूढ़ा इस बात पर उधार खाये बैठा है कि जब तक मेरे दोनों दामाद अपनी बहादुरी का सुबूत न देंगे मैं हरगिज़ लड़कियों की शादी न करूंगा।

बिगड़े०—यह तो बुरी हुई।

ज़ात०—बहुत ही बुरी हुई।

बिगड़े०—फिर क्या तदबीर ?

ज़ात०—तदबीर तो हजार हैं मगर थोड़ी हिम्मत दरकार है।

बिगड़े०—और अगर हिम्मत न हो तो ?

ज़ात०—शादी का ख़याल छोड़ दो और चूड़ियाँ पहिन कर घर में बैठो।

बिगड़े०—ऊँ हूँ मुझे यह बेइज़्ज़ती गँवारा न होगी।

ज़ात०—अब सिवाय इसके कोई चारा नहीं है अगर बेहतरी जाना तो मेरी एक बात मानो।

बिगड़े०—वह क्या ?

ज़ात०—लड़ाई।

बिगड़े०—बापरे !

ज़ात०—हम तुम मिलके दोनों आपस में झूठ मूठ लड़ पड़ें और दूसरी बात... ... ...

बिगड़े०--बस बस मैं तुम्हारी दूसरी बात का ख्वाहिश-मंद नहीं; क्योंकि मुझे तुम्हारी पहिली ही बात पसंद नहीं।

जा़त०—ला हौलविला! यह कम्बख्त और भी डरपोक हो चला।

बिगड़े०—अरे, पर तुमने मेरा बिगाड़ा ही क्या है।

जा़त०—देख यार मेरी बात मान ले वरना पछतायेगा जान ले।

बिगड़े०—अच्छा कहो।

जा़त०—सुनो, अब मैं अन्दर जाता हूं और बूढ़े को किसी तदबीर से घसीट लाता हूं। तुम बूढ़े से ज़रा नहीं डरना और गुस्से की सूरत बना के मेरा खूब फजीहता करना।

बिगड़े०—अच्छा अच्छा। मगर तुम कहीं बुरा तो न मानोगे।

जा़त०—नहीं, नहीं; सुनो; फिर मुझे तलवार निकाल कर डराना, धमकाना, शोर मचाना, बड़बड़ाना, चिल्लाना।

बिगड़े०—अच्छा अच्छा, फिर?

जा़त०—फिर मैं भी तुम से लड़ पड़ूंगा।

बिगड़े०—बापरे!

जा़त०—फिर तुम मुझे ज़मीन पर पटक देना।

बिगड़े०—अच्छा अच्छा, मगर कहीं तुम मुझे न पटक देना बच्चा।

जा़त०—चुप; फिर हम तुम तलवार से मुकाबिला करेंगे।

बिगड़े०—ओ बापरे! फिर तो जरूर मरेंगे।

जा़त०—चुप; फिर पिस्तौल से फैर करना।

बिगड़े०—इलाही खैर करना।

जा़त०—चुप।

बिगड़े०—ओ यार तू ही बके जायेगा या मुझे भी कुछ कहने देगा तलवार के... ... ...

ज़ात०—चुप। और जो मौका पाना तो दो चार हाथ इस बूढ़े पर भी चला देना।

बिगड़े०—और जो कहीं बूढ़े का हाथ चल जाये तो मेरा तो दम ही निकल जाये।

ज़ात०—चुप; और फिर मैं तुम्हारे आगे से फरार हो जाऊंगा और तुम मेरे पीछे तलवार निकाले हुए दौड़ते फिरना और घरमें पहुँच कर हांड़ी बरतन अल्लम बल्लम सब तोड़ फोड़ देना।

बिगड़े०—अच्छा अच्छा यह मेरा काम।

ज़ात०—तब बूढ़ा चलके हमारी बहादुरी का क़ायल होगा और दुशमनों का सच्चा दावा बातिल होगा। फिर हमारी तुम्हारी शादी होगी। लो खुदा हाफिज़, अब मैं जाता हूं और बूढ़े को किसी तद्बीर से यहां घसीट लाता हूं।

बिगड़े०—अरे हाँ हाँ, ठैरो ठैरो, हाय! हाय! यह तो सच-मुच चला गया। हाय! हाय! इस मोहब्बत ने किस आफत में फंसाया; अब क्या करूं खुदाया। फर्ज करो अगर लड़ाई हुई और एक गोली भी उधर से चल गई; फिर क्या होगा? अरे होगा क्या, बस फट से जान निकल गई। फर्ज करो अगर तलवार का वार पड़ गया; फिर क्या होगा? अरे होगा क्या बस दम उखड़ गया। फर्ज करो उसने उठा कर ज़मीन पर दे मारा; फिर क्या होगा? होगा क्या हड्डी पसुली चूर हो गई। सब सेखी काफूर हो गई—ओ बापरे! पहुँचा खब्बीस। वह बूढ़ा इब्लीस।

दिलेर०—अजी तुम तो क्या अगर आसमान से फरिश्ते भी आयें और तुम्हारी बहादुरी में गीत गायें तो भी बन्दा इसपर यकीन न लाये। कहां तुम और कहां बहादुरी।

(हँसता है।)

जात०—हां दोस्त, यही मौका है बहादुरी दिखाने का।

बिगड़े०—बहादुरी दिखाने का या जान गँवाने का?

जात०—जनाब!

दिलेर०—नहीं; मैं कुछ सुनना नहीं चाहता तुम नामर्द हो, पस्त हिम्मत हो।

जात०—आप नहीं जानते हैं मेरा मिजाज बड़ा ही गर्म है। जियादह में जियादह चाय से भी जियादह गर्म है।

दिलेर०—फक्त बातों का भरम है।

जात०—हां दोस्त शुरू करो अपना काम। क्या तू मुझे गाली देता है?

बिगड़े०—अरे यह दीवाना क्या बकता है।

जात०—हां हां, देर मत करो।

बिगड़े०—यह भी ठीक है। मारो मरो। अबे ए ए, तू क्यों खड़ा है फासले पर। अगर मर्द है तो आ जा मुकाबले पर।

जात०—अबे क्या तू मुझसे जंग करेगा?

बिगड़े०—अरे अब तो बन्दा रुस्तम का भी काफिया तंग करेगा।

जात०—आ तो देखूं।

दिलेर०—ओहो! यह तो दोनों लड़ पड़े। दोनों दिलेर: दोनों दिल के कड़े।

बिगड़े०—बेवकूफ, इसी समझ पर बनता था फीलसूफ।

ज़ात०—हां अब मुझे गिरा दो।

बिगड़े०—यह लो।

ज़ात०—देख मैं तुझे हलाल कर दूंगा।

बिगड़े०—और मैं तेरी जिंदगी वबाल कर दूंगा।

ज़ात०—तो क्या तू मुझे न छोड़ेगा?

बिगड़े०—नहीं। अब तो बन्दा तेरा मुंह तोड़ेगा।

ज़ात०—अररर यह तो उलटी आँतें गले पड़ी। अरे कोई आओ मुझे बचाओ।

दिलेर०—हां हां, मियाँ बिगड़ेदिल मान जाव, मान जाव।

बिगड़े०—नहीं नहीं; तुम हट जाव; मैं इसका खून पी लूंगा; चीर कर फेंक दूंगा।

ज़ात०—हाय! हाय! अब जान बचती नजर नहीं आती। अरे बाबा खुदा के लिए माफ कर मेरी ख़ता।

बिगड़े०—नहीं।

ज़ात०—जनाब ज़रा दीवाने को थाम्हना।

दिलेर०—ओहो! मेरे रुस्तम ज़माना जरा होश में आना।

बिगड़े०—नहीं नहीं; तुम हट जाव। मेरे नज़दीक न आव। वरना मेरा हाथ चल जायेगा तो तुम्हारा भुरकुस निकल जायेगा।

दिलेर०—हाय! हाय! मर गया तेरा बाबा बेटी छलावा।

छ०—हायरे! यह मज़नून ज़रूर करेगा किसी का ख़ून।

दिलेर०—हाय! हाय! इस दीवाने से खुदा ही बचाये। मैं इन मनहूँस लड़कियों की बदौलत किस आफत में मुब्तिला हो गया। ओहो! वह पिस्तौल छूटी, वह तलवार चली।

(पटाखा)

दिलन०—वह मारा।

छु०—वह गिरा ।

दोनों—हाय मेरा प्यारा ।

चालाक—हुजूर ! हुजूर ! वह दोनों दीवाने पुरफतूर ।
ापस में लड़ रहे हैं । तलवार खींच खींच कर आगे
ढ़ रहे हैं ।

ज़ात०—मदद मदद, पुलीस पुलीस ! अरे मुझे कोई
चाओ । इस दीवाने के हाथ से छुड़ाओ । हाँ खबरदार !

बिगड़े०—किधर गया वह नाबकार । हाँ वह हो रहा
फरार ।

दिलेर०—बापरे ! कैसे वहशी आदमी । ओहो ! बरतन
ोड़ रहे हैं । संदूक तोड़ रहे हैं । कम्बख़्तों ने मेरा तमाम घर
त्यानाश कर दिया ।

ज़ात०—पकड़लो, पकड़लो; इस दीवाने को पकड़लो ।

दिलेर०—हां मियाँ बिगड़ेदिल, मान जाओ, मान जाओ ।

बिगड़े०—खबरदार, मेरे नज़दीक न आओ ।

ज़ात०—जनाब मुझे बचा लो ।

दिलेर०—अरे खुदा के लिए तुम अपने साथ मुझे भी
ाफत में न डालो ।

बिगड़े०—कहां है वह मरदूद ।

ज़ात०—देख यहां हूं मौजूद ।

दिलेर०—अरे ठैरो ठैरो, सब्र करो ।

बिगड़े०—नहीं ।

दिलेर०—ऐ बहादुरो ! अब शमशीर को म्यान करो और
ड़ाई से हाथ उठाओ ।

बिगड़े०—नहीं; यह हरगिज़ न होगा, तुमने हमको नामर्द बनाया, बुज़दिल ठैराया अब हम अपनी बेइज्जती का बदला लिये बग़ैर कभी न छोड़ेंगे ।

ज़ात०—लड़ते लड़ते मर जायेंगे मगर लड़ाई से हरगिज़ पीठ न मोड़ेंगे ।

दिलेर०—ऐ बहादुरो ! बूढ़े का कहना मानो और लड़ाई से हाथ उठाओ । आज से मैं तुम्हारी बहादुरी का इकरार करता हूं और तुम्हारी जवांमर्दी का दम भरता हूं ।

ज़ात०—अच्छा तो हम दोनों की शादी करो ।

दिलेर०—अभी लो, मगर हां तुम भी आपस में शीर व शकर हो जाओ एक दूसरे के गले लिपटो दोस्त बन जाओ ।

(दोनों का गले मिलना)

दोनों—यह लो ।

ज़ात०—क्यों दोस्त बिगड़े ! अपने फरेब की बाज़ी के पासे कैसे अच्छे पड़े ।

बिगड़े०—वल्लाह ! बहुत ही अच्छे पड़े ।

ज़ात०—सच कहना इस बूढ़े खूसट को कैसा दम दिया ।

बिगड़े०—और मैंने क्या कुछ कम किया ।

ज़ात०—अगर आज की इस हमारी जवाँमर्दी को फिरदोसी देख पाता... ... ...

बिगड़े०—तो जरूर एक नया शाहनामा बनाता ।

छ०—कौन मेरा प्यारा ज़ातशरीफ ?

दिलन०—कौन मेरा प्यारा बिगड़ेदिल ?

दिलेर०—ऐ बहादुर दामादो ! तुम दोनों बाकमाल हो ला जवाब हो:—

ढूँढे कोई चिराग़ भी लेकर जहान में।
पर आयेगा न तुमसा दिलावर जहान में॥

ज़ात०—इसमें क्या शक।
बिगड़े०—वाहरे मेरे सुफ़ेद ठग।
दिलेर०—इलाही रहे जब तलक कायनात।
रहे दूल्हा दुलहिन मोहब्बत के साथ॥

गाना।

छ०—आज खिली सेहरे की कलियां हमारी।
ज़ात०—मिली दुलहिन क्या माहपारा।
दिलन०—छूटे कभी न तुमसे नेहा हमारी।
बिगड़े०—चाहूं दिलसे अरे दिलआरा।
ज़ात०—बैठन को लादूं मोटरकाट की सवारी,
बिगड़े०-पहिनने को लादूं झूमर देहली का प्यारी!
ज़ात०—मांगे जो लादूं।
बिगड़े०—चाहे जो लादूं।
छ०—सस्ती न चीजें मोल लाना।
ज़ात०—नहीं टालूंगा फरमाना।

(सब का जाना)

अंक पहिला। सीन छठां।

दिलफरेब का महल।

गाना सहेलियां।

एरी आओ पिया को पिलायें अरगवानी शराब,
ल लुभायें रिझायें लुटायें जोबना, कोरे कोरे सुबू में

भरलायें अरगवानी शराब । पीले पीले मै इश्क के मतवाले, आन बान वाले, शम्सो कमर फलक शान वाले ॥ एरी०—

(रौशनअख़्तर का अन्दर से गाना)

निरमल मूरति पीयु की यों घट रही समाय ।
ज्यों मेंहदी के पात में लाली नजर न आय ॥
हमें भूल गये सांवरिया, किया याद कभी, नहीं याद कभी—

गज़नफ़र—कोई हाज़िर है ?

बिगड़े०—हाज़िर हूं ख़ुदावन्द न्यामत ।

गज़न०—यह कौन औरत गा रही है ।

बिगड़े०—हुज़ूर ! यह कोई फलक की सताई कुछ फरियाद करने आई है ।

गज़न०—इसको यहां हाज़िर लाओ ।

(रौशनअख़्तर का गाते हुए आना)

हिज्र में जान यहां आपके हरदम,
दरदे जिगर तड़पाये हाय सुनो फरियाद कभी ॥

गज़न०—इलाही ! यह कौन औरत है ज़ेर नक़ाब; मुझे इस पर शक गुज़रता है कि शायद यह मेरी बीबी है ऐ औरत ! अब हमें ज़्यादा मुग़ालता न दे । यह नक़ाब अपने चेहरे पर से उठा दे ।

रौशन०—लीजिये साहेब ।

गज़न०—हैं कौन, रौशनअख़्तर ! अरे कोई हाज़िर है ।

बिगड़े०—जी हुज़ूर !

गज़नू०—अरे ओ दरबान नाफरमान, तू इस औरत को यहां लाया। और इस बज़्म सुरूर में यह फितना बरपा कराया। नहीं; ले जाओ इस नाफरमान को फांसी पर लटकाओ। ऐ बेहया! यह कैसी शरारत, यह कैसी बेग़ैरती की हरक़त?

रौशन०—ऐ खाविंद! ख़याल करो, खुदा से डरो, बेग़ैरती का इज़लाम मुझ पर न धरो।

दिलफरेब—अरी! तू इनकी बीबी है, और अपना वतन बल्कि घर छोड़ के रूम से मिश्र तक चली आई। क्या यह नहीं है शरीफ खान्दानवाली औरतों के लिये बेहयाई?

रौशन०—क्या यह बेहयाई है? ऐ ज़न बादये ऐश कशीदा! दामने असमत दरीदा! मैं तो उसके पास आई हूं जिसके साथ रहने से मेरी दीन और दुनियां की भलाई है; मैं तो उसके पास आई हूं जिसके साथ उम्र बसर करने की कसम खाई है; मैं उसके पास आई हूं जिसको अपनी मौत और जिंदगी का इकरारनामा लिख दिया है; मैं किसी ग़ैरमर्द के पास नहीं आई। अब बता तो कौन है मूरिदे बेहयाई? मैं या और कोई नासज़ाई। नहीं, नहीं; बेहया वह है जिसने एक ग़ैर मर्द से आंख लड़ाई। असमत शिकार वह है जिसने एक हक़दार बीबी के शौहर को अपना नाज़ व करिश्मा दिखा कर अपने इश्क के फन्दे में फँसाई।

दिल०—हैं हैं, ओ औरत! यह तू किसकी शान में गुश्ताखी कर रही है?

रौशन०—मैं उसकी शान में गुश्ताखी कर रही हूं:—

जिसकी शान मेरी अज़मत मे बहुत ही कम है।
चुनांचे मैं एक दरिया हूं और वह एक कतरये शबनम है।

गज़न्—बस बस; ख़ामोश। ओ ज़ुबान दराज़! तुझे यहां आने का क्या अख़्तियार है।

रौशन०—हाय मेरे खाविन्द! क्या अब मेरा कुछ भी अख़्तियार नहीं; क्या मैं आपकी बीबी हक़दार नहीं? अरे, खुदा के वास्ते कुछ तो ख़्याल करो कि आपको तो एक ग़ैर औरत के पास रहने में कुछ आर नहीं; लेकिन मुझे क्या अपने व्याहता खाविन्द के पास आना भी सजावार नहीं?

गज़न्०—नहीं; जो औरत मेरी मोहब्बत की सजावार नहीं; वह किसी तरह मेरी हक़दार नहीं।

रौशन०—यह नहीं; बल्किः—

जानते हैं मुस्तहक का हक नहीं।
जिनके दिल में खौफ हक़ मुतलक नहीं॥

ऐ नामुनसिफ शाह! ख़्याल कर; तू उस आदिल हक़ीक़ी को क्या जवाब देगा जो एक च्यूंटी के दिल को भी सदमा पहुँचाने वाले से हिसाब लेगाः—

छोड़ देगा कब खुदा तुझ शाह दिलआज़ार को।
याद रख पहुँचेगा एक दिन कैफरे किरदार को॥

गज़न्०—ओ मगरूर औरत, सजावार ज़िल्लत, क्या तू यहां से बेआबरू होके जाने के लिये आई है?

रौशन०—खाविन्द! खाविन्द! मेरी और आपकी आबरू एक है; शौहर ही की हिफाज़त से बीबी नेक है। अगर मेरी आबरू पर हर्फ आयेगा तो आपकी आबरू में फर्क न आयेगा? गहन के लग जाने से आफताब स्याह न पड़ जायेगाः—

मेरी वफा को देख और अपनी जफा को देख।
लुत्फो अता को देख और अपनी ख़ता को देख॥

गज़न्०—ओफ! जिस औरत का शौहर ऐसा बेवफा, स्याहकार, संगदिल जहान में हो मशहूर; ताज्जुब है कि, तिस पर भी उसकी बीबी को उसीकी फरमाबरदारी हो मन्जूरः—

न होगी बावफा ऐसी कोई औरत जमाने में।
है तेरे दम से रायज़ मिक्कये उलफत जमाने में॥
बस, ऐ फित्नाअंगेज मोहब्बत, मेरे दिल से दूर हो।
सौदाय दिलफरेब मेरे सर से दूर हो॥

दिल०—हैं! हैं!

गज़न्०—चुप; ओ दुशमने जान! रहजन ईमानः—

बख्शे जिल्लत तेरी उल्फत भी तो क्या उफ़ न करूं।
तूफ है मुझ पर जो उल्फत पर तेरी तुफ न करूँ॥

दिल०—क्या मेरी मोहब्बत पर तुफ!

गज़न्०—हाँ; ऐ मेरी बावफा मल्का! बेशक तेरी ज़बान सच्चाई की कसौटी है।

दिल०—और क्या मेरी मोहब्बत झूठी है?

गज़न्०—हाँ, झूठी है; सरासर झूठी है। ऐ मल्का! तेरे जालिम शौहर ने अपनी जिंदगी का लुत्फ उठाया मगर अफसोस तेरी हसरत भरी जवानी को खाक में मिलाया। आह! क्या कहूं मुझे इस ज़न... ... ...

दिल०—बस; ओ बेवफा! बेमुरव्वत! तोताचश्म सुल्तान! मत खोल अपनी जुबाने तान; और सुन; अगर तुझे या तेरी मल्का की नज़र में मेरा वजूद बाइस रंज व सितम है तो ले,

शौक़ से मेरीगरदन काट ले; सर तसलीम ख़म है:—

जान जाने की है परवाह न सर जाने की ।
आरज़ू है तेरे क़दमों पर गुजर जाने की ॥

गज़न्०—लेकिन इस कत्ल की कोई वजह जेहत ?

दिल०—सज़ाय जुर्म उल्फत ।

गज़न्०—नहीं नहीं; उठ ऐ वफाशआर औरत ! ज़माने में कौन ऐसा संग दिल होगा जो इस तेरी वफाशआरी के सुबूत का कायल न होगा—

रौशन०—हैं !

गज़न्०—बल्कि रौशनअख़्तर भी तेरी इस वफाशआरी पर अपनी जान कुरबान कर देने को तैयार होगी; एक बार क्या सैकड़ों बार होगी ।

रौशन०—ओ नापाक ख़्यालों के दरिया ! तू एक ज़ने हुश्न-फरोश पर एक ऐसी औरत को कुरबान किया चाहता है कि, जिसकी पाक दामानी और वफाशआरी पर एक ज़माना अपनी जान व दिल निसार करता है । आह ! ओ ज़ालिम गुनहगार ! तू मेरे ख़्याल में इस सगे नापाक से भी बदतर है जो सिर्फ एक हड्डी पर अपना गुज़ारा करता है ।

गज़न्०—वह कैसे ?

रौशन०—क्योंकि तू एक लुक़मये हलाल को छोड़कर लुक़मये हराम से अपना पेट भरता है ।

गज़न्०—ओ नाफ़रमान ! रोक अपनी ज़ुबान वरना ख़राब होगी; मुर्दा दे एताब होगी ।

रौशन०—अफ़सोस; यह कैसी ज़िल्लत; यह कैसी रुस-वाई । ओ आसमान, यह कैसी कजअदाई । तूने मेरे ख़िरमने

हस्ती पर बिजली क्यों न गिराई। ओ मौत, तू राह में मुझे क्यों न आई। आह! जिस तरह एक बीमार को उम्दा गिज़ा फायदा नहीं पहुँचा सकती, उसी तरह इस ग़ाफिल के दिल पर नासेह की नसीहत अपना असर नहीं पहुँचा सकती।

गज़न्०—ओ, नहीं नहीं; तेरी नसीहतों का जादू मुझे गफलत की नींद से जगा रहा है; कोई ग़ैबी फरिश्ता तेरी इन नसीहतों के कोड़े मेरे दिल पर लगा रहा है।

दिल०—हैं, यह क्या?

रौशन०—शुक्र है कि आप ख़्वाब गफ़लत से बेदार हुए।

गज़न्०—ऐ मल्का! मेरे दिल ने मुझसे बेवफाई की; मेरे नफ्स सरकश ने मुझसे बुराई की। शैतान ने मुझे गुमराह किया और इस फसूँसाज़ की ख़ूबसूरती ने मुझे तबाह किया।

दिल०—कुछ अजीब इन्सान डवाँडोल है; यह मोहब्बत है या मखौल है। अफ़सोस; ऐ दिलफरेब! तूने यह बड़ा धोका खाया। ओ नादान, यह तूने किस पुरदग़ा से दिल लगाया। ओ बेवफा, बेमेहर, नामुन्सिफ! जब कि तू अपनी मल्का का था दिल दादा तो मुझसे क्यों किया मोहब्बत का वादा? क्यों तूने उल्फत कुबूल की; किस लिये यह आग लगाई? बोल; बोल; जुबान खोल? मगर नहीं; अब यह कान इस सवाल का जवाब सुनने के पेश्तर ही समाअत से माजूर हो जायेंगे। पेश्तर इसके कि दिल पर हर्फ़ शिकायत आये ज़बान बंद हो जायेगी।

ग़ज़न्०—हैं; तो क्या तू खुदकशी करेगी।

दिल०—हाँ हाँ; मैं अपनी जान को हलाल करूंगी।

गज़न्—आह! हरगिज़ नहीं; जिस गज़न्फर ने तेरे एक पसीने के बूँद को ज़मीन पर गिरने न दिया, अब वह तेरे खून

से ज़मीन को रँगी हुई देख सकता है? नहीं, कभी नहीं; मैं तेरे लहू की बूँद के बदले में सारे जहान को कत्लगाह बना दूंगा; इस चांद सी सूरत के लिये रोज़ रौशन स्याह बना दूंगा।

दिल०—तो फिर इस झगड़े का ख़ातमा कीजिये। अगर आप मेरे सच्चे आशिक हैं तो इसका नामोनिशान अभी दुनियां से मिटा दीजिये।

गज़न्०—हां; तो लो; मैं अभी इसे कत्ल करता हूं।

रौशन०—क्या; आप मुझे कत्ल करेंगे?

गज़न्०—हाँ।

रौशन०—ख़ैर; अगर तुम्हारी यही खुशी है तो शौक़ से मुझे कत्ल कर डालो। एक ग़ैर औरत के लिये अपनी बेकसूर बीवी को मार डालो। मगर याद रखो, उस आदिल और मुन्सिफ खुदा के सामने तुम्हें इसका जवाब देना पड़ेगा। याद रखो, एक दिन मुझे याद करके तुम्हें रोना पड़ेगा। याद रखो, एक दिन ऐसा आयेगा कि तुम मोहब्बत को गली गली ढूँढ़ते फिरोगे, मगर सच्ची मोहब्बत कहीं न पाओगे। ऐ शौहर! पेशीनगोई करती हूं कि अगर मैं बा-असमत और शौहर परस्त हूं, तो मेरे बाद मुझे याद करके रोओगे; पछताओगे। अगर यह बात गलत निकले तो समझना कि खुदा की खुदाई नहीं; दीन, ईमान, नेकी और असमत इस दुनियां में कुछ नहीं।

(ग़ज़न्फर का पिस्तौल मारना; रौशनअख़्तर का मरा जाना; कासिद का आना)

कासिद—ऐ मग़लूबुलग़ैज! शाह रूम से एक ख़ौफ़नाक ख़बर आई है कि शाहजादा यूसुफ को किसी बेरहम ने ख़्वाबगाह में कत्ल कर डाला।

(गज़न्फर का सुनते ही बेहोश होके गिरना। ड्रापसीन का गिराया जाना)

ड्राप सीन

अंक दूसरा। सीन पहिला।

महल ज़र्रार,

गज़न्—अफसोस; ऐ अजीज़ ज़र्रार! जिस खेती का तुमसा रखवाला हो, उसकी यों पायमाली होः—

बागबाँ ही जब चमन की अपने पायमाली करे।
कौन फिर उस बाग के फूलों की रखवाली करे॥

ज़र्रा०—आली जाह! दुनियां में कौन ऐसा बेरहम होगा जो तूती को पाले और बिल्ली के आगे डाले। मगर जब दौलत की तमा इन्सान की आँख को सी देती है, तो फिर उसको नेक और बद की तमीज़ नहीं रहती है। फिर वह जो कुछ कर गुजरे थोड़ा है।

गज़न्—यानी।

ज़र्रा०—यानी आपके भाई रज़ापाशा ने उस बेगुनाह बच्चे पर तीर सितम तोड़ा है।

रज़ा०—झूठा, मक्कार, दगाबाज़!

ज़र्रा०—हैं हैं।

रज़ा०—यह सब शरारत तेरी है; तूने ही उसके नाज़ुक गले पर छुरी फेरी हैः—

पता कातिल का खूँ आलूद तेरी आस्तीं देगी।
हुआ है जिस जगह खूँ यह गवाही वह ज़मीं देगी॥

गज़न्—तुम लाख कहो हम एक न मानेंगे। ज़र्रार इस इलज़ाम से बिल्कुल बरी है।

ज़र्रा०—(अप्रकट)मगर मीठी छुरी है।

गज़न्०—जिस तरह मैं मल्का के कत्ल के इलजाम से मुबर्रा हूं।

ज़र्रा०—वाह! क्या खूब। तो क्या हुजूर ने मल्का आलम को कत्ल नहीं फरमाया?

गज़न्०—उसे मल्का आलम न कहो बल्कि दुश्मन, गुनहगार, मुज़रिम कहो।

ज़र्रा०—जी; मगर यह क्यों? किस लिये?

गज़न्०—इसलिये कि वह गुनहगार मेरी जान से जियादा अज़ीज़ दिलफरेब को मुझसे जुदा करने आई थी गोया वह मेरे हक़ में मौत का फरिश्ता बन कर आई थी।

तौफीक़—जी नहीं; बल्के वह रहमत का फरिश्ता बन कर आई थी और एक बिहिश्ती तौहफा आपकी नज़र के लिये लाई थी लेकिन अफसोस, उस लज़ीज़ तोहफे को तो आपने दहने गोर के हवाले किया और एक नापाक लुकमा उठा कर खा लिया।

गज़न्०—चुप रह ओ बेअदब! वर्ना म्यान से निकल पड़ेगी तेग पुरगज़ब।

ज़र्रा०—हाँ; हाँ; हुजूर! ख़ैरख़्वहान सल्तनत का हमेशा से है यही दस्तूर कि वह शाहों को नेक सलाह दिया करें और खुदा ने बादशाहों को भी यही अख़्तियार दे रखा है कि, वह अपने दिल में जो आये वह किया करें;—अपनी मर्जी पर चला करें।

गज़न्०—यह तुम ग़लत कहते हो; ख़ुदा ने बादशाहों की ताकत और उनके मगरूर दिलों को दिलफरेब के दस्त कुद-रत में दे रखा है। क्या तुम नहीं देखते हो कि उसकी मोहब्बत ने मुझे एक जंजीरों में जकड़े हुए शेर की तरह आजिज़ कर दिया हैः—

कि वह अजल से आये न मेरे मकान को।
बेहुक्म दिलफरेब मैं दूंगा न जान को॥

ज़र्रा०—अल्ला अल्ला, हुज़ूर की मोहब्बत की कुछ इन्तेहा भी हैः—

रहेगी यही दिल की हालत तुम्हारी।
तो काहे को निकलेगी हसरत हमारी॥

गज़न्०—यानी ?

ज़र्रा०—यानी खादिम की यह आरज़ू थी कि आला हजरत मेरे बाप जहान्दार के ख़ज़ाने की वह बेशबहा खुशनुमा मोती जो अबतक नासुफ्ता है, उसकी कुबूलियत की इज्ज़त अता फरमाकर अपने ताज के गोशे में जगह देंगे और मेरे मरहूम बाप की रूह को शाद करेंगे।

गज़न्०—आहा, मैं समझ गया मतलब तुम्हारा। लेकिन अफसोस, मैं हुस्नपरवर से शादी नहीं कर सकता; क्योंकि एक पांव दो किश्तिया पर नहीं ठहर सकताः—

एक दिल था जो दे दिया उस बावफा दिलदार को।
दूसरा रखता नहीं जो बख्श दूं अगयार को॥

ज़र्रा०—अफसोस ! हुज़ूर के दिल में तो दो शख्सों की मोहब्बत समा नहीं सकती, मगर बागबान को देखिये कि,

चमन में हज़ारों किस्म के फूल खिलाता है और हर एक फूल की अदा पर कुरबान हुआ जाता है।

गज़न्०—अफसोस तू किसी तरह नहीं मानता; खैर, जाओ शादी का इहतेमाम करो, मुनासिब इन्तेज़ाम करो। रज़ापाशा! तुम भी ज़ाहिर करो अपना दिली मन्शा।

रज़ा०—ऐ मेरे मोअज़्ज़ भाई! मैं अपनी नाचीज़ ज़ुबान में इतनी ताकत नहीं रखता हूं कि, आपको पुरफरेब ज़र्रार के दिली इरादों से वाकिफ कराऊं। मगर इतना याद रखना कि यह शादी आपके तमाम खान्दान की बरबादी का बाइस होगी जो आप की भी नाशादी का बाइस होगी।

गज़न्०—फिर वही बातों को बौछाड़ और मतलब का बिगाड़। हमने तुमसे कब पूछा था कि ज़र्रार नेक है या बद और यह शादी नाहस या सआद।

ज़र्रा०—जी हाँ; इसका हाल तो सिर्फ वहीं जानते हैं जो सितारों की गरदिश को पहचानते हैं।

रज़ा०—ऐ गाफिल शाह! यह तेरी आँख गफलत की नींद से उस वक्त बेदार होगी, जब कि सुबहे-अजल सिर पर नमूदार होगी; और यह तेरे कानों के बंद दरवाजे सुनने के लिये इस वक्त वाह होंगे जब कि कोई बोलने वाला न रहेगा। इस वक्त तो मेरी बातें तुझे ज़हर से ज्यादा मालूम होती है; मगर जब जमाने को अजमाइयेगा तो तुझे नासेह की नसीहत याद आयेगी और खून के आँसू रुलायेगी—

न मल उन्हें जो नहीं तेरे हार के काबिल।
अरे यह फूल हैं तेरे मज़ार के काबिल॥

गज़न्०—वहशी! दिवाना! सौदाई!

तौ०—आहा! इस पाक फरिश्ते के जबान से सदाक़त की बू आती है।

कासिद—आलमपनाह! शादी का एहतेमाम हो चुका; कुल इन्तेजाम हो चुका।

(सब जाते हैं)

अंक दूसरा।　सीन दूसरा।

जरीर का दीवानखाना।

गाना सहेलियां।

जान आई क्या आया शाहे आलम आरा, दर्द दिल का चारह माहपारा जान व दिल से प्यारा न्यारा, तख्त जमका चमका दमका दमका रौशन तारा, पा नी सा गा सरगम पा धा पा मा गा रे नी सा, सा रे गा मा पा धा नी सा सा नी धा पा गा रे नी सा॥ सा नी धा नी धा पा धा पा मा पा मा गा मा गा रे गा रे सा, रे गा मा पा धा नी, सा नी धा पा मा गा रे सा, नी रे सा गा रे मा गा पा मा धा पा नी धा सा नी रे, सा गा रे मा गा रे सा नी धा मा गा रे मा नी सा॥ जान०—

जरी०—ऐ शाह! अपना रौशन दिल इस मेहर तल-अत से कभी न फेरना, क्योंकि आफताब के लिये रौशनी ही अच्छी है और इस शादी के मज़मून रिश्ते को कभी तोड़ने की कोशिश न करना। हां ऐ परी जमालो! मुबारक बादी का खुशामन्दराग अलापो।

(गजन्फर और हुस्नपरवर की शादी होना)

गाना सहेलियां।

आई उरूसे बहार चमन में शादियां, शादी की धूम धाम सुबह शाम जश्न आम है। प्यारा बना और बनी लासानी, खुश रहे मुदाम, दिल का अरमान मिला आराम जान मिला राजदान। एरी आओ गायेंगे नाचेंगे बाजेंगे साजेंगे करेंगे रंग रेलियां अठखेलियां सब सखियां दिन रतियां हर मिलियाँ॥ आया है ऐश का ज़माना, वाह, वाह, वाह॥ आई०—

गज़न्०—तौफीक़! हमारा पेशखीमा छावनी की तरफ रवाना हो, हम आज ही यहां से रवाना हो जाएंगे और बाकी ऐश व इशरत की घड़ियां वहीं छावनी में मनाएंगे।

ज़र्रा०—(अप्रकट) ठैरो; सैदो अजल! यह तेरी ऐश व इशरत की घड़ियां गम व मातम से हो जायँगी मुबद्दल।

गज़न्०—अज़ीज़ ज़र्रार!

भाई से उठ सकेगा न कुछ बार सल्तनत।
जाता हूं तुमको सौंप के मैं कार सल्तनत॥

मुझे यकीन है कि तुम बहुत ही नेकनामी के साथ सल्तनत चलाओगे।

ज़र्रा०—ऐसी नेक-नामी के साथ जैसे फरऊन था बदज़ात।

गज़न्०—मुझे या रिआयाये रूम को किसी किस्म की शिकायत का मौका न दोगे।

ज़र्रा०—मौका कैसाः—

अब फरयादी का गला घोंट दिया जायेगा।
तो फरयाद तेरे पास कौन लायेगा॥

गज़न्०—अच्छा; अब रुखसत।

ज़र्रा०—खुदा हाफिज।

(गज़न्फर का हंसते हुए चले जाना)

ज़र्रा०—बहुत हंसा; बहुत हंसा; मगर अब तो मेरे दाम फंसा। जिस तरह आसमान के जाले से इन्सान का नेकल जाना मुश्किल है; उसी तरह तुझको भी मेरे दाम फरेब से छुटकारा पाना मुश्किल है; कोई है, जाओ; रज़ा-ासा को गिरफ्तार करके असीरजिंदाँ करो और हमारे हुक्म के मुन्तेजिर रहो। जिस वक्त गज़न्फर की छावनी में पहुँचने की खबर आयेगी, उस नासजा के कत्ल की काररवाई की जायेगी। जाओ, अगर हमारा हुकुम बजा लाओगे तो बहुत इनाम पाओगे। ओ नाशाद रज़ा! निशानये तीरे कज़ा! अब चखाऊंगा तुझे तेरी फित्ना परदाजी का मजाः—

लाऊँगा इस खान्दान पर वह तबाही देखना।
ठोकरें खाता फिरेगा ताज शाही देखना॥

अंक दूसरा। सीन तीसरा।

दिलफरेब का महल।

गाना।

दिलफरेब—तीरे गम का निशाना कर गये जाते जाते, मुझे जाने जाँ। शक्ल दिखला दो खुदारा सितम-आरा मुझको, हिज्र ने मारा मुझको।

सहेलियां—धर धीर प्यारी मुश्किल होगी आसान बेगुमान।

दिल०—आह कल आये ना, यार घर आये ना।

सहेलियां—जान हमारी शाह की दुलारी मत कर ज़ारी।

दिलफरेब—मौला दुःख टार।

सहेलियां-सांवरिया तेरा आये जान मान मान।

दिलफरेब—निरास हूं मैं उदास हूं मैं॥ तीर०—

(खाजासरा का आना)

खाजासरा—बेगम साहेबा!

दिल०—क्या है?

खाजा०—रूम से एक—

दिल०—क्या रूम से कोई कासिद आया है?

खाजा०—जी हां।

दिल०—जा जल्द तर उसको यहां हाज़िर ला।

(कासिद का आना)

कासिद—तसलीम; ऐ बेगम साहेबा नामदार!

दिल०—ऐ यारे गमगुसार, जल्द सुना पैगाम ज़बानी; मेरे कान सुनने के बहुत मुश्ताक हैं किसी की पुरशोक कहानी।

कासिद—जनाब! गज़न्फर ने हुस्नपरवर से शादी कर ली।

सब—हैं?

दिल०-उफ ! दमे गुफ्तार जबाँ तेरी न क्यों कट के गिरी।
तुझपै छत गुम्बदे गरदूं के न क्यों फट के गिरी ॥

अफसोस ! ओ तोता चश्म, जिसने अपना दिल तुझपर कुरबान किया, उसकी जान लेने का तूने सामान किया । जिस अब्र ने तुझ पर समुन्दर बरसाया, उसी को तूने एक कतरे के लिये तरसाया। अच्छा भला, यह तो बता तूने हुस्न-परवर को देखा है ?

कासिद—अलबत्ता ।

दिल०—भला वह हुस्न सूरत में कैसी है ?

कासिद—बस ज़र्रा वह तो आफताब हो तुम; अख्तर वह तो माहेताब हो तुम ।

दिल०—अहा, फिर तो वह उसको मुंह भी न लगायेगा और वह कदोकामत में कितनी है ?

कासिद—खासी भुतनी है ।

दिल०—और सिन क्या होगा ?

कासिद—यही कुछ १५ । १६ का ।

दिल०—अच्छा आवाज में कुछ मिठास है ?

कासिद—जी नहीं, खासा फटा बाँस है।

दिल०—आंखें नरगिसे मस्त हैं, या मतवाली ?

कासिद—अजी दोनों सिफ्तों से खाली ।

दिल०—और नाक ?

कासिद—हू बहू कदू की फाँक ।

दिल०—और बाल ?

कासिद—जी के वबाल ।

दिल०—कासिद! अगर तेरा रास्त बयान है तो फिर मेरी सारी मुश्किल आसान है। (जाना)

कासिद—हुज़ूर! आप मेरा एतबार करें।

एक सहेली—बेगम साहेबा! आप खुद रूम जायें और अपनी आंखों से खुद मुलाहिज़ा कर आयें।

दिल०—अच्छा तो अभी सफर का इन्तेज़ाम करो; चलने का सामान करोः—

या तो सर देते हैं या लेते हैं दिलबर अपना।
आज झगड़ा ही चुका लेते हैं चलकर अपना॥

गाना।

पिया को समझाये लायेंगे। इन्तेज़ारो फेराक में जान चली, मिलके मुझसे तुम मदन मोहन कब मधुर बचन सुनाओगे॥ शेर—अब रोते हैं ले लेके अबस नाम मोहब्बत; आग़ाज़ में सोचा न कुछ अन्जामे मोहब्बत। जो इसमें फँसा मर के हुआ भी न रेहा वह; कहते हैं अजल जिसको, वह है दाम मोहब्बत॥ अब तो फुरक़त के सदमें न हमसे उठाये जायेंगे॥ पिया को०—

अंक दूसरा। सीन चौथा।

मकान बिगड़ेदिल।

छलावा—लो यह तो सो गई; बिलकुल गाफिल हो गई। अलबत्ता अगर मेरे आने की खबर होती तो शायद यह न सोती। या अल्लाह! यह क्या होगी?

(जातशरीफ का बिगड़े दिल की रूह बनकर आना)

ज़ात०—बन्दे को आपने पहचाना; कुछ भी न जाना। अगर न पहचाना हो तो अब पहचान जाइये। हजरत जात-शरीफ को जान जाइये। (छलावा का छिपकर सुनना)

छलावा—कौन; मेरा शौहर ?

ज़ात०—यों तो इस हसीनए ज़माना का मैं एक मुद्दत से हूं दीवाना, लेकिन बिगड़ेदिल की मौजूदगी के बाइस मुझे दुश्वार था यहां का आना जाना।

छ०—ताज्जुब।

ज़ात०—मगर जब वह खब्बीस गजन्फर के अताब में आकर मिश्र से टला, तो मुझे अपनी 'माशूका से याराना बढ़ाने का यह आसान हीला मिला कि हर शब में दो दफा भेस बदल कर—बिगड़ेदिल की रूह बनकर आना और उसके मर जाने का यक़ीन दिलाना। ताकि यह अपने शौहर को मुर्दा समझ कर उसका ख्याल छोड़े और मुझसे अपनी बीबी बनने का रिश्ता जोड़े।

छ०—हाँ यह बात ?

ज़ात०—ओहो, अब रात ज्यादा होती जाती है। बेहतर है कि मैं अपना काम शुरू करूँ। उठ उठ; ऐ मेरी नेक बख्त बीबी !

दिलन०—(जाग उठना) ऐ मेरे अज़ीज शौहर की पाक रूह ! कह कह और क्या कहने आई है तू।

ज़ात०—सुन; ऐ आलमे अरवाह के भेदों से नावाकिफ ! सुन; मैं तुझे बार बार यही कहने के लिये आता हूं कि अब मैं दुनियां से कज़ा कर गया; तुझे तनहा कर गया।

दिलन०—अफसोस।

छ०—(अप्रकट) मूये झूठे पर खुदा का कहर।

जात०—सुन; तेरा शौहर तुझे अपनी वसीयत सुनाता है।

दिलन०—और क्या वसीयत ?

जात०—सुन; वह जो मेरा दोस्त जतशरीफ है।

दिलन०—हाँ हाँ।

जात०—उससे तू शादी की दरखास्त करना; वह तुझे मुझसे बढ़कर प्यार करेगा; उम्र भर तेरा वफादार गुलाम बनकर रहेगा।

दिलन०—लेकिन उसकी तो बीबी जिन्दा है।

जात०—हाँ; जिन्दा है, मगर करीबन मरने वाली है।

दिलन०—हाय ! मेरी प्यारी बहिन, क्या अजल तेरी भी हो गई दुश्मन।

छु०—(अप्रकट) मेरे दुश्मन को मौत आये, या इस मूये को ठिकाने लगाये।

जात०—सब्र ! सब्र !

दिलन०—ऐ मेरे प्यारे शौहर ! ठहर; जरा मुझे अपने गले लगने दो।

जात०—खबरदार ! नजदीक न आना।

दिलन०—क्यों ?

जात० क्योंकि मैं नूरी हूं; और तू खाकी है। मुझसे गले मिलने से तेरी हलाकी है।

छु०—हजरत यह नहीं कहते कि भांडा फूट जायेगा।

जात०—ले अब मैं जाता हूं; तेरा खुदा हाफिज।

दिलन०—नहीं, नहीं; ठैरो, ठैरो।

जात०—क्यों, क्या कहना चाहती है।

दिलन०—ऐ प्यारे शौहर ! ठैरो; अगर गले लगाने में कुछ हर्ज है तो अपना नूरानी चेहरा ही दिखा दो।

ज़ात०—(अप्रकट) अरर ! जल्द कोई फिकरा चलूं,
प्रकट) अो नादान ! इस खौफनाक इरादे से बाज आ।
अगर तू मेरी सूरत देख पायेगी; तो अन्धी हो जायेगी।

छु०—मगर मैं तुझे अन्धा ही बना कर छोड़ूंगी।

दिलन०—खैर; मेरी किसमत।

(ज़ातशरीफ का जाना; छलावा का ज़ाहिर होना)

छु०—क्यों बहन दिलनवाज़ !

दिलन०—कौन छलावा, मेरी बहन; मेरी दमसाज़ !

छु०—हैं हैं बहन, इस घबराहट की सबब ?

दिलन०—वह देख; वह देख; वह गई, वह गई, हाय !
गई; गई।

छु०—गई; गई; कौन गई ?

दिलन०—रूह; रूह; मेरे शौहर की पाक रूह।

छु०—शौहर की पाक रूह !

दिलन०—हाँ; रात में दो दफा मुझे नज़र आती है।

छु०—क्या दो दफा ?

दिलन०—हाँ; दो दफा। और मुझे तेरे शौहर से शादी
करने की तरग़ीब दिलाती है। वाह बहिन, तू तो हँसती है।

छु०—बहिन ! बात यह है कि जिसको तू अपने शौहर की
रूह समझती है वह—

दिलन०—कौन ?

छु०—मेरा शौहर ज़ातशरीफ है बद्गौहर।

दिलन०—हाँ यह बात है, तब तो बहिन तेरा शौहर
बड़ाही बदज़ात है।

छु०—इसमें क्या शक।

दिलन०—खैर; अब उसे दुबारा आने दो, फिर देखना कि मैं उसे कैसी देती हूं जक।

छु०—क्या करोगी?

दिलन०—उसे दुबारा आने तो दे।

छु०—हाँ वह आ गया।

दिलन०—बहिन, अब तुम जाओ और पुलिस को बुला लाओ।

छु०—मगर देखो, कहीं धोके धोके में मेरा शौहर न फांसी चढ़ जाय?

दिलन०—नहीं नहीं, तुम खातिर जमा रखो।

बिगड़े०—आहा, यही वह मकान बेसाज व सामान है। जो अब वीरान है। नहीं मालूम खुशरंग चिड़ियां दिलनवाज मग़मूम; क्या होगी हालत नामफहूम। हैं; यह कौन महवे खराम है; आहा, यह तो वही नाजुक अन्दाम है। ओहो, आइये! आइये!

दिलन०—बस जरा दूर ही से बात कीजियेगा, यह नखरे अपनी बीबी के साथ कीजियेगा।

बिगड़े०—हैं यह क्या, क्या तुम मेरी बीबी नहीं हो।

दिलन०—अजी तुम भी बड़े नालायक कमीने हो।

बिगड़े०—तौबा, मालूम नहीं तुम मुझे समझी क्या हो?

दिलन०—मैं तुम्हें नालायक, बेवकूफ, पागल, ऐयार वगैरह समझती हूं।

बिगड़े०—प्यारी! ज़रा समझो तो तुम किससे कह रही हो।

दिलन०—और किससे; तुम्हीं को।

बिगड़े०—अरी दीवानी बकती है। गालबन तुम्हें मुझपर किसी और का धोका हुआ है।

दिलन०—जी हां, एक मरतबा नहीं सैकड़ों दफा हुआ है।

बिगड़े०—अरे फिर वही दीवानों की सी बातें।

दिलन०—हाँ हाँ मैं जान चुकी हूं सब तुम्हारी घातें।

बिगड़े०—लाहौलबिला, इसका तो जुनूं बढ़ता ही चला।

दिलन०—जी सुनो, होशियार को दीवाना बनाने वाले हम तेरे दाम में नहीं अब कभी आने वाले।

गाना दिलनवाज़।

दाना को दीवाने बन कर आये हैं बहकाने। झांसा चकमा दे जाने, दिल को कबजे में लाने; आज खबर लूंगी मैं ठैरो बच्चा जी—न जानो भोली भाली, उस मेरी बालो, सुन पुरफन क्यों आया ज़क पाने। दा०—

बिगड़े०—ऐ प्यारी! खुदारा अपने आशिक को न तड़पाओ, लिल्लाह बात मानो; गले से लग जाओ।

दिलन०—यह भी ठीक! क्या मुझे कोई बेसवा मुकर्रर किया है अपने नज़दीक।

बिगड़े०—अरी ओ बेसवा, कैसी है नादान। तू तो मेरी शादी की बीबी है नाफरमान।

दिलन०—वाह रे ला उबाली! मैं तेरी बीबी हू या साली?

बिगड़े०—अरी तू भी अज़ब अकल से खाली है। एक ज़माना जानता है कि दिलनवाज मेरी बीबी और छलावा मेरी साली है।

दिलन०—क्या तू ज़ातशरीफ नहीं है? बदगौहर!

बिगड़े०—अरी कैसा जातशरीफ; मैं तो बिगड़ेदिल हूं तेरा शौहर।

दिलन०—उं थोड़ी देर पहिले तो रूह बनकर आया था, मरदूद और अब खुद बिगड़ेदिल बनकर हुआ है आ मौजूद।

बिगड़े०—तौबा, तौबा, प्यारी! कैसी रूह, शायद दीवानी हो गई है तू।

दिलन०—क्यों तू जाता नहीं इब्लीस, या बुला लाऊं पुलीस।

बिगड़े०—अरे नहीं; ठैर जा नेकबख्त।

दिलन०—नहीं; मैं एक लहजा भी न ठैरूंगी इस वक्त।

बिगड़े०—हाय! अब क्या करूं खुदाया, यह कैसी पलट गई काया, जो अपना हो गया पराया।

गाना।

दिलन०—जाओ जाओ किसी और को दो झांसे जनाब, दफा यहां से हो शिताब।

बिगड़े०—मैं तो न जाऊंगा।

दिलम०—होगा खराब नासवाब।

बिगड़े—करो न जानेमन एताब।

दिलन०—होले धोके ऐय्यारी में हो लाजवाब। करना हमसे छल बलियां। हर पल चंचल नट खट अजब बशर नजर आया। उल्लू कचुंबर निकल जायेगा; जा बे उल्लू कचुंबर निकल जायेगा॥ बन कर आया बिगड़े नवाब॥ जाओ०—

(दिलनवाज़ का जाना)

बिगड़े०—अफसोस ! आखिर चली गई। या इलाही ! यह कोई आदमी है या भूत। (ज़ातशरीफ का आना)

ज़ात०—ओहो, अब क्या है, मार लिया बाज़ी।

बिगड़े०—हैं यह क्या ?

ज़ात०—थोड़ी देर पहिले जब मैं बिगड़ेदिल की रूह बन कर आया।

बिगड़े०—बिगड़ेदिल की रूह ! तो क्या मैं मर गया था अबे उल्लू ?

ज़ात०—और दिलनवाज़ को बेदार करके उसके मर जाने का यकीन दिलाया।

बिगड़े०—लो; इस खब्बीस ने मेरे मरने का यकीन दिलाया।

ज़ात०—तो भोली दिलनवाज़ ने मुझे बेअख़्तियार गले लगाना चाहा।

बिड़ेग०—ओ बाप रे, उसने तुझे गले लगाना चाहा और मुझे घरसे ज़लील करके निकलवाना चाहा। कुछ समझ में नहीं आती है बात; कहीं यह मेरी जोरू का आशना तो नहीं है बदजात।

ज़ात०—और उसने जो मुझे गले लगाना चाहा था—वो शायद मेरा बोसा लेना चाहा था।

बिगड़े०—ओ बापरे, उसने तेरा बोसा लेना चाहा था, मगर कहीं तूने तो नहीं लिया।

ज़ात०—उस वक्त मेरे भी दिल में आया—

बिगड़े०—कि बोसा लेलो।

ज़ात०—कि नकाब चेहरे से उलट दूं और इस नाज़नीन के गोरे गोरे रुखसारों का बोसा लेलूं।

बिगड़े०—ओ बापरे।

ज़ात०—लेकिन दिल में यह खौफ था कि, जब वह सूरत देख पायेगी तो जरूर हज़रत ज़ातशरीफ को पहिचान जायेगी।

बिगड़े०—कौन ज़ातशरीफ ! तब तो समझा तेरी कारस्तानी हरीफ। ख़ैर; क्या मुज़ायका है बच्चा; मैं भी आन पहुँचा।

ज़ात०—ओहो ओहो, अब रात ज़्यादा होती है; बेहतर है मैं अपना काम शुरू करूं।

बिगड़े०—अब मैं भी जाके दिलनवाज़ के पलंग पर लेट रहता हूं।

ज़ात०—उठ; ऐ मेरी खुश नसीब बीबी ! उठ।

बिगड़े०—ओहो प्यारे, तुम आ गये।

ज़ात०—ओहो, अब तो मुझे अपना प्यारा कहके पुकारने लगी; लेकिन तू बिस्तर से क्यों नहीं उठ खड़ी होती।

बिगड़े०—प्यारे ! आज मेरा मिजाज कुछ ना दुरुस्त है; इसलिये तबीयत सुस्त है।

ज़ात०—बेशक यही बात होगी, प्यारी ! मैं तुम्हारी अलालत की ख़बर सुनकर बहुत मगमूम हुआ। घबराओ नहीं; घबराओ नहीं; बहुत जल्द पाओगी शफा।

बिगड़े०—बहुत अच्छा कब तक मुझसे भेद छिपाओगेबच्चा।

ज़ात०—सुन; मैं आज तुझसे अपनी आख़री वसीयत का जवाब सुनने आया हूं। बोल; तुझे ज़ातशरीफ से निकाह पढ़ाना मंजूर या ना मंजूर ?

बिगड़े०—प्यारे, मैं आपके हुक्म की तामील करूंगी जरूर।

ज़ात०—आहा हा ! ओहो हो मार लिया बाज़ी ।

बिगड़े०—मगर प्यारे ! हमारा निकाह कौन पढ़ायेगा।

ज़ात०—और कौन ? इस शहर का काज़ी ।

बिगड़े०—अफसोस, वह बिचारे खुद ही खुदा के घर सिधारे ।

ज़ात०—अरारा कम्बख़्त को कल ही मरना था। भला मेरी शादी तक तो सब्र करना था। ख़ैर क्या अन्देशा है, कल मैं आसमान से एक फरिश्ता दुनियां में भेज दूंगा, वह तुम्हारे घर आयेगा और दोनों का निकाह पढ़ायेगा।

बिगड़े०—(अपकट) अच्छा बच्चा; इसी तरह मेरी बीबी को भी हमेशा दम देता रहा होगा। (पूंकट) प्यारे! इसके सिवाय एक बात और भी है।

ज़ात०—वह क्या है ?

बिगड़े०—जब तक मुझे इस बीमारी से सेहत न होगी, शादी करने के लिये कैसे हिम्मत होगी।

ज़ात०—फिर सेहत की क्या तदबीर है।

बिगड़े०—तदबीर तो बहुत आसान है।

ज़ात०—वह क्या ?

बिगड़े०—सिर्फ तुम्हारे गोरे गोरे रुखसारों का एक बोसा।

ज़ात०--हैं ! कौन, बिगड़ेदिल !

बिगड़े०—हाँ; वही तेग हरीफ मुकाबिल।

ज़ात०—हाय ! हाय ! यह कैसी बरबादी।

बिगड़े०—शादी करो शादी।

ज़ात०—अरे कैसी शादी अब तो जान की है बरबादी। मैं तो समझा था कि कम्बख़्त दुनियाँ से ग़तरबूद हुआ मगर वह तो फिर आ मौजूद हुआ।

बिगड़े०—अरे छिप जा, छिप जा; पुलीस आ पहुँची पुलीस। (जमादार का आना)

जमादार—कहां है वह शाही चोर।

सिपाही पहिला—वह देखिये, इस तर्फ लुड़क रहा है हरामखोर।

जमा०—जल्द पकड़ लो; जाने न दो।

ज़ात०—अरे दीवानो—यह तुम किसे गिरफ़ार कर रहे हो।

सिपाही दूसरा—एक उल्लू के पट्ठे को।

दिलन०—हाय! हाय! मेरे बिगड़ेदिल, अब मैं तुझे कह पाऊंगी; अब किसको प्यार करूंगी।

ज़ात०—(अप्रगट) अब अगर मैं भी इससे प्यार मोहब्बत जताऊँगा तो ज़रूर बिगड़ेदिल के धोके में फांसी चढ़ जाऊँगा। (प्रकट) जमादार साहेब! आप इस दीवाने की बातों का ख्याल न कीजिये और खुदा के लिये मुझ गरीब को गिरफ़ार न कीजिये।

जमा०—तो क्या तुम इस औरत के शौहर नहीं हो?

ज़ात०—अजी जनाब! मैं तो ज़ातशरीफ हूं।

जमा०—अच्छा तो फिर यह औरत क्यों तुम्हारी गिरफ़ारी पर इज़हार मलाल करती है।

ज़ात०—अजी क़िब्ला, यह मुझे फँसाने के लिये चाल करती है।

जमा०—क्योंजी, यही यही तुम्हारे शौहर हैं?

दिलन०—जी हाँ।

जात०—हाय! हाय! अब तो मर गया।

सिपाही दूसरा—वाह बे नामर्द, मर्द होके मरने के नाम से डर गया।

जात०—ख़ैर भाई, मैं नामर्द ही सही; अगर तू मर्द है तो मेरे बदले फांसी पर चढ़ जा और मेरी जान बचा।

जमा०—सिपाही! ले चलो इस बदजात को।

जात०—अरे भाई कहां?

सिपाही पहिला—फाँसी खाँ की मुलाकात को।

जात०—हाय! हाय! अब तो सचमुच पड़ गये जान के लाले। अरी ओ दग़ाबाज़ दिलनवाज़! मुझे बचा लेः—

बन गई जान पै इस हार से तौबा तौबा।
लो मैं करता हूं तेरे प्यार से तौबा तौबा॥

छ०—हाँ हाँ, ठैर जाओ; ठैर जाओ।

ज़ात०—कौन मेरी प्यारी छलावा! अरे मुझे बचा; मेरी जान छुड़ा।

छ०—मगर पहिले यह तो बता शरीर! कि तू यहां क्या करने आया था।

ज़ात०—जूतियां खाने के लिये और किस लिये।

छ०—मुये यह नहीं कहता कि बिगड़ेदिल की रूह बन के दिलनवाज को बहकाने आया था और इससे शादी रचाने आया था।

ज़ात०—तौबा, तौबा; जितनी मुझे सच बोलने की आदत है; उतनी तुझे झूठ बोलने की आदत है।

छ०—हट मुये झूठे, तुझपर आसमान टूटे।

जात०—हाय! हाय! करम फूटे।

छ०—जमादार साहेब! इस बदमाश को छोड़ दीजिये; यह तो मेरा शौहर है।

जमा०—क्या खबर है पहरेवाला।

सिपाही तीसरा—ऐ अफसरे आला! अभी अभी यह हुक्मनामा शाहज़माँ के पास से आया है जिसमें गज़न्फर बादशाह ने बिगड़ेदिल की गिरफ़ारी का हुक्म मनसूख़ फरमाया है।

जमा०—बहुत मुनासिब।

बिगड़े०—खुदाया शुक्र तेरा।

दिलन०—खुदाया हज़ार हज़ार शुक्र तेरा कि, तूने इस दिल मलूल की दुआ कुबूल की, मगर नहीं मालूम मेरा बिगड़ेदिल प्यारा किस वादये. गुरबत में होगा आवारा। काश उसका कुछ पता मिलता तो मेरा गुंचये उम्मीद खिल जाता।

बिगड़े०—लो प्यारी! अब तो हुआ ग़म बातिल।

दिलन०—कौन मेरा प्यारा बिगड़ेदिल!

गाना।

दिलनवाज़—कहर थी जाने जा आफत थी जुदाई तेरी। शुक्र अल्लाह ने फिर शक्ल दिखाई तेरी। प्यारा प्यारा हमारा मिला आन के, खैंच लाई मेरी तुम्हे चाहत सँवरिया पर वारू जिगरवा॥ कहर थी०—

अंक दूसरा। सीन पांचवां।

खेमा गजन्फर।

गजन्०—या बारीताला, क्या वह एक सांप का बच्चा था जिसको मैंने आस्तीन में पाला; क्या वह एक कांटों का दरख़्त था जिसको मैंने खून जिगर से सींचा; क्या वह एक खूबसूरत खंजर था जो मेरे भाई के हलक पर चला; क्या

वह एक सल्तनत का चिराग़ था जिसकी हसरत से मेरा घर जला और वह उसके दामफरेब में आ ज़िंदान में भेजवाया गया, जहाँ उसे कुछ दिनों के बाद कत्ल का खौफनाक हुक्म सुनाया गया। ओफ ! ओ ज़र्रार बदएतबार ! जिस कूएँ ने तुझे मीठा पानी पिलाया उसी में तूने ज़हर मिलाया। जिसने निशाना अन्दाज़ी सिखाई उसी पर तूने तीर चलाया।

हुस्नपरवर—या खुदाया ! इस फूल से चेहरे पर क्यों उदासी छाई हुई है। क्या कोई ख़बर बद तो रूम से नहीं आई हुई है:—

ना तवाँ हूँ ऐ फलक देख सताना ना मुझे।
आप मैं शमये सहर हूँ तू बुझाना ना मुझे॥

गजन०—ओफ ! दिल में आता है कि इसी वक्त रूम रवाना हो जाऊं और कातिल बदशआर से अपने बेगुनाह भाई का इन्तेकाम लूं। लेकिन अफसोस ! जब रह रह के हुस्नपरवर का ख़्याल आता है तो सख्त इनफआल होता है।

हुस्न०—हैं हैं ! क्या मेरे प्यारे भाई का ज़िक्र है !

गज़न०—हाँ; मुझे उसी की फिक्र है।

हुस्न०—ऐ शाह !मेरे भाई ने ऐसा क्या किया गुनाह ?

गज़न०—गुनाह, ऐ रश्केमाह ! लो यह तहरीर पढ़ो। आह दिलेर था, वह शेर था, फरेब से मारा गया, दगा से उसका सर उतारा गया। काश वह अपनी मौत से मरता या किसी लड़ाई में दुश्मन से शिकस्त खाकर गिरता; जब भी मैं खुशीके साथ सब्र करता।

हुस्न०—अफसोस, ऐ भाई ! तूने अपने बुज़ुर्गों की नेक-नामी को ख़ाक में मिला दिया। उनकी टूटी हुई कबरों को

हिला दिया। क़यामत की नींद सोनेवालों को फरियादों की सदायसूर से जगा दिया।

गज़न्०—और एक इन्हीं कुश्तगान हिर्स को नहीं जगा दिया है बल्कि उसने एक गज़बनाक शेर को चौंका दिया है। अब इसे उसी में गिरने के लिये तैयार रहना चाहिये जो कुंआ इसने औरों के लिये खुदवाया है।

हुस्न०—आह! नहीं नहीं।

गज़न्०—मगर हाँ, तेरा भाई अगर मुझ से इन्तक़ाम ले या मैं उससे अपने भाई का एवज लूं, फिर चाहे वह कत्ल हो या मैं; लेकिन इन हर दो हालत में इस खौफनाक नतीजे का ख़मियाज़ा तुम ही को उठाना पड़ेगा।

हुस्न०—या खुदा, क्या यह पोशाक उरूसी मातमी लिबास में बदल जाने वाली है और मेरी प्यारी उम्मीद जिसको मैंने बरसों अपने इन्तजार की गोद में पाला है वह ख़ाक व ख़ून में मिल जाने वाली है। क्या मैं अपने अज़ीज शौहर को कत्ल होते देख सकती हूं या अपने प्यारे भाई को तख्तये मौत पर सोते हुए देख सकती हूं? नहीं; नहीं; हरगिज नहीं:—

कत्ल इन दोनों का क्योंकर हो गँवारा मुझको।
भाई प्यारा नहीं या यह नहीं प्यारा मुझको॥

आह, मैं इन दोनों की जान बचाने को अपनी जान अजीज निसार करूंगी। आह, मैं रूम जाऊंगी, भाई को समझाऊंगी; और उसके कीने की आग को अपने लोहू के पानी से बुझाऊंगी।

गज़न०—हाँ; मैं भी यही चाहता हूं कि, यह निफाक़ इत्तेफाक से बदल जाये; सहूलियत से काम निकल आये। मगर ऐ नाज़नीन! मुझे यह उम्मीद नहीं कि वह तेरी फरियाद गोशये दिल से सुनेगा और मेरा दोस्त बनेगा। क्योंकि:—

हुआ जब दिल शिकस्ता फिर सफाई गैर मुमकिन है।
गिरह पड़ जाती है जिस वक्त धागा तोड़ कर जोड़ा॥

हुस्न०—नहीं नहीं; मेरा प्यारा भाई जरूर अपनी दुखिया बहिन की फरियाद सुनेगा और उसकी दाद को पहुँचेगा:—

गो वह नादान है दीवाना है सौदायी है।
फिर भी, मैं उसकी बहिन हू वह मेरा भाई है॥

अजीज शौहर, यह दिल शिकस्ता जाती है और अपनी किस्मत को आज़माती है।

गज़न्०—जा; खुदा तेरी कोशिशों में बरक़त दे और तुझे कामयाब करे।

हुस्न०—या खुदा! तू ही इस बेकस गमगीन लड़की का मददगार हो और मेरी ज़बान को मेकनातीसी ताकत अता फरमा ताकि मैं अपने भाई के लोहे जैसे दिल को अपनी तरफ खींच सकूं। या खुदा! तू मुझे उसके सख्त दिल के जहाज़ का नाखुदा बना कि, मैं उसके जहाज का सुकान सलामती के रास्ते पर फेर दूं।

(हुस्नपरवर का जाना; गज़न्फर का सोते हुए नज़र आना; दिलफरेब और कासिद का आना)

दिल०—ओ हो, आप आराम फरमाते हैं।

गज़न्०—ओ प्यारी हुस्नपरवर!

दिल०—चल के सुनूं तो यह क्या बड़बड़ाते हैं।

गज़न्०—प्यारी हुस्नपरवर, ज्यादा न तड़पा अपनी अबरू से बल दूर कर। क्या अब तक नहीं गुस्सा उतरा। क्या दिलफरेब कोई ग़ैर है जो तुझे उससे बैर है।

दिल०—शायद इनकी नई बीबी से बातें हो रही हैं; मगर यह इन्हों ने क्या कहा ? दिलफरेब कोई ग़ैर है जो उससे तुझे बैर है। शायद उसके आगे मेरी मोहब्बत जताई होगी तो उसने गुस्से से नाक भौं चढ़ाई होगी; कुछ सख्त सुस्त मेरी शान में सुनाई होगी। वाह, यह गिलहरी तो आते ही रंग लाई।

गज़न्०—अफसोस ! अगर तेरी जगह दिलफरेब होती तो मेरी बात सुन लेती।

दिल०—क्यों नहीं हुजूर, जरूर।

गज़न्०—अगर तेरी यही मर्जी है तो मैं दिलफरेब को छोड़ दूंगा। हैं, कौन दिलफरेब ! (जाग कर) यावारी ! यह आलम ख्वाब है या बेदारी ? नहीं नहीं, मैं तो जीता जागता हूं और मिश्र की माहेनौ को जलवागर अपने पास देखता हूं। ओहो ओहो, गज़न्फर ! तूभी कितना खुशनसीब है कि जिसको तू ख्वाब में यहां मौजूद समझता था वह अब बेदारी में भी तेरे करीब है।

दिल०—नहीं नहीं; ठैरो; क्या वह इकरार भूल गये या सब वादे फ़ज़ूल गये।

गज़न्०—प्यारी ! कौनसे वादे।

दिल०—और कौनसे; दिलफरेब को छोड़ देने के।

गज़न्०—मगर प्यारी ! वह तो ख़्वाब की थीं बातें सारी।

दिल०—वह ख़्वाब की बातें थीं या मेरी जान लेने की बातें थीं। ख़ैर; मैं भी आप के पास इस लिये आई हूं कि, आप का दीदार देख लूं और आप के कदमों पर जान दे दूं:—

दे दिया जब हमने अपना दिल तुझे।
जान भी देते हैं ले कातिल तुझे॥

गज़न्०—नहीं नहीं; रहम कर। खुदारा मैं अपने दिल से तौबा करता हूं और अपने गुनाहों की माफी चाहता हूं।

दिल०—तो क्या आप मेरे साथ मिश्र तक चले चलेंगे?

गज़न्०—अरी दीवानी! एक मिश्र क्या है, अगर तेरी मर्जी हो तो मैं बेहिश्त को छोड़ कर जहन्नम में भी चलने को तैयार हूं।

दिल०—देखिये कहीं यह भी न ख़्वाब की बातें हो जायें।

गज़न्०—क्या मजाल। लो यह कौल का हाथ।

गाना दिलफरेब।

यार जानी को पाया करार दिल को आया,
अरमान दिलबर आया, करू रग रेलियां।
था खिजां से दिल फिग़ार, आई मौसिमें बहार॥
यार जानी०—

आके बादे सबा ने वतन से, ले उड़ी निगहते गुल चमन से; लूटे ऐश चलके मकाँ, हर बेलियां॥
यार जानी०—

अंक दूसरा। सीन छठा।

महल जातशरीफ।

गाना छलावा।

क्या आन बान तेरी है बाँके सांवरिया,
दिल को लुभाये रे ऐसी सुरतिया,
क्या प्यारी प्यारी बातें मारी,
जादू भरी प्यार की नजरिया,
लासानी जवानी जानी तेरी जिन्दगानी तेरी,
दिलो जान और ईमान तुझ पर कुरबान,
पार इश्क की जिगर के मेरे हो गई कटरिया॥
क्या आन०—

ज़ात०—छलावा?

मुश्ताक—यह कौन?

छ०—मेरा शौहर।

मु०—ओ बापरे।

ज़ात०—अरी छलावा! दरवाज़ा खोल।

मु०—हाय हाय! प्यारी अब क्या करूं तदबीर रुस्तगारी।

ख्वाजासरा—अरे लोगो! कहीं मुझे छिपाओ, मेरी जान बचाओ; उई अल्लाह! मैं मुई।

मु०—चुप बे मरदूद।

छ०—हाय हाय! अब क्या तदबीर लड़ाऊं, कहां अपने प्यारे को छिपाऊँ। हाँ; खूब याद आया। तुम हथियार के

संदूक में छिप जाओ और तू इसी कोने में खड़ा हो जा। ज्योंही वह अन्दर आवे, तू बाहर निकल जाना।

(छलावा का दरवाजा खोलना)

मियां! तुम तो जब कभी आते हो एकसां उल्लू की तरह चले आते हो।

ज़ात०—अरी उल्लू की लुगाई! पहिले यह तो बता कि, घर में घसर घसर बातों की आवाज कैसी आ रही थी

छ०—वह तो मैं गा रही थी।

ज़ात०—गा रही थी; किसके फिराक़ में।

छ०—फिराक़ मुश्ताक में।

मु०—हाय हाय मेरी खाला! यह क्या करती है घोटाला।

ज़ात०—मुश्ताक कौन; उल्लू की दुम।

छ०—और कौन तुम।

ज़ात०—खैर; फिर आइन्दा मेरे फिराक़ में कभी न गाना। जब मैं घर आऊं तब मेरे फिराक में जितना चाहना उतना गाना। समझी? जा अब दस्तरख़ान बिछा और खाना निकाल। हाँ, नहीं ठैर, भला सालन क्या बनाया है?

छ०—अजी सालन कैसा? कल जो दाल रोटी पकाई थी वह ज्यों की त्यों धरी रखी है।

ज़ात०—हाय हाय! यह कैसी सत्यानाशी; कम्बख़्त रोटी भी सूखी और दाल भी है तो बासी। अब मैं इस बकरे को काट कर मजेदार कुरमा बनाऊँगा।

छ०—(अप्रगट) बचाना परवर दिगार। बकरा काटने का हथियार तो उसी संदूक में है, जिसमें मेरा छिपा है दिलदार।

मु०—हाय हाय! यह क्या आफत।

छु०—प्यारे! इस वक्त इस गरीब बकरे को मारने से हाथ उठाओ। बिलफेल जो दाल रोटी तैयार है खाके चले जाओ।

जात०—नहीं; मैं एक न मानूंगा; मैं जरूर बकरा काटूंगा।

छु०—हाय हाय! कैसे बदजात से पड़ा पाला, अब क्या करूं बारीताला।

मु०—हाय हाय छलावा, तेरी उल्फत ने मुझे किस आफत में डाला।

ज़ात०—कहां है वह मेरा बकरा हलाल करने का आला? हाँ, इसी सन्दूक में है। हैं! यह कौन संदूक में छिपा बैठा है रिज़ाला। बोल, ओ मरदूद! तू कौन है और यों छिप कर बैठने से तेरा क्या मकसद है?

मु०—ओ बेवकूफ! तू मुझे नहीं जानता, मैं कौन हूं फैलसूफ।

ज़ात०—अरे, फिर अपना नाम बता?

मु०—मल्कुलमौत।

ज़ात०—ओ बापरे; मल्कुलमौत! इसका तो हमारे घर में आना अच्छा नहीं। अरे फिर भाई तू क्यों आया, तुझे किसने बुलाया?

मु०—और किसने? तूने।

ज़ात०—तौबा तौबा; मैंने तुझे कब बुलाया है। कम्बख्त फरिश्ता होके झूठ बोलता है?

मु०—सुन; ओ नादान! जब तूने बकरा काटने का इरादा किया तो मैं भी इसकी रूह कब्ज़ करने को यहां पहुँच गया।

ज़ात०—ओहो, और जो मैं बकरा न हलाल करूं इस आन।

मु०—तो अभी चला जाऊंगा छोड़ कर तेरा मकान।

ज़ात०—तो भाई, मैं बकरा काटने से बाज़ आया। ले जाइये अपनी तशरीफ का बधना बोरिया।

मु०—बहुत अच्छा; टली बला।

छु०—(अप्रकट) वाह वाह मेरा प्यारा मुश्ताक फन ऐय्यारी में है खूब मुश्ताक। (प्रकट) प्यारे! मैं तो इसको देखते ही जान से गुजर गई थी।

ज़ात०—और मेरी तो नानी ही मर गई थी।

छु०—चलो ख़ैर, खूबी से बात टली।

ज़ात०—और क्या; दुबारा ज़िंदगी मिली। पर यह अपने को कम्बख्त मल्कुलमौत जताता है। लेकिन इसमें तो इन्सान का ज़हूर पाया जाता है। यह कम्बख्त कहीं झूठ मूठ मल्कुल-मौत बनके तो न आया हो। जिस तरह कि मैं बना करता था रूह। अजी जनाब मल्कुलमौत साहेब! अजी हज़रत मल्कुलमौत साहेब!

मु०—क्यों क्या कहना चाहता है?

ज़ात०—जरा यहां तशरीफ लाइये। जनाब मैं यह पूछता हूं कि तुम आदमी हो या फरिश्ते?

मु०—अबे कहीं आदमी भी मल्कुलमौत बना है; उल्लू की दुम!

ज़ात०—क्यों नहीं।

मु०—वह कैसे।

ज़ात०—जैसे कि तुम।

मु०—(अप्रकट) अरारा, कहीं इस पर मेरा राज़ तो जाहिर नहीं हो गया।

ज़ात०—और तेरे रहने का मकान है कहां?

मु०—और कहां, बालाय आसमान।

ज़ात०—मरदूद ! मुझे धोका तो नहीं देता है।

मु०—यह कम्बख्त मेरा इम्तेहान क्यों लेता है।

ज़ात०—अच्छा यह तो बता, तेरी मौत कब आयेगी ?

मु०—जब दुनियां में क़यामत आयेगी।

ज़ात०—अगर मैं तुझे बिलफरज़ तलवार से मारूं तो तू मरेगा तो नहीं ?

मु०—(अप्रकट) कम्बख्त दिल्लगी दिल्लगी में मुझे मार न डाले। (प्रकट) कभी नहीं; मैं कभी न मरूंगा।

ज़ात०—यह बात है, तो ठैर जा; मैं अभी तलवार लेके आता हूं।

छ०—ओ प्यारे ! यही मौका है जान बचाने का।

मु०—और मेरा भी मन्शा है भाग जाने का।

ज़ात०—अरे, हां हां ठैर ठैर कहां भागा जाता है। फरेब ! धोका ! ऐय्यारी ! दग़ाबाज़ी !

छ०—फरेब ! धोका ! ऐय्यारी ! दग़ाबाज़ी ! आखिर यह फरेब किया किसने ?

ज़ात०—इस इब्लीस ने; खब्बीस ने।

छ०—यानी ?

ज़ात०—यानी वह तेरा आशना था; और तूने उसको मेरे ख़ौफ से संदूक में छिपा रखा था।

छ०—मियां तुम तो हवा से लड़ते हो, खामख़्वाही गले से पड़ते हो।

ज़ात०—बस ज्यादा बातें न कर। मुझे उल्लू बनाने की घातें न कर। अब मैं तेरी पुरफरेब बातों में आने का नहीं, और यह शुबहा किसी तरह से मेरे दिल से जाने का नहीं।

छ०—ख़ैर; न जाइये, न जाइये; मेरी बला से न जाइये ।

ज़ात०—ओफ रे तेरी ढिठाई ! अच्छा ठैर ओ नासजाई ! मैं अभी कर लेता हूं तेरा बंदोबस्त ।

छ०—मेरा बंदोबस्त तो हो रहेगा, मगर आप पहिले दिमाग़शरीफ तो कीजिये दुरुस्त ।

ज़ात०—क्यों, क्या तू मुझे समझती है पागल ।

छ०—बल्कि पागल से भी डबल ।

ज़ात०—वह कैसे ?

छ०—सुन, ओ बद्गौहर ! अगर तू पागल न होता तो एक पाकदामन औरत की असमत को यों न खोता ।

ज़ात०—क्या मैंने तेरी असमत खोई है ?

छ०—हाँ; तूने ही मेरी असमत की नाव डुबोई है ।

ज़ात०—वह क्योंकर ?

छ०—सुन, ओ बद्गौहर ! अगर तेरा दिल ग़ैर औरत का दिलदादा न होता तो कभी आज मेरा यह दिल यों बदकारी पर आमदा न होता ।

ज़ात०—अरे, यह तो उलटी आँतें गले पड़ीं । अच्छा अच्छा ठैर तो मुर्दार, मैं क्या करता हूं तेरा हाल ।

छ०—जैसे वही तो है शहर का कोतवाल ।

ज़ात०—चल इधर आ; बैठ जा; खबरदार ओ नाकारा; अगर ज़रा भी पुकारा तो मारते मारते दम ले लूंगा तेरा ।

(छलावा का हाथ पैर बांध कर सो जाता है)

छ०—जबरदस्त मारे और रोने भी न दे । अब जान बचे तो कैसे ?

ख्वाजासरा—न इधर न उधर फिर छलावा गई किधर ? हैं; यह कौन ? अरारा बीबी यह क्या ।

(छलावा अपनी जगह पर ख्वाजासरा को बैठा देती है)

छ०—चुप चुप; अभी बातों का मौका नहीं है'।

ख्वाजा०—मगर देखो बीबी ! ज़रा जल्दी आना; कहीं देर न लगाना; मुझे कहीं आफत में न फँसाना ।

छ०—नहीं नहीं; तू खातिर जमा रख ।

ख़्वाजा०—या अल्लाह ! मैं किस बला में फँसी ।

ज़ात०—लाहोलबिला, मुरदार मुझे सोने ही नहीं देती है; चिल्ला चिल्ला कर महल्ला सर पर उठा लेती है । जब तक इसको कोई काफी सज़ा न दी जायगी तो यह चिल्ला चिल्ला कर मेरा भेजा खा जायगी । हां; अब इस छुरी से क़बीह की नाक ही उड़ा दूं फिर आराम से सो रहूं ।

ख्वाजा०—उई, हाय बीबी ! मेरी नाक गई ।

छ०—(आकर) हैं, किसने काटा ?

ख्वाजा०—वही तुम्हारा शौहर उल्लू का पट्ठा । हाय मेरी प्यारी नाक, अब मैं तुझे कहां पाऊँगी ।

छ०—बस बस, अब रोना पीटना लाहासिल है ।

ख्वाज़ा०—बस बीबी ! अब से मैं तुम्हें और तुम्हारे घर को आखिरी सलाम करती हूं और घर जाके इसे बेहया ज़िन्दगी का झगड़ा तमाम करती हूं । उं उं उं उं—(जाती है)

छ०—अच्छा हुआ जो इस नकटी की नाक कटी, जिसके कट जाने से मेरी मुसीबत घटी । अब वह फिकरा जोड़ूं कि मियां को अपने पैर पड़वा के छोड़ूं । आलमुलग़ैब ! यह सितम रसीदा बिलकुल बेगुनाह और बेऐब है । अगर मैं शौहर की निगाह में बदकार हूं मगर तेरी नज़र में पाकदामनों की सरदार हूं ।

ज़ात०—यह बदकार अपने को समझती है पाकदामनों की सरदार।

छ०—ऐ भेदों के जानने वाले, अगर मेरा दामन असमत है पाक, तो मुझे अपनी नाक कटने पर न करना चाहिए अफसोस। तू ज़रूर इस बेगुनाह की दुआ कुबूल करेगा और मेरी नाक मुझे दुबारा अता फरमायेगा।

ज़ात०—अरी ओ कहबा! अगर तू हजार बरस करेगी तौबा तब भी अल्लाह मियां तुझे नाक न देंगे।

छ०—आह तेरी कुदरत पे निसार जाऊं हज़ार बार, ऐ खुदाय पाक! मिल गई मुझे मेरी नाक।

ज़ात०—यह क्या बकती है सफ़्फ़ाक! ज़रा मैं भी तो देखूं यह क्या मामिला है। मुदीर ने कहीं झूठ मूठ फिकरा तो नहीं चलाया है। (देख कर) या इलाही! अजब तेरा मामिला है अजब तेरी कुदरत कामिला है। अब अगर इस पर भी मैं अपनी बीबी को बदकार समझूंगा तो ज़रूर तेरा खतावार ठैरूंगा। ऐ मेरी नेक असमत बीबी! मैं किस मुंह से बयान करूं तेरी खूबी। अच्छा, जब तक तेरे पास आऊँगा तब तक तेरे पैर धोके पीऊँगा और तेरे जानू पर अपना सर रख कर तेरी परस्तिश किया करूंगा।

छ०—सच कहना, कैसा फरेब दिखाया।

अंक दूसरा। सीन सातवां।

जंगल।

सब डाकू—शिकार, शिकार।

पहिला डाकू—वह हो रहा है फरार।

यू०—अफसोस! तीर के जद से निकल गया।

दूसरा डाकू—कम्बख़्त गिरते गिरते सँभल गया।

यूसुफ—अरे ठैरो, शिकार का तो महज़ एक बहाना है; मुझे तो किसी तरह अपना दिलेमजरूह बहलाना है।

तीसरा डाकू—ऐ अफसरे आला! हमारा सरदार तो आपको मिस्ल हकीकी बेटे के किया करता है प्यार, मगर नहीं मालूम वह कौन सा ऐसा सबब है जिससे आप रहा करते हैं हमेशा मग़मूम।

यू०—ऐ ग़ारतगरो! गौर करो, शाही महलों में जो हमेशा रहा करते थे; ऐश व इशरत में बसर उमर किया करते थे; न वह सामान ही रहा, न वह बात ही रही। रहज़नी करने पर अपनी गुजर अवकात रही। हाँ हाँ हो जाओ खबरदार; वह आ रहा है शिकार।

रजापाशा—जिधर रब उधर सबः—

लाख दुश्मन हो जबरदस्त तो क्या होता है।
वही होता है जो मन्जूर खुदा होता है॥

यू०—हैं कौन; क्या मेरे चचा रजा नामदार?

डाकू पहिला—हाँ; कर लो बढ़ के गिरफ़्तार।

यू०—खबरदार।

रज़ा०—या इलाही! क्या यह मरहूम शहज़ादे यूसुफ की रूह तो नहीं बोल रही है।

यू०—हाँ ऐ प्यारे चचा जान! यह वही कुश्तये जफा की तसवीर अपनी ज़बान खोल रही है।

रज़ा०—आहा कौन, यूसुफ! क्या मैंने तुम्हें दुबारा इस दुनियां में पा लिया?

यू०—हाँ पा लिया। मगर इस जंगल में आपका कैसे हुआ आना? क्या आप पर भी इस ज़र्रार बद्एतबार ने जुल्म किया?

रज़ा०—हाँ; उस सितमशआर के जाने से मेरी रिश्तये-हयात को तोड़ देने का जिसको फरमान मिला, वह एक जल्लाद की शकल में रहमत का फरिश्ता निकला; जिसने मुझे ज़िंदा छोड़ दिया; मेरी टूटी हुई आस को जोड़ दिया।

यू०—ऐ प्यारे चचाजान ! जिस तरह खुदा ने आपकी जान बचाई, उसी तरह मुझे भी खुशामद के पन्जे से रिहाई दिलवाई।

रज़ा०—मगर तुमने यह रहज़नी का पेशा कब से इख्तियार किया ?

यू०—जब मैं रूम से अपनी जान लेकर जंगल की तरफ भागा तो इत्तफाक से इन्हीं डाकुओं के सरदार से राह में मुलाक़ात हो गई।

रज़ा०—खैर; चलो हम भी तुम्हारे नेक सरदार से मुलाकात करेंगे और जब तक दुश्मन पर क़ाबू पाने का मौका न मिले,हम भी उसी पेशे से अपनी गुजर अवकात करेंगे।

अंक दूसरा। सीन आठवां।

आराम बाग।

ज़र्रार—अजब था आज का जल्सा।

खुशामद—आहा हा, ओहो हो।

ज़र्रा०—न देखा और सुना ऐसा।

खु०—आहा हा, ओहो हो।

ज़र्रा०—ला ला साक़िया दे शराब पुर्तगाली; तौबा को जलाने वाली:—

मय की तलछट भी अगर शीशे में बाकी रह जाय।
हौसला बाद कशों का मेरे साक़ी रह जाय॥

साक़िन—नहीं नहीं।

ज़र्रा०—क्यों नहीं।

साकिन—आज आपने बहुत पी है।

ज़र्रा०—तू गलत कहती है। मैंने बिलकुल थोड़ी सी पी है।

खु०—जी, बजा; मैंने तो पी भी नहीं।

करामत—जी हां, मैंने छूई भी नहीं।

ज़र्रा०—अगर मैं थोड़ी सी न पिये होता तो यों पहाड़ की तरह बेहिस व हरक़त न खड़ा होता।

खु०—इस दीवानी दुनियां में भी हैं दो चीज़ें लासानी।

साक़िन—वह कौन कौनसी ?

खु०—एक तो मौसिम जवानी। और दूसरी यह शराब अरगवानी।

ज़र्रा०—ऐ आसमान के फरिश्तो; अगर आज तुमने मेरे नामयेआमाल को गुनाहों से काला किया तो याद रखना बहुत बुरी ठैरेगी, हमसे जान बचाना मुश्किल पड़ेगी:—

गो खड़े इस वक्त हैं हम खाक़ पर।
पर दिमाग़ अपना है हफ़्त अफलाक़ पर॥

खु०—बहुत बराबर।

ज़र्रा०—मियां करामत खां ! कुछ करामत दिखाओ, कोई दिलचस्प गाना सुनाओ ?

गाना।

बहार आई चमन में साक़िया उठे मजेमुल के।
सुबूये गुल में भरकर मय लगादे लब से बुलबुल के॥

ज़र्रार— चले दौर मय लालाफाम साक़िया,
तेरे मयखाने की खैर मनावें शुबहो शाम।

करामत—यह आबे ज़िन्दगानी है, कलीदे शाद-मानी है, निहाले कामरानी है बहार नौजवानी है

सब—वाह वा वाह वा॥ बहार आई है०—

(हुस्नपरवर का आना)

हुस्नपरवर—हाय भाई।

ज़र्रा०—कौन मेरी माँ जाई? क्यों आई; कब आई; क्या जरूरत खैंच लाई।

हुस्न०—जरूरत! तो क्या तू जरूरत से आगाह नहीं!

ज़र्रा०—वल्लाह।

हुस्न०—जरूरत! तो क्या तूने रज़ापाशा को कत्ल नहीं कराया?

ज़र्रा०—झूठ; सरासर बोहतान।

हुस्न०—नहीं नहीं; तूने ही इसको मारा है।

ज़र्रा०—इसका क्या सुबूत है?

हुस्न०—यह तहरीर मौजूद है।

ज़र्रा०—झूठ है; गलत है; कम्बख्त ने मरते मरते भी चालाकी की।

हुस्न०—ऐ भाई! अपनी दुखिया बहिन की हालत पर रहम फरमाओ और अपने गुनाहों से तौबा कर और खुदा से शर्म।

खु०—मगर मेरे आक़ा ने गुनाह ही कौन सा किया है जिसकी आप तौबा करवाना चाहती हैं।

ज़र्रा०—हां; अगर मैं ऐसाही गुनाह करने पर दिलेर होता तो कभी तेरे शौहर को जान से खोता।

खु०—हां बेशक।

हुस्न०—चुप; ओ रू स्याह गुनहगार! तू मेरे भाई को शैतान बन कर बहकाता है और मेरे शौहर को मार डालने की तदबीर बताता है। क्या तू नहीं जानता है कि वह कौन है।

खु०—कौन है?

हुस्न०—मेरे जी का मालिक, मेरे सर का ताज, मेरा प्यारा खाविंद।

ज़र्रा०—और अपनी बीबी का क़ातिल।

हुस्न०—हाय!

ज़र्रा०—ओ नादान! तू भी उस दग़ाबाज की मोहब्बत पर एतमाद न कर; अपनी जान की दुश्मन न बनः—

फैज पाने की न रख दुश्मन से आस।
आब आहन से कहीं बुझती है प्यास॥

हुस्न०—तो क्या इसका मोहब्बत करने वाला दिल मुझसे फिर जायगा?

ज़र्रा०—बेशक।

हुस्न०—ऐ भाई! जब कि तू यह खूब जानता था कि मेरा शौहर ऐसा संगदिल सितमगार है और उसका दिल दिल-फरेब की मोहब्बत में गिरफ़ार है, तो फिर तूने क्यों ऐसे को मुझे ब्याह दिया। किस लिये मेरी प्यारी जिंदगी को तबाह किया।

ज़र्रा०—आह, मैंने बड़ी ख़ता की; बड़ा गुनाह किया।

हुस्न०—मगर मैं खूब जानती हूं कि तूने मेरी किसलिये कुरबानी दी।

ज़र्रा०—किस लिये ?

हुस्न०—सिर्फ एक मुट्ठी भर ख़ाक के लिये; अपनी गर्ज निकालने के लिये; दोस्ती के परदे में दुश्मनी की बुनियाद डालने के लियेः—

आह, भाइयों ने की बुराई थी फक़त यूसुफ के साथ।
और तूने की बुराई अपने सारे कुफ़ के साथ॥

(सिपाही का आना)

ज़र्रा०—क्या है ?

सिपाही—शाह गज़न्फर की छावनी से एक दरबान आया है।

ज़र्रा०—बुलाओ क्या ख़बर लाया है। (दरबान का आना)

दरबान—आलीजाह ! गज़न्फर बादशाह मिश्र को रवाना हो गये।

हुस्न०—ओफ़ ! किस ग़ारतगरेशकेब के साथ ?

दरबान—मलकए दिलफरेब के साथ।

ज़र्रा०—हाँ; यह बात तो पहिले ही मेरे ध्यान में आई थी। इसी लिये मैंने सब फरेब की बाज़ी बिछाई थी। हाँ; अब वह वक्त करीब आ गया कि मैं अपने दुश्मन से खुलम्खुल्ला इन्तकाम लूं।

हुस्न०—हाय ! यह बदनसीब अब तक जीती है।

ज़र्रा०—हाँ हाँ।

हुस्न०—क्यों किस लिये ?

ज़र्रा०—अपने ज़ालिम शौहर से इन्तकाम लेने के लिये।

हुस्न०—नहीं नहीं।

ज़र्रा०—क्यों नहींः—

क्या तेरे शौहर ने तुझसे बेवफाई की नहीं ।
जुल्मरानी और फरेब और कजअदाई की नहीं ॥
तुझको करने के लिये बरबाद रुसवा ख़ारोजार ।
उस रकीबे रूसियाह से आशनाई की नहीं ॥

कोई है ?

खुशामद व करामत—हुक्म ?

ज़र्रा०—जाओ फौज़ को लड़ाई के लिये तैयार करो। हमारे हुक्म से सब को ख़बरदार करो । जाओ फौरन् जाओ ।

हुस्न०—नहीं नहीं; ठैरो; मुझ पर रहम करोः—

जितना जी चाहे सता लो, मुझे बरबाद करो ।
पर न शौहर को मेरे कुश्तये बेदाद करो ॥

ज़र्रा०—नहीं; मैं हरगिज़ न मानूंगा। मैं उससे जँवामर्दी के साथ लड़ूंगा । उसकी फौज़ को घोड़ों की टांगों से रौंद डालूंगा और उसके लश्कर की सफे आहनी पहाड़ होने पर भी तोड़ डालूंगा । अपनी अज़दर जैसी तलवार से ख़ून का दरिया बहा दूंगा; जहाँ में क़यामत मचा दूंगा ।

हुस्न०—आह ! नहीं नहीं; ऐ जर्रार !

ज़र्रा०—चल दूर हो मुर्दार ।

हुस्न०—मैं तेरे पैर पड़ती हूं; आजिज़ी करती हूं ।

ज़र्रा०—ओ नादान ! तू आग की भट्टी का मुंह मोम से बन्द करना चाहती है; आफताब को छलनी से ढाँपना चाहती है।

हुस्न०—आह, ओ ज़ालिम ! अगर मैं तेरे बदले एक पत्थर से इल्तेजा करती तो पत्थर को भी रहम आ जाता मगर

अफसोस है कि तू इन्सान होकर मेरी हालत पर रहम नहीं खाता।

ज़र्रा०—ओ नादान! क्या एक जालिम नाग पर रहम करूं; जलाने वाली आग पर रहम करूं:—

रहम की मुझसे उम्मीदो जुस्तजू अच्छी नहीं।
खुश्क डाली से समर की आरजू अच्छी नहीं॥

हुस्न०—आह, ओ ज़ालिम! अगर मैं पहिले ही से तेरी कीनावर तबियत को जान जाती तो कभी तेरे पास अपनी हाजत न लाती। ज़हर खाके सो जाती, या गर्क दरिया हो जाती। आह; अब क्या सूरत लेकर अपने शौहर के पास जाऊं और कौन सा मरहम ले जाके उसके ज़ख़्मी दिल पर लगाऊँ। हाय मेरे प्यारे शौहर:—

सीने में ज़ख़्म तेरे हैं क्या बेनिशां लगे।
ज़र्रार हाथ मलता है फाहा कहां लगे॥

आह, ओ मूज़ी, जालिम, खूनी, जल्लाद! इस बेसिबात हस्ती पर तुझे इतना घमंड है तो क्या तुझे कारूं और फरउन की मौत पसंद है?

ज़र्रा०—बस चली जा, ओ नादान औरत! जिस चिराग़ में रौग़न न होगा वह हरगिज़ रौशन न होगा। यह तेरी नसीहतों का सुरमा मेरी अक्ल की आंख को रौशनी न दे सकेगा।

हुस्न०—बेईमान! शैमान!

ज़र्रा०—चुप; ओ नाफरमान!

हुस्न०—मैं नाफरमान! ओ जहन्नम की आग! क्या देखती है; इसकी ज़बान जला दे। ओ मौत के फरिश्ते! इसे

मौत की तल्ख दारू पिलादे । ओ आसमान ! तू इस गुनहगार पर फट पड़ । ओ ज़मीन ! तू इस पर उलट पड़ । आह ! कोई नहीं सुनता; ज़मीन, हवा; आसमान बरखिलाफ हैं— अब मुझ से सारा जहान बरखिलाफ है । ओ जहाँ गर्द, ऐ चाँद, सूरज, सइयारो, फरोग, जमीन व आसमान के तारो; तुम ऐ सरबुलंदो ! तुम मुझे इस क़दर तो गला के न मारो, न मारो, न मारो । ओ ऊँचे आसमान, यह तू किसका सोग करता है जो हर शब स्याहपोश रहता है । हाँ, शायद तू अपने बेवफा भाई के ग़म से स्याहपोश है । ओ आफताब, अब तू क्यों छिप गया और वह तेरा ज़र्रीर ताज क्या हो गया । हाँ, शायद तेरे भाई कमर ने वह ताज तेरे सर से उतार लिया और दिन की बादशाहत तुझ से छीन ली । क्या तू अपने भाई से अपनी इस बेइज़्ज़ती का एवज न लेगा ? जरूर लेगा, और मैं भी अपने जालिम भाई से अपना बदला लूंगी । हाँ जरूर उस नासजा से बदला लूंगी । उसने मेरा सीना चाक किया है; मैं उसका गरीबाँ चाक करूंगी; उसने मुझे पीस कर खाक किया है; मैं उसे हलाक करूंगी । उसने मुझे जलाया है; मैं उसे जलाकर खाक करूंगी । (रौशनअख़्तर का हँसना) कौन कहता है भाई खूनी है; कहने वाला कोई जुनूनी है । हट जाव, पलट जाव, आओ आओ ऐ मेरे प्यारे शौहर ! ओहो, आखीर में तुम्हें मेरी मोहब्बत खैंच लाई; और दिलफरेब की मोहब्बत काम न आई । आओ, आओ, मेरे सीने से लग जाओ । हैं, क्यों बोलते नहीं हो, क्या हमसे तुम ख़फा होके खामोश हो गये । सब से तुम्हें इन्कार था हमसे तो प्यार था । हम भी तुम्हारे दिल से फरामोश हो गये । हाँ, हो गये, फरामोश हो गये । जाओ, हमने भी तुम्हें

फरामोश कर दिया। अब जंगल मेरा मस्किन होगा; वीरानः मेरा मदफ़न होगा; बेकसी मातम करेगी; नरगिस चश्म नम करेगी; बुलबुल कब्र पर फूलों की चादर चढ़ायेगी। जिनको शमा जलायेगी; निसार परवाना होगा; फ़लक शामियाना होगा; दरिंदे मेरी गमख्वारी करेंगे, मेरी मोहब्बत का दम भरेंगे; दरख़्त मुझे खुशगवार मेवा खिलायेगा; दरिया मुझे पानी पिलायेगा।

(हुस्नपरवर का दीवानगी के हालत में जाना। ज़रार का ग़ुस्से में खड़े रहना। ड्रापसीन का गिरना)

ड्रापसीन।

अंक तीसरा। सीन पहिला।

रास्ता।

गाना।

खलासी—रहे जीत हमारी मौला पायें आला व ऊला, नाम जंगबहादुर दूल्हा, दूनी हो शान जहाँ में। कर दुश्मन को तहोबाला, डायनामेट का गोला मारें छापा, करदे पसपा दिलेर आन में। मन चले जांनिसार हैं, मरदाने जंगजू सवार हैं, मर्द मैदान हैं सब अफसर हैं नामदार। है सभी फौज शाही आमादा कारजार॥ रहे जीत०— (सब का जाना)

अंक तीसरा। सीन दूसरा।

दरिया।

गाना सहेलियां।

मँझधार डोले मोरी नावरियां, पार अब लगादे।
मोरे लिये पिया दरिया में तुम जाल डालो रेशम का।
हम तेरे छींटों में दरिया नहीं आने वाले,
और ही होंगे तुझे मुंह से लगाने वाले।
जितने मोती हैं तेरी कद्र बढ़ाने वाले,
आबरू है वह मेरे गोश से पाने वाले।

हर एक लासानी है, माहेनुरानी है, उठती जवानी है, पानी पानी शर्म से पानी है॥ मँझधार डोले०— (पटाखा)

गज़न्फर—ओहो, दुश्मन आमादा जंग है; बेफायदा दिरंग है। ऐ दिलरुबा! रुखसत।

दिल०—नहीं नहीं ठैरो, आहः—

किस तरह तुमको इजाजत दूं भला जाने की मैं।
क्या तेरी दूरी से प्यारे नहीं घबराने की मैं॥

गज़न०—प्यारी! यह वक्त बातों का नहीं; गिला शिकायतों का नहीं; खुशी से रुखसत दो; जाने की इजाजत दो।

दिल०—अच्छा जाइये। लेकिन साथ अपने सर उदू का लाइये; हो खुदा हाफिज तुम्हारा जाइये। मैं यहां मुन्तजिर खड़ी रहूंगी।

(गजन्फर का लड़ाई के लिये जाना। गोलों का चलना)

ओफ! ओफ! कानों के परदे फटे जाते हैं; कलेजा हिला जाता है; चलो यहां से जल्द चलो।

दिलन०—(मन में) खुदगर्ज, खुदमतलब।

(दिलफरेब का जाना)

गजन्०—कहां है वह माहपारा मेरी जिंदगी का सहारा। अरे देखो देखो, उसको देखो; समुन्दर की लहरो! तुमने मेरा बेश बहा, खुशनुमा, अनमोल मोती चुराया है।

दिलन०—आलम हजरत! मल्का साहेबा इस खौफनाक नजारे के देखने की ताब न ला सकें इस लिये उन्होंने खुद को साहिल पर ठैराया है।

गजन्०—चलो; हम भी चलें।

अंक तीसरा। सीन तीसरा।

बागीचा।

तौफीक—ओफ! लोमड़ो ने सेर पर गलबा पाया; ढेले ने पहाड़ को खाक में मिलाया; जांनिसार की कोशिश काम न आई; आखिर गज़न्फर ने शिकस्त और जर्रार ने फतह पाई। करीब था कि दुश्मनों की हार हो, मगर गज़न्फर याद दिलफरेब में बेकरार होकर मैदान जंग से भागा; दुश्मनों का सोता हुआ नसीब जागा।

गजन्०—(आकर) अफसोस! आज मैंने बरसों की नामवरी ख़ाक में मिलादी। ओ ज़ालिम औरत! तूने मुझे बड़ी दग़ा दी। तेरी ही याद आज मुझे बाइसेरुसवाई हुई:—

कुछ खुदा से भी डर ओ हुस्न की दौलत वाले ।
देख किस हाल को पहुँचे तेरी उल्फत वाले ॥

दिल०—(आकर) दिल मलूल, चेहरा उदास, होश गुम, रुखसत हवास । अफसोस, मेरी मोहब्बत ने इनको इस हाल पर पहुँचाया ।

गज़न्०—आह, कल मैं कौन था? रूम का शाहन्शाह; और आज एक औरत की मोहब्बत में तबाह ।

दिल०—प्यारे !

गज़न्०—कौन दिलफरेब ! जा जा मेरे पास न आ । क्या कोई और सितम बाकी है जो मुझसे मिलने की मुश्ताको है:-

जितने सद्में थे हुए पैदा ज़माने के लिये ।
मुझ अकेले को दिये तूने उठाने के लिये ॥

लिल्लाह ! अब तो रहम से काम ले; अपनी तेग़ सितम को थाम ले । बस जा, मेरे आगे से जा ।

दिल०—प्यारे ! मेरी ख़ता माफ करो । हाय ! मैं यह न जानती थी कि तुम मेरे जाते ही लौट पड़ोगे और अपने दुश्मनों से न लड़ोगे ।

गज़न्०—ओ नाकारा ! क्या तू यह न जानती थी कि, मेरा दिल तेरी लहर मोहब्बत में एक जहाज़ की तरह था और तू इस जहाज़ की नाखुदा थी । जिधर तूने सुक्कान फिराया, मैंने उधर रुख बदलाया । ओ औरत ! अगर तेरी पुरफरेब मोहब्बत का मेरे बहादुर दिल पर पूरा पूरा अख्तियार न होता, तो कभी मेरा यह हाल जार न होता:—

अब तेरा नाम भी भूले से न याद आये कभी।
बेवफाओं की खुदा शक्ल न दिखलाये कभी॥

दिल०—आह, रहम! रहम! मैं मिन्नत करती हूं, कदमों पर गिरती हू।

गाना दिलफरेब।

कुरबान जान बिसमिल तुझ पर कातिल खंजर मार। सर की कसम तुझे, दिलबरी कर या सितमगरी कर ऐ दिल आजार॥ कुरबान जान०—
जाय निकल तेरे दिल से कुदूरत मेरे प्यारे कातिल। मिट्टी में हाथों से अपने मिला। मुजरिम हूं, नादिम हूं, मैं बेकस ग़मगीन हूं लाचार॥ कुरबान—

गजन्फर—आह टूटा दिल किस तरह बनाये कोई।
जो नक्श है किस तरह मिटाये कोई॥
मुमकिन नहीं जा सके दिल का गुबार।
आइना नहीं जो पोंछ डाले कोई॥

दिल०-दिल पसीजा न कुछ तेरा हाय रोने पर मेरे।
यह कुदूरत जायगी क्या ख़ाक होने पर मेरे॥
अगर ऐसा है तो लो इस कुदूरत का नतीजा भी देख लो।
(खंजर से अपने को मारना चाहती है)

गजन्०—सब्र प्यारी! सब्र; तूने मेरे मग़रूर दिल पर फतह पाई और मैंने तेरी ख़ता माफ फरमाई:—

सच है ग़ारतगरे शकेब तुझे।
जो कि कहते हैं दिलफरेब तुझे॥

(कासिद का आना)

क्यों, कहां से आया; क्या ख़बर लाया।

कासिद—आला हज़रत! आपका दिया हुआ सुलह का पैग़ाम गुलाम ने पहुँचाया मगर बदअन्देश जर्रार ने सुलह को हिक़ारत के साथ नामंजूर फरमाया। और कहा कि, जाके कहदे कि वह मुर्गी ही जल गई जो सोने का अंडा देती थी।

तौ०—अफसोस; यह कौन जानता था कि, एक कमसिन बच्चा बुजुर्गों के साथ ऐसा बदअन्देश निकलेगा; पहिले ही प्याले में तलछट देगा।

गज़न०—अब उसका क्या इरादा है?

सिपाही—वह जंग पर आमादा है।

तौ०—हुजूर! अब सुलह को छोड़ देना चाहिये और तलवार से समझ लेना चाहिये। क्योंकि, जो शेर कुत्ते से दबेगा तो एक बूढ़ा गदहा भी उससे सरकशी करेगा।

गज़न०—ओ नाकिसुल्अक्ल बच्चे! तू बिच्छू होके साँप से बल खाता है; अज़दहे के साथ लड़ने का इरादा रखता है। जाओ कह दो जर्रार बदशआर को, अगर मौत का तलबगार है तो मुकाबिले के लिये तैयार हो जाये। किसी की जान मेरे हाथ से बचने न पायेगी। मक्तल की जमीन मेरे तेग़ से काँप जायेगी, कयामत जिसको कहते हैं वह कलके रो आयेगी। (जाता है)

दिल०—हाय! नहीं मालूम अब क्या होगा।

ज़ात०—होगा क्या, तुम्हारी जान को रोना होगा; और सब को अपनी जानें खोना होगा। अजी पहिली शिकश्त की बला तो आबरू पर टली, मगर अबकी जो शिकस्त मिली तो समझ लो जानों की खैर नहीं।

दिलने०—मूये! जरा चोंच सँभाल; ऐसे बदअफआल मुंह से न निकाल। अब इस लड़ाई में जरूर फतह पायेंगे हमारे हुजूर।

ज़ात०—हाँ जरूर; हाँ जरूर; मगर बशर्ते कि यह घाघरा पल्टन भी साथ साथ हो। वह उधर से तलवार चलाये, तुम इधर तेग़अदा से बिसमिल बनाओ। उधर से खंजर चले, इधर से तीरे नजर चले। फिर लड़ाई का दंगल खासा बन जाय रंग महल! फिर वह जीता, वह मारा। नदी फतह पाई खासी डेढ़,हाथ को।

दिलने०—मूये की बात है या शैतान की आँत।

सिपाही— बेगम साहेबा! जर्रारपाशा का कोई खुशामद नामी नौकर आप से कुछ अर्ज करता है।

दिल०—या अल्लाह! कहीं सुलह का पैगाम न लाया हो। जा बुला ला।

ज़ात०—सुलह का पैगाम! हरगिज़ नहीं, खुशामद नाम है तो ज़रूर किसी मतलब से आया होगा। अबे ऐ ऐ! तू कोई आदमी है या भूचाल। (खुशामद का आना)

खुशामद—हैं, क्या तू मुझको कहता है बदअफआल?

ज़ात०—जी हाँ आपको, और आप ने क्या समझा अपने बाप को?

खु०—देख बे, हमसे अदब से बात कर।

ज़ात०—अबे! चलबे ओ दो कौड़ी के नफा।

खु०—अच्छा अच्छा, फिर कभी तुझे देख लेगा बन्दा ।

ज़ात०—तो अब क्या यहाँ बनके आया था अन्धा ।

खु०—ख़ैर ।

ज़ात०—ख़ैर क्यों ? कैसी गत बनाई । मसल है कि दबी बिल्ली चूहों से कान कटाये ।

खु०—बेगम साहेबा ! यह ग़ुलाम अपने सरकार जमी-इक्तेदार शहन्शाहेआलमपनाह फलक़ बारेगाहजाह सिकंदर बख़्त, ज़ीनत ताज़ोतख़्त, हुमायूं, फरबलंद अख़्तर, शहरयार, बावकार जर्रार नामदार का पयाम शौक लाया है और आप से तनहाई में अर्ज करने को फरमाया है ।

दिल०—तनहाई में कोई जरूरत नहीं; बेख़तर यहां बयान कर ।

खु०—बहुत बेहतर । बदकिस्मती से जो रंज आपको पहुँचा है, हमारे सरकार उसकी तलाफी फरमाना चाहते हैं ।

दिल०—क्या खूब; अच्छा तो वह सुलहनामा को मानले, और यह जानले कि रंज की तलाफी हो गई और तलाफी भी काफी हो गई ।

खु०—अजी साहेब सुलह कैसी ! आप सुनिये तो सही ।

दिल०—और क्या ।

खु०—वह आपको इस गिरी हुई हालत से निकाल कर तरक़्क़ी के बुलंद मीनार पर चढ़ाना चाहते हैं ।

दिल०—यानी ?

ख़ु०—यानी उसके यह मानी कि वह आपको अपने दिल की मल्का बना कर आपके रंजो ग़म को मिटाना चाहते हैं ।

सहेलियां—हैं ?

दिल०—चुप; आ गुस्ताख़ ! खुदा की शान ! कल के लड़के ने भी यह हौसला पाया कि, मगरूर दिलफरेब को अपनी मल्का बनाने का शौक चुर्राया। जिसने कितने ऐसों को अपने जूती के तले मल डाला।

गाना दिलफरेब।

जा जा नाकारे मुझे प्यार की गर्ज नहीं, यार की गर्ज नहीं, वन्दयेजर नहीं मैं; मुझे समझाये क्या नासज़ा अदना बशर नहीं मैं। हूं मैं मल्का आलम की; परवाह नहीं शाह जम की। तेरे आक़ा से जी शान, मेरे घर के हैं दरबान, रखती ख़तर नहीं मैं॥ जा जा नाकारे०—

खु०—हैं, बेगम आला !

दिल०—बस उसे कहदे जाके, यह मुमकिन नहीं शाखे-गुल पर हा नशीमन जाग का।

जात०—हां; और भी कह देना, अगर चादर से ज्यादा बाहर पाँव फैलायेगा तो मारे जूतों के तेरा भुरता बनाया जायेगा।

खु०—अबे चुप रह, तू कोई यहाँ का गवर्नर है या लार्ड।

जात०—बन्दा है अपने बादशाह का बाडीगार्ड।

खु०—बाड़ीगार्ड; मेरी मुअज्ज़ज़ बेगमः—

टूटे हुए चिराग़ की चाहत को छोड़ दो।
परवाना वार उसकी रिफाकत को तोड़ दो॥

दिल०—ओ बेवकूफ ! परवाना फानूस की रिफाक़त तोड़े । तो क्या आफताब से रिश्तये उल्फत जोड़ेः—

हैफ इन्सान में हो मकरो दग़ा की आदत ।

और हैवान में हो मेहरो वफा की आदत॥

खु०—नादान बानू ! जो मोहब्बत गर्ज की होती है, वह दवा हर मर्ज की होती है ।

ज़ात०—अबे वाह बे खुशामदी टट्टू ।

खु०—भला ऐसी वफा किस काम की ।

जिसमें रुसवाई हो नंगो नाम की ।

जिसमें कुछ सूरत न हो आराम की ॥

ओ बेअदब लईन ! अदब के हो करीबः—

तालुक़मये तेग़ बे पनाह न हो ।

और तेरे आका का रौशन दिन यों स्याह न हो ॥

खु०—ऊँ, जिसको खुदा रक्खे, उसको कौन चक्खे । बस जनाब ! अब मैं जाता हूं ।

ज़ात०—जहन्नुम में ?

खु०—देखना तो क्या क़यामत सरपै लाता हूं ।

दिल०—आह ! नहीं नहीं, ठैर ठैर; आह ! उधर दुश्मन जबरदस्त, इधर अपने हौसले पस्त । उधर किस्मत बरसरे-यारी, इधर नसीब दरपै सितमगारी । अब मस्लेहत यही है कि, दुश्मन से फरेब चलूं । खुशामद !

खु०—फरमाइये ।

दिल०—अच्छा बिलफर्ज अगर वह उम्मीद भी मैं बर लाऊं तो क्या तू तरफैन से सुलह करा सकता है ?

खु०—बेशक।

दिल०—अच्छा तो फिर मुझे मंजूर है यह बात।

खु०—(अप्रगट) वाहरे खुशामद, देखी तेरी करामात। (प्रकट) लो बेगम ! यह कौल का हाथ। (गजन्फर का आना)

गज़न्०—हैं, यह कौन है बदज़ात, जो इससे मिलाया हाथ।

खु०—जनाब बन्दा अपने हुज़ूर फैज़ गंजूर जर्रारपाशा का फरिश्तादा है।

गज़न्०—फरिश्तादा है ! मगर बड़ा ही हरामज़ादा है। अरे कोई है ? इस सगे नापाक को बाँध के एक दर्जन कोड़े लगाओ।

ज़ात०—हाँ; तब मालूम होगा बच्चा आटे दाल का भाव।

खु०—ख़बरदार ! मुझे कोई हाथ न लगाओ; अपनी अपनी आबरू बचाओ।

ज़ात०—बच्चा उल्लू की दुम अब अपनी आबरू बचाओ तुम।

खु०—मैं उल्लू की दुम और तुम ?

ज़ात०—उल्लू के बाप।

गज़न्०—ओ दिलफरेब ! दिलफरेब ! क्या तू वही दिलफरेब है या इस वक्त मेरी आँखें ग़लती कर रही हैं। अगर तू वही दिलफ़रेब होती तो एक नजिस कुत्ते को अपने हाथ चूमने को कभी न देती। ओ खुदा ! यह हाथ उठने के पेश्तर फालिज से बेजान क्यों न हो गये:—

सौ वज़ू करके देते थे बोसे हबीब को।
बे उज बोसे मिल गये क्योंकर रक़ीब को॥

दिल०—ओ नामुन्सिफ, मुरीदेशक बादशाह ! क्या यही है मेरी वफा का एवज़।

गज़न्०—वफा ! और तू; काँटों में खुशबू। नहीं नहीं; ऐ दिल:—

इन हसीनों से वफा की छोड़ दे उम्मीद को।
किसने पाया है शबे तारीक में खुर्शीद को॥

हाँ, पीटो इस हरामजादे को:—

ता इसे उम्र भर यह जुल्म व सितम याद रहे।
इन हसीनों से न मिलकर कभी दिलशाद रहे॥

खु०—ओ बापरे ! मर गया; मर गया; मर गया।

ज़ात०—अबे मरदूद मर गया तो फिर यह बोलता कौन है तेरा भूत !

खु०—अरे हाय ! हाय ! मैं तो मुआ, कोई मदद को आओ।

ज़ात०—क्या हुक्म है फरमाओ। सुसराल में जरा न शरमाओ। हां, तुम जी तोड़ कर मरम्मत किये जाओ।

खु०—अरे बापरे ! मार डाला, मार डाला।

गज़न्०—बस छोड़ दो, इस नासजा को।

ज़ात०—दोस्त ! मार तो तूने बहुत खाई। मगर मेरा एहसान मान कर कहीं चोट नहीं आई। सच कहा है कि, बन्दा खूब मार खाता है।

गज़न्०—ओ नासजा ! अब जो तू कभी किसी हसीन को देखेगा। तो आज की सजा याद करके तेरा दिल काँप उठेगा।

खु०—जी बजा।

गज़न्०—जा और कहदे ज़रीर बदएतबार से कि, यह बेहुदा ख़्याल दिल से निकाल, ऊँचे पहाड़ पर कमन्द न डाल। अगर तेरा मददगार ताज है तो मेरा साथ देने वाली

यह तलवार है। और तू भी सुन रख; ओ दग़ाबाज़ औरत! अगर तू अपने हुस्न के जाल में फरिश्तों के दिल को फँसा लेने का दावा रखती है। मगर यह मेरी तेज तलवार इस जाल के टुकड़े टुकड़े कर देने के लिये काफी है।

दिल०—हाँ; करदो शौक़ से करदो; मगर टुकड़े करने से पहिले अपनी नापाक निगाहों से इसे देख लो; जो जाल कि नेकी के सुफेद धागों से बुना है उसमें बदी के धागों का कहीं स्याह निशान नहीं है।

गज़न०—तो क्या उस सगे नापाक ने तेरे इन प्यारे हाथों का बोसा नहीं लिया।

दिल०—नहीं; बल्कि उसने जर्रार को सुलह पर रजामन्द करा देने का इत्मिनान के लिये कौल का हाथ दिया था।

गज़न०—किस शर्त पर?

दिल०—इस शर्त पर कि मैं जर्रार की चाहती मलका बनूं।

गज़न०—हैं, क्या यह हो सकता है!

दिल०—हरगिज़ नहीं।

गज़न०—फिर इकरार क्यों किया?

दिल०—अपनी गर्ज निकालने के लिये और दुश्मन में सुलह की बुनियाद डालने के लिये।

गज़न०—महज़ गलत; सरासर धोका।

दिल०—गलत! धोका! ओ खुदा! अब मैं अपनी बेगुनाही का सुबूत कैसे दूं। ओ कुदरती जबरदस्त ताक़त! अगर मेरे तमाम जिस्म के खून में एक भी क़तरा बदी का हो तो सब खून मेरी रगों में ज़हर बन कर दौड़ जाये और मुझे बद-नसीबों की मौत आये। मेरे जिस्म का बाल बाल नश्तर बने और हाथ साँप का फन बनके मुझे डस ले।

गज़न०—बस बस, ऐ रश्केमाह ! तू बेशक है बेगुनाह । आ प्यारी ! मेरे गले लग जा; गम के आँसू न बहा ।

ज़ात०—तौबा, तौबा, तौबा ।

गज़न०—तेरे एक क़तरे इश्क की कीमत रूहेज़मीन के बेइन्तेहा खज़ाने की दौलत है ।

दिल०—और मेरे नजदीक भी आपके सर का एक बाल लाखों ताजों से भी बेश कीमत है । ऐ हमनशीनों ! जल्द यहाँ बज्मसुरूर आरास्ता करो ।

गाना सहेलियां ।

चले दौर मुल का खुशगवार, आज आया है ज़माना फस्लेगुल का । दिलदार यार अलबेला मत-वाला है, रंग रँगीला चटकीला, रंगरेलियां मनायें जी गुइयां । दिखलायें रंग दिखलायें रंगरेलियां, आहा हा हा, वाह वाह वाह ।

दिल०—मैं पिलाऊँ रिझाऊँ हां तुम्हें मोरे सइयां, सुनाऊँ तुम्हें बतियां०— (कासिद का आना)

कासिद—आलमपनाह ! ख़्वाब गफलत से बेदार हो; आमादये कारज़ार हो ।

गज़न०—हैं, क्यों ?

कासिद—क्योंकि ज़र्रारपाशा खिलाफे वादा लश्करकशी पर हुआ है आमादा ।

गज़न०—ओ दिलफरेब ! ओ दिलफरेब ! क्या यही वादा उस नावकार खुशामद ने तुझसे किया था । क्या इसी लिये तूने उस नजिस कुत्ते को अपना हाथ चूमने के लिये दिया था ।

दिल०—हाय! फिर वही बदगुमानी।

गज़न्०—ओ ज़ालिम औरत! तूने मुझे बड़ी दग़ा दी। यह तेरे ही फितने जगाये हुए हैं, यह तेरे ही काँटे बिछाये हुए हैं:—

सलीका कहां तेग कातिल में इतना।
यह तेरी ही चालें सिखायी हुई हैं॥

दिल०—आप खफा ही हुए जाओगे या कोई ख़ता भी बताओगे।

गज़न्०—ख़ता; ओ पुरजफा! तू ज़ाहिर में मेरी दोस्त है मगर बातिन में मेरे दुश्मनों की साथी है। (जाता है)

गाना दिलफरेब।

रूठे सइयां को मोरे मनाय कोई लाओ; लगी को बुझाओ जलाओ नहीं छतियां।

चला है छोड़ के बिसमिल मुझे कहां कातिल।
चुका के जा मेरा झगड़ा ओ बदगुमान कातिल॥
कि ता न हश्र में दावा मैं कर सकूं खून का।
तू सर से पहिले मेरी काट ले जुबाँ कातिल॥

दिलेनादां को आह क्योंकर मनाऊँ समझाऊँ बिना दिलदार॥०—

अंक तीसरा। सीन चौथा।

महल जातशरीफ।

छलावा—जिस दिन से मेरे शौहर उल्लू के पट्ठे को मेरी पाकदामनी का सुबूत मिला है। बस मेरे हुस्न का गिरवीदा

होता चला है। अब मैं झूठ भी कहती हूं तो सचही मानता है और मुझे सच्चाई की देवी जानता है।

(ज़ातशरीफ का एक बूढ़े के भेष में आना)

ज़ात०—अरे हाय ! मैं मुआ; अरे दौड़ो; खबर लो; बूढ़ा मरा।

छ०—हाय ! हाय ! कोई बिचारा बूढ़ा ठोकर खाकर गिर पड़ा ! ऐ बूढ़े बाप ! कौन हो आप।

ज़ात०—मा...मा माई मैं एक ग़रीब फकीर हूं; बरगश्ता तक़दीर हूं। चूंकि रात को आँखों से कम सुझाई देता है इसलिये बन्दा कभी ठोकर खाकर गिर पड़ता है।

छ०—अरे बूढ़े बाप ! थोड़ी देर यहाँ आराम करो आप।

ज़ात०—हाँ, मैं दो घड़ी यहां सुस्ता लूंगा; फिर घर का रास्ता लूंगा।

छ०—मगर कुछ थोड़ा सा खालो।

ज़ात०—मेहरबानी, अगर कुछ ला दो।

छ०—गरीब बूढ़ा। (जाती है)

ज़ात०—सच कहना, क्या सगूफा छोड़ा। अभी अभी मैंने एक सराय वाले की जबानी सुना है कि कोई मुश्ताक बेग है रिजाला; जिसने मेरी औरत की दूकाने असमत का फूंक दिया है दिवाला। मेरी ग़ैर मौजूदगी में हर रोज़ यहां आता है और शराब पी पिला कर चला जाता है। मगर मेरी अक्ल तसदीक़ न तसलीम नहीं करती कि ऐसी नेक बीबी होगी बदकार, जिसने एक बेगुनाह पाकदामन होने की वजह से पाई नाक। अच्छा, मैं तो कहता हूं कि अगर इस हैरत-नाक वाक़ये को फरिश्ते भी देख पाते तो मेरी बीबी की पाकदामनी की कसम खाते। अगरचे मैंने अपनी बीबी को

पाकदामन जाना, तो क्या ग़लती की: ज़रा आप ही फरमाना। लेकिन शक की दवा तो लुकमान को भी नहीं आती। जब से यह खबर सुनी है, हजार दिल को समझाता हूं मगर दिल से बदगुमानी नहीं जाती। आखिरश यह बूढ़े का बहरूप बनाया और गिर पड़ के घर में रसाई का मौक़ा पाया। अरारा आती है!

छु०—लो। (फिर चली जाती है)

ज़ात०—अल्लाह! अल्लाह! किसी रईस वाला शान के मकान में भी न होता होगा ऐसा भारी पकवान। मगर यह सब तैयारी किसके लिये की गई होगी। हाँ, शायद इसी इब्लीस के लिये की गई होगी। वाहरे नसीब! ऐरे ग़ैरे को तो मिले मेरे दस्तरख़्वान से चिकना चुपड़ा और मुझे मुयस्सर हो बासी दाल और सूखी रोटी का टुकड़ा। कमाई मेरी खा गये लूट के, निकलता क्यों नहीं नमक फूट के।

गाना ज़ातशरीफ़।

यारो मेरी जोरू बड़ी नेकज़ात; खुदा खुदा करे दिन रात। कोई हुई होगी ऐसी नहीं इलाही जहान में नेक सिफात॥ ज़ाहिर भोला, बातिन काला, वाहरी खाला! वाह वाह वाह! शौहर घर में आये तो बोले जा बदज़ात, मारूंगी लात, तोड़ूंगी दांत। यार जो तशरीफ लाये तो बोले तसलीमात, चल मेरे साथ, कर मीठी बात।

माँगे शौहर खाना तो बोले, खा भूसा बासी टुकड़ा रूखा सूखा।

यार जो खाना माँगे तो बोले खा हलुवा, दूध मलीदा, ताजा सम्बोसा। सर पर आफत फूटी किस्मत वाहरी खाला! वाह वाह वाह! (मुश्ताक का पुकारना)

मु०—प्यारी! दरवाजा खोल।

छ०—आई, आई।

ज़ात०—माई! यह किस बदगौहर की आवाज़ है?

छ०—चुप चुप; मेरे शौहर की आवाज है।

ज़ात०—(अप्रकट) लो, एक शौहर तो घर में बैठा है और दूसरा पैदा हो गया। हां, यह वही है नाबकार मुश्ताक जिसको मुझे पहिले भी यहीं देखने का हुआ था इत्तेफाक।

मु०—हैं, यह कौन बैठा है दिलआरा?

छ०—एक गरीब बूढ़ा है आफत का मारा।

मु०—आफत का मारा, या इसी का कोई प्यारा है? लेकिन प्यारी इसका वहां क्या काम?

ज़ात०—(अप्रकट) लो, घर हमारा और ग़ैर का इजारा।

छ०—प्यारे! काम तो कुछ नहीं सिर्फ घड़ी दो घड़ी आराम करके चला जायेगा अपने मकान।

मु०—या खुदा, इसकी निगाहें खिश्मगीं हैं या सिगनल की सुर्ख सुर्ख लालटेन हैं। प्यारी! यह बूढ़ा तो मुझे धोकेबाज़ नज़र आता है।

छ०—अजी अल्लाह अल्लाह करो; कहीं ककड़ी का चोर भी मारा जाता है।

मु०—खैर होगा कोई मरदूद।

ज़ात०—(अप्रकट) अबे मरदूद तेरा बाप।

मु०—अब आ प्यारी, ज़रा होठ से होठ तो मिला और एक बोसा तो दिला।

ज़ात०—(अप्रकट) दिल में आता है कि कम्बख़्त का घोंट दूं गला।

छ०—प्यारे! एक बोसा क्या मांगते हो, एक पर एक इतने बोसे लीजिये कि भर जाय पेट।

ज़ात०—(अप्रकट) अरे कम्बख़्त कहीं पेट न भर लेना, वरना मैं तेरा पेट ही फोड़ दूंगा। अरारा! बस बस, हाय लेही लिया खबरदार अब न लेना।

मु०—प्यारी! अब तो मेरी तेरी मोहब्बत लैला मजनू से भी ज्यादा हो गई है। मगर यह तो बता कि तेरे शौहर उल्लू के पट्ठे के कान पर अपनी मोहब्बत की भनक तो नहीं पड़ गई है?

जात०—(अप्रकट) नहीं नहीं; बिलकुल नहीं।

छ०—अजी बन्दी भी कोई ऐसी वैसी है।

ज़ात०—(अप्रकट) अरी तूतो बड़ी छतीसी है।

छ०—आज कल तो मैंने वह सिक्का जमा रखा है कि मियां उठते बैठते सात सलाम करते हैं और मेरे पैर धो धोके पीते हैं।

मु०—वह क्योंकर?

छ०—बात यह हुई कि उस दिन जो तुम मेरे मकान पर आये और तुम्हारे आने से मेरा शौहर खबरदार हो गया और साथ ही बदगुमानी का भूत सर पर सवार हो गया, मुझे बाँध कर कोने में डाल दिया। इतने में ख़्वाजासरा आया और तुम्हारा संदेशा पहुँचाया। बस मैं उसे अपनी जगह पर बाँध कर तुम्हारे पास आई और तुम्हें मुलाक़ात

के लिये कमरे में ले आई। इस असनाय मुलाकात में ख़्वाजा सरा के दर्द से चिल्लाने के बाईस मेरा शौहर बेज़ार हो गया और गुस्से में आकर ख़्वाजासरा की नाक काट डाली।

मु०—वाहरे मेरी भोली भाली; खूब घर घाली।

छ०—जब मैं आई तो ख़्वाजासरा ने अपने दर्द की कुल कहानी रो रोके सुनाई। यह कैफियत सुन के मैं तो खुशी के मारे जामे में न समाई।

मु०—यह क्यों, यह क्यों?

छ०—अजी तुम भी निरे उल्लू रहे।

मु०—वह कैसे?

छ०—इस तरह कि ख़्वाजासरा के जाते ही मैंने खुदा से दुआ माँगना शुरू की कि, ऐ खुदा! मैं अगर बेगुनाह हूं तो मेरी नाक मुझे दुबारा अता फरमा।

मु०—अच्छा अच्छा, फिर?

छ०—फिर क्या, यहां तो पहिले ही से नाक मौजूद थी। इस लिये दुआ के मक़बूल होने में कुछ देर भी न लगी।

मु०—अच्छा अच्छा, फिर?

छ०—फिर क्या था, ज्यों ही मियां ने मेरी नाक सलामत देखी तो लगे अपने तकसीरों की माफी माँगने, मेरे पैरों पड़ने और मेरी पारसाई का दम भरने।

मु०—अरे वाहरे उल्लू।

ज़ात०—(अप्रकट) अरे तेरा बाप उल्लू।

मु०—प्यारी! तूने अपने शौहर के दिल पर अपनी पाक-दामनी का ऐसा एतबार जमाया कि कल को वह खुदा न खास्ता दुनियां से गुजर जायगा तो तुझे पाकदामनी का सार्टीफिकेट दिये जायगा।

ज़ात०—(अप्रकट) हां; जरूर जरूर।

मु०—अब जा प्यारी एकसा नम्बरों की बोतल तो लाना और अपने गोरे गोरे हाथों से मुझे पिलाना।

ज़ात०—जैसे इसके बाप का मेरे घर में धरा है खजाना।

मु०—क्यों, ओ बूढ़े जिन; क्या तूभी पियेगा पोटवीन। राल टपक पड़ी।

ज़ात०—हाँ, मैं भी थोड़ी सी पी लूंगा।

मु०—वाह, यह बूढ़ा तो बड़ा रंगीन है। अबे यह क्या है।

ज़ात०—हुजूर यह सारंगी है।

मु०—वाह वाह! जब तो खूब ही मज़ा होगा।

ज़ात०—हैं, हैं; हुजूर! यह हुजूर का ज़ाती मकान है या किराये का? म...म म...म...

मु०—मेरा ज़ाती सरमाये का।

ज़ात०—(अप्रकट) मरदूद! कभी तेरे बाप ने भी बनवाया था। (प्रकट) और क्यों हुजूर! यह औरत भी आप की है।

मु०—अबे मेरी नहीं तो क्या तेरे बाप की है।

ज़ात०—बजा बजा।

मु०—कम्बख्त! कहीं ऐसी बात न पूछ बैठे जिसमें मेरा भाँडा फूटे।

ज़ात०—और हुजूर... ... ...

मु०—अबे कहीं पीछा भी छोड़ बूढ़े लंगूर।

ज़ात०—कोई थोड़े ही दिनों की है यह बात कि इसी मकान में कोई और ही रहा करते थे नेक ज़ात।

मु०—यह इस तरह करोध करोध के क्यों पूछता है बद-ज़ात; अब क्या बताऊँ है हात। हां; ओ...ओ...ओ...ओ मेरे चचा थे आली सिफात।

जात०—(अप्रकट) वाह क्या सआदतमंद भतीजे हैं जो अपने चचा की औरत पर रीझे हैं । (प्रकट) और देखिये हुजूर! कुछ उसका भला ही सा नाम है ओ ..ओ...ओ...जा . जा

मु०—जातशरीफ ।

जात०—हाँ हाँ, वही मर्द लतीफ । मगर हुजूर ! उनको कोई भतीजा न था ।

मु०—अबे न था तो मैं कहां से आ गया ?

जात०—इसी का तो मुझे भी ताज्जुब है बड़ा ।

मु०—यह बूढ़ा तो बुरी तरह मेरे गले पड़ा ।

जात०—हाँ, बच्चा समझे थे कि दाव चल गया ? मगर वह दिया घिस्सा कि सब पेंच निकल गया ।

(छलावा का आना)

छ०—लीजिये नोश कीजिये ।

मु०—ऐ जानेजां ! इस शग्ल के साथ होता रहे थोड़ा थोड़ा गाना ।

छ०—मुनासिबः—

तुम पियो मैं पिलाऊँ तुमको ।
गाना गाके मैं रिझाऊँ तुमको ॥

गाना छलावा ।

सइयाँ तुझे मंगवा दूं ह्विस्की की बोतल एक दर्जन; साक़िन बनूंगी मैं भर भर के दूंगी, वारूं घर दर ज़र धन तुझ पर दूंगी वार ॥ सइ०—

ज़ात०—हाय बदज़ातों ने लूटा मेरा सब घर बार ।

छ०—मूये शौहर को तुझ पर निसार करूं ॥

सइयाँ तुझे०—

मुश्ताक—शेर—चांद सा चेहरा नूर की चितवन माशा अल्लाह माशा अल्लाह। तुरफा निकाला यार ने जोबन माशा अल्लाह माशा अल्लाह॥

जात०—शक्ल मुछंदर ऊंट की गरदन माशा अल्लाह माशा अल्लाह। गदराया जोबन नाग के दो फन माशा अल्लाह माशा अल्लाह॥

मु०—गुलरुख नाजुक, जुल्फ हैं सुंबुल, आंख है नरगिस सेब जनखदाँ। जिसमें तुम हो गैरत गुलशन माशा अल्लाह माशा अल्लाह॥

जात०—गाल है पापड़, नाक है केला, आंख है आलू सेब जनखदाँ। जिसमें तुम हो हलुआ सोहन माशा अल्लाह माशा अल्लाह॥

मु०—गमजा उचक्का, इशवा डाकू, कहर अदाये शेर हैं बातें। चोर निगाहें, नाज है रहजन, माशा अल्लाह माशा अल्लाह॥

जात०—जो कुछ मैंने हाल सुना था आंख से अपनी देख लिया। बाहरी मेरी नेक पड़ोसन माशा अल्लाह माशा अल्लाह॥

मु०—अबे बूढ़े! कुछ तूभी सुना।

जात०—जो इरशाद।

मु०—अबे जल्दी कर।

जात०—जैसे इसके बाप का हूं नौकर।

गाना ज़ातशरीफ ।

घर चोरी से यारों को बुलवाना, मै पीना पिलवाना, होते हैं रकीबों से इशारे मेरे आगे ।

यह ढंग न थे पहिले तुम्हारे मेरे आगे, हत्तेरे प्यार की ऐसी तैसी ॥ घर०— (जाहिर हो जाता है)

मु०—कौन ज़ातशरीफ ? (भाग जाता है)

जात०—यह शैतान दुबारा मेरे हाथ से निकल गया। अब मैं घर जाकर कहवा की नाक ही उड़ा देता हूं ।

अङ्क तीसरा । सीन पांचवां ।

मैदानजंग ।

सरदार—खबरदार ।

खुशामद—तू कौन है नामदार ।

सरदार—बादशाह गज़न्फर के फौज का एक सरदार ।

खु०—तो क्या तू अपने ज़ुल्म की तलवार को म्यान में न करेगा ।

सरदार—हरगिज़ नहीं; अगर हम अपनी तलवार को म्यान से बाहर न निकालेंगे तो फिर कोई मरदानगी के साथ हमारा नाम न लेगा ।

खु०—तो क्या तू बादशाह की रिफाक़त से मुंह न मोड़ेगा ।

सरदार—कभी नहीं; बल्कि जहाँ बादशाह का पांव पड़ेगा वहां मेरा सर गिरेगा ।

खु०—देख; अगरचे तू बहादुर है मगर बेवकूफी न कर । गुस्ताख होकर शेर के मुंह में पाँव न डाल ।

सरदार—यह बेहूदा ख़याल दिल से निकाल; यह वक्त तेग़ आज़माई का है न कि ज़बान आराई का:—

खाला का घर नहीं है यह मैदान जंग है ।
आजा मुकाबिले पर गर अरमान जंग है ॥

ख़ु०—आह, तूने मुझे मार लिया ।

गज़न्०—कौन ज़र्रार ?

ज़र्रा०—कौन; मेरा हरीफ़ गज़न्फ़र ?

गज़न्०—मुझे तेरी ही जुस्तजू थी ।

ज़र्रा०—और मुझे भी तेरी ही मुलाकात की आरजू थी ।

गज़न्०—तुझमें इतना हौसला नहीं कि मेरी बराबरी करे।

ज़र्रा०—तू बूढ़ा होकर जवानों से लड़ाई में नहीं जीत सकता । क्योंकि टूटा हुआ हथियार कुछ काम नहीं दे सकता।

गज़न्०—देख ज़र्रार; देख:—

क्यों पड़के जान देता है फिकरे महाल में ।
इस मुर्ग़ को तू फाँस सकेगा न जाल में ॥

ज़र्रा०—हाथी का जोर सिर्फ एक आँकुस के मुतीअ होता है ।

गज़न्०—ओ जंग आजमा लड़के ! अगर तेरी यही मर्जी है तो मैं भी तुझसे आमादये कीं हूं । अगरचे तू होशियार है तो मैं भी कुछ बेखबर नहीं हूं । मगर देख; मैंने तुझसे पहिले लड़ाई में कमर नहीं बाँधी है। तूने ही साँप की पेटारी खोल दी है ।

ज़र्रा०—क्या कहा, मैंने साँप की पेटारी खोल दी !

गज़न्०—हाँ तूने, ओ बदगौहर ! तूने कैद करके मेरे भाई को मरवा दिया; बेगुनाह बच्चे को मेरे कत्ल करवा

दिया । मेरी जानिब से मेरी रिआया को भड़का दिया; और कितने बेगुनाहों को तूने डुबो दिया । आज तक जिनका न पाया रोने वालों ने पता । और हुस्नपरवर को भी घर से जलील करके निकाला, जिसके सदमे ने उस बेचारी को दीवाना बना डाला ।

ज़र्रा०—अब खबरदार हो जा तेरी बारी है ।

गज़न्०—इन्शाअल्लाह फतह हमारी है ।

ज़र्रा०—नहीं मालूम ज़माना किसका साथ देगा और सितारा किसकी जान लेगा । दो भूके शेर हैं और एक हरिन की रान है । गोश्त वही खायेगा जिसमें ताक़त ज्यादा होगी । दो हाथी आपस में सूंड़ मिलाते हैं, बाज़ी वही ले जायेगा जिसमें कूवत ज्यादा होगी ।

गज़न्०—हाँ, सँभलजा ।

ज़र्रा०—अच्छा आ जा । (हुस्नपरवर का दीवानावार आना)

हुस्न०—नहीं नहीं; ठैरो; ऐ बेरहमो ! रहम से काम लो । अपनी तेग सितम को थाम लो । तलवारों को म्यान करो । यह तलवार तुम्हारा खून चाटेगी और मेरी जिन्दगी की भी जड़ काटेगी ।

गज़न्०—हरगिज़ नहीं ।

ज़र्रा०—दूर हो नासजाई ! तू यहाँ किस लिये आई ।

हुस्न०—एक जालिम के पंजे से बेगुनाह को छुड़ाने के लिये ।

ज़र्रा०—जा जा; यह ज़र्रार अपने इरादे से कभी बाज न आयेगा, क्योंकि साँप का दिल मेहरबानी की गुफ़्गू से कभी मुतास्सिर न हो जायेगा ।

गज़न्०—अगर मुनास्सिर न होगा तो यह शमशीर और तेरा सर होगा।

हुस्न०—आह! नहीं नहीं; मेरे प्यारे शौहर! मेरे भाई को जान से न मारना।

गज़न्०—हरगिज़ नहीं; ऐसे ज़ालिम को हलाक करना गोया दुनियां को ज़ुल्म से पाक करना है।

ज़र्रा०—और यह क्या दुनियां पर नहीं आशिकार है कि, अगर मैं ज़ालिम हूं तो तू सितमगार है।

हुस्न०—नहीं नहीं:—

न तो ज़ालिम न दिल आज़ार न सितमगार है यह।
तू मेरा भाई है और शौहर हक़दार है यह॥

अगर कोई ज़ालिम व सितमगार है तो यह तुम्हारी तलवार है। इसको तोड़ कर फेंक दो; कज़ा का दरवाज़ा बन्द करो।

गज़न्०—यह हरगिज़ नहीं हो सकता।

हुस्न०—ऐ भाई; तू फेंक दे।

ज़र्रा०—हरगिज़ नहीं; यह उस वक्त मेरे हाथ से छूट कर गिर पड़ेगी, जबकि इसका सर या मेरा सर धड़ से कट कर गिर पड़ेगा।

हुस्न०—आह! कोई नहीं सुनता; क्या दुनियां से मुरव्वत की सिफत जाती रही। हाँ जाती रही; जभी तो शेर ने जंगल में ठिकाना बनाया है। क्योंकि, वह भी आदमियों की मुरव्वत से डरा हुआ है। आँख की पुतली भी मुरव्वत से बरबाद होने के सबब से स्याह है। इन खूँखारों के नज़दीक खून का

दरिया बहा देना ऐसी आसान बात है जिस तरह अब्र को बरसात है।

गज़न्०—ऐ मेरी बावफा मल्का! जा जा अब अपने दिल से यह ख़्याल निकाल दे; अपने बदनसीब शौहर की मोहब्बत पर ख़ाक डाल दे।

हुस्न०—ओफ! नहीं नहीं; हरगिज़ नहीं। मैं अपने सीने को चीर कर दिल को निकाल कर फेंक दूंगी। मगर ऐ अज़ीज शौहर! तेरे मोहब्बत के ख्याल को दूर न होने दूंगी।

गज़न्०—ऐ पाक मोहब्बत की देवी! जब कि मेरी जिन्दगी का जहाज़ तूफान में गिरफ़्तार है, तो फिर तेरा शिगाफ बन्द करना बेकार है। जा मेरी आस छोड़ दे, क्योंकि जब दरख़्त गिर पड़ता है तो उसका साया नहीं रहता है।

हुस्न०—ओफ! नहीं नहीं; तुम कभी न मरोगे, प्यारे भाई! क्या मेरा शौहर कत्ल होगा?

ज़र्रा०—हाँ जरूर, लुक्मये अज़ल होगा।

हुस्न०—और तूभी ओ शैतान! कत्ल होगा। सब जहान कत्ल होगा; यह भी कत्ल होगा; मैं भी कत्ल हूंगी:—

देख देख जालिम यां कट मरा है दारा।
यह कब्र है फलाँ की, मदफन है यह फलाँ की॥

ओहो, लड़ाई शुरू हो गई। (पटाखा)

(दोनों में तलवार चलने लग जाती है। हुस्नपरवर दीवानगी में जंगल की तरफ भाग जाती है। गजन्फर घायल होता है। मगर वफादारों की कोशिश से उसकी जान बच जाती है)

अंक तीसरा। सीन छठां।

दीवानखाना।

ज़ात०—जिधर देखो पड़े ईवान खाली हैं।
खुदा जाने कहां सुल्तान आली हैं॥

माजअल्लाह ! वह लड़ाई का दंगल था या दायराये अजल था। जो आया सो ढेर हुआ; खातमये बिल खैर हुआ। बाप बेटे से, बेटा बाप से ऐसे लड़ पड़े जैसे कोई नेवला साँप से लड़ पड़े। खुदा बचाये ऐसी लड़ाई से, सूली के चढ़ाई से। हैं, यह कौन तशरीफ लाते हैं हिमाकतमआब। ओ बापरे ! यह तो कोई डाकू है बदखू।

(रज़ापाशा व यूसुफ का डाकू के लिबास में आना)

रज़ापाशा—कौन; ज़ातशरीफ।

ज़ात०—कौन मेरे मरहूम आका; रज़ापाशा और यूसुफ। या इलाही ! यह कैसा तमाशा। मगर जनाब आप क्योंकर कब्र की नींद से जाग आये, किस तरह अल्लाह मियां के घर से भाग आये।

रज़ा०—घबरा नहीं, यह तुझे हम फिर किसी वक्त बतला देंगे। इस वक्त तू हमें गज़न्फर की हालत से आगाह कर !

ज़ात०—जनाब ! हाल तो मेरे आका का बहुत ही बुरा है। क्योंकि वह विचारा लड़ाई में जख्मी होके गिरा है।

यूसुफ—हाय वालिद !

रज़ा०—खैर; क्या मुज़ायका; हम अभी चलके उसके ज़ख्मी दिल पर फतह की खुशखबरी का मरहम धरेंगे और ज़र्रार बद्कार को गिरफ़्तार करेंगे। (सब जाते हैं)

अंक तीसरा। सीन सातवां।

बाग गजन्फ़र।

दिलफरेब—शेर—अरसा हुआ यह ज़हर पिलाया था मगर हैफ। होता नहीं किसी का भी कुछ जल्द असर हैफ॥

मुसाफिर पहिला—शेर—मारा मुझे जल्लाद ने है किस गुनाह में। फरियाद है अल्लाह तेरी बारगाह में॥

दिलन०—ज़लालतमआब बेगमः—

यह क्यों जहर का इश्तेहार हो रहा है।
यह क्यों कत्ल पीरोजवां हो रहा है॥
यह क्यों नीम बिसमिल तड़पते हैं सारे।
चमन मक्तले कुश्तगां हो रहा है॥

दिल०—ऐ महरमे राजः—

किसी तालिब को बेरहबर नहीं मतलूब मिलता है।
पता मरने ही वालों से अजल का खूब मिलता है॥

जाओ किसी और को ले आओ।

मु० दूसरा—हैं, जबरदस्ती पकड़ना; रस्सियों में जकड़ना; और यहा आना तो लाशों का तड़पते हुए पानाः—

आलम यह देख कर मेरी हालत तबाह है।
यह बागये गज़न्फर है या कत्लगाह है॥
दिल०—बुज़दिल! समझ ले गर तेरी हालत तबाह है।
यह बागये गज़न्फर है न यह कत्लगाह है॥
मुल्के अदम के सैर की यह सैरगाह है॥

मु० दूसरा—बेगम साहेबा! इस आदिल हकीकी से डरो और मुझ पर रहम करो।

दिल०—रहम, ओ कमफहम! रहम तो खुदा की सिफत का नाम है; मुझे उससे क्या काम है:—

गुलाम मतलब हूं मैं सरापा,
है खौफ किसका रहम कहां का।
मैं खेल होली का जानती हूं,
लहू बहा के किसी जवां का।

निकल ऐ नील के साँप! आज अपना असर दिखला।

मु०—आह! (डसा देती है)

दिल०—हाँ, जहर तो मतलब का मिला; गुंचये उम्मीद खिला। हाँ, अब लाशों को ले जाओ; किसी खंदक में फेंक आओ। ऐ किस्मत के फरिश्ते! सुन ले; गौर कर; जर्गार की शिकस्त हो, हम बलंदोपस्त हो। या आबेमर्ग हल्क में मैं उसके डाल कर, बेखौफ जिऊँ सीने का कीना निकाल कर। और अगर हमारी हार हुई, तो जिन्दगी दुश्वार हुई। अपनी किस्मत का नविश्ता छीन लूंगी, यही ज़हर पीके चल दूंगी।

कासिद—गज़ब हुआ, गज़ब हुआ।

दिल०—क्यों, क्या हुआ?

कासिद—बस, दुश्मनों की तलवारें बिजलियों का काम कर रही हैं।

दिल०—और हमारी तलवारें?

कासिद—मछलियां बन बनके लोहू के दरिया में बह रही हैं।

दिल०—अफसोस!

दिलन०—अफसोस! अब इनकी जिन्दगी का जमाना गुजर चुका, पैमाना भर चुका:—

जल्दी खबर दो जाके उस नाशकेब को।
मारा कज़ा ने जान से तेरी दिलफरेब को॥

(जाती है)

दिल०—ओफ! जिन्दगी नाबूद हो गई, राहत मफकूद हो गई, ज़मीन उलटी, आसमान फटा, ऐश व आराम का काफिला लुटा। अब दिलफरेब! बेसब्र व शकेब जान देने में क्यों तहम्मुल है: कुलजुमे मौत का यही पुल है।

(ज़र्रार का आना)

ज़र्रा०—ठैर ठैर: दिलफरेब! ठैर।

दिल०—कौन ज़र्रार! बोल बोल: क्या मेरा प्यारा तो नहीं मारा गया।

ज़र्रा०—हां: उस मगरूर का सर उतारा गया।

दिल०—ओफ ओफ! ओ कासिदे मौत: हुक्म अजल: यहाँ से टल। ओ मेरी मोहब्बत को तोड़ देने वाले संगदिल! दूर हो।

ज़र्रा०—वाये किस्मत ! वह भी कहते हैं बुरा।
हम बुरे सब से हुए जिसके लिये ॥

दिल०—किसके लिये ?

ज़र्रा०—तेरे लिये।

दिल०—क्या मेरे लिये ?

ज़र्रा०—हाँ; तेरे लिये।

दिल०—वह किस तरह ?

ज़र्रा०—मजबूर तेरी चाह ने जबकि मुझे किया।
अबरू का तेरे काम मेरी तेग़ ने लिया ॥

दिल०—मगर ओ नादानः—

तोड़ता है झाड़ कोई एक मगर के वास्ते।
तूने सर काटे जो लाखों एक सर के वास्ते ॥

ज़र्रा०—अगर बेहिश्त सिर्फ आरज़ू करने से मिल जाती तो दुनियां में कोई खुदा की बन्दगी न करता। अगर तू भी मुझे ख्वाहिश करने से मिल जाती तो मैं कभी अपने अज़ीज़ों का कातिल नहीं बनता।

दिल०—तो क्या तूने मारकये ताज व तख़्त हासिल करने के लिये उसको नख्तये मौत पर नहीं सुलाया।

ज़र्रा०—हरगिज़ नहीं; क्योंकि मेरी इन मग़रूर निगाहों में वह जड़ाऊ मोतियों का ताज तेरे नक्शपा से ज्यादा वक्त नहीं रखता।

दिल०—क्या करूं, इस मोहब्बत करने वाले का अपना बावफा दिल देके इस शहरवफा से दग़ा करूं ? नहीं नहीं; इस मेरी बेवफाई पर एक ज़माना ही नहीं बल्कि खुदा भी

लानत करेगा। मगर हाय ! यह भी तो मुझसे नामुमकिन है कि इस नौजवान को अपनी मोहब्बत में तड़पता सिसकता देखूं। क्या खुदा मेरी इन ज़ालिमाना हरकतों से नाराज़ न होगा ? जरूर होगा, फिर क्या करूं ।

ज़र्रा०—अपने आशिक पर रहम करो ।

दिल०—वाक़ई गज़न्फर तो मुझसे छुटही चुका है, मेरी जिन्दगी का काफिला तो लुट ही चुका है; मगर अब यह मुझे जिलाता है, नया जनम दिलाता है, तो मैं भी फिर क्यों न पतंग बन कर जान निसार करूं; गले लगाऊँ; बलाये लूं; तुमको प्यार करूं ।

गाना दिलफरेब ।

प्यार करके निभाना ऐ मेरे मेहरबान ! सख्त मुश्किल है । बार उल्फत उठाओगे क्या, सहर बयानी और यह सुरतियाँ दिल को हमारे लुभाये रे । करो इकरार उल्फत ओ मेरे चाहने वाले । तेरे कुरबान, दिले बीमार, मेरे गमखार, मेरे दिलदार । प्यार०—

(दोनों का जाना, शिकस्तखुर्दा जख़्मों से चूर चूर गजन्फर का तौफीक के साथ आना)

तौफीक—ऐ शाह ! होशियार हूजिये, खबरदार हूजिये !

गज़न्०—पानी पानी ।

तौ०—ऐ आफताब सिपहरे सुल्तानी ! अभी आता है पानी ।

गज़न्०—हम यहां कहां हैं ?

तौ०—अपने बाग के दरमियान ।

गज़न्०—मैं यहां कैसे आया; और लड़ाई का क्या हुआ? बोल बोल तौफीक! जबान खोलः—

आह, मैं समझा तुम्हारा जिस लिये सर झुक गया।
जिससे लाखों सर झुके थे वह गजन्फर झुक गया॥

ओ ऊँचे आसमान! तेरी हिम्मत पर हैफ है। जिसे तूने सुलेमान का मर्तबा दिलाया, उसे तूने एक चिउँटी के पैर पर गिराया। ओ बेवफा तलवार! तेरी वफा पर हैफ! जिसने तुझे बरसों खून पिला पिला कर इन्तेज़ार की गोद में पाला, उसी जान निसार का तूंने लोहू पी डाला।

दिलन०—हुजूर! हुजूर! बड़ा गज़ब हो गया।

गज़न्०—हैं, क्या हुआ?

दिलन०—हुआ आज से गुल चिरागये मोहब्बत।
दिया दिल पै मल्का ने दागये मोहब्बत॥

गज़न्०—हैं, क्या दिलफरेब दुनियां से चल बसी।

दिलन०—हाँ, चल बसी; चल बसी; चल बसी।

गज़न्०—ओफ! कैसी पाक बाज़, कैसी वफादारः—

उठा ले दहेर से इस नाशकेब को यारब।
मिलादे मुझसे मेरी दिलफरेब को यारब॥

तौफीक! एक बात मान।

तौ०—इरशाद फरमान।

गज़न्०—ले यह तेग़ आबदार।

तौ०—किस लिये?

गज़न्०—अपनी वफादारी का सुबूत दे।

तौ०—क्या अपना सर काट के?

गज़न्०—नहीं; सरे गज़न्फर काट के।

तौ०—ओफ! यह मेरे कानों ने क्या सुना।

गज़न्०—जल्दी कर बातें न बना।

तौ०—ऐ शाह! क्या नमक हलाली इसी का नाम है, वफादारों का यही काम है कि, अपने आक़ा को शमशीर से हलाक करे। जिसके शाये में परवरिश पाई उसी की जड़ काट डालने का ख्याल करे। नहीं नहीं:—

जो हाथ मैं उठाऊँ वह मेरे तन से कट पड़े।
तलवार साँप बनके मुझही को लपट पड़े॥

गज़न्०—ओ बहानासाज़! क्या इसी वफा पर था तुझे नाज़। सच है, जब बुरा वक्त आता है तो सब आँख चुराये जाते हैं। मगर ओ गज़न्फर! गज़न्फर! तुझे क्या हो गया है। तू अब भी इस तलवार से हजारों का सर उतार सकता है। तो क्या एक अपना ही सर नहीं उतार सकता है। जाओ तौफीक! जाओ।

तौ०—यह जरूर जान गँवाने पर आमादा है। अब मेरा जीना भी बेफायदा है। ऐ असीर सितम शाह! आप मुझ पर हैं खफा तो लीजिये आपकी जिद के लिये... ... ...

गज़न्०—तो क्या तू मुझको कत्ल करेगा?

तौ०—जी हां

गज़न्०—ले यह तलवार।

तौ०—मगर सरकार जब तक यह बहादुरी और दिलेरी से भरा हुआ चेहरा मेरे सामने रहेगा तब तक मेरा हाथ न उठेगा।

गज़न्०—ले यह मैंने मुंह फेर लिया।

तौ०—यह मैंने भी हाथ उठाया।

गज़न्०—कर वार।

तौ०—मगर सरकार ! इतना करम कीजिये कि मेरा आखिरी सलाम लीजिये।

गज़न्०—सलाम; मुझ पर ऐ एहसान करने वाले ! मेरे तन से बोझ उतारने वाले सलाम !

तौ०—ऐ खुदा ! क्या मैं अपने आफताब करम से जुदा होने वाला हूं। उसके दस्त शफकत की रौशनी से निकल कर अदम की तारीकी में जाने वाला हूं। हाँ, हाँ, मुझे अदम की तारीकी मन्जूर है, मगर इस आफताब को ग्रहन लग जाये यह नहीं मन्जूर है।

गज़न्०—कर वार। क्या बड़बड़ा रहा है।

तौ०—ऐ शौक हस्ती ! दूर हो। ऐ ख्याल मस्ती ! कफूर हो। खबरदार ! होशियार ! कोई हवस मेरे नजदीक न आये; कोई आरजू मुझे मुंह न दिखलाये। ऐ खुदा ! मुझ सितम-कश की रहनुमाई कर; कैद तन से मेरी रिहाई कर।

(तौफीक खुद को मार लेता है)

गज़न्०—हैं हैं; तौफीक ! खुदाया यह मैं क्या देखता हूं। अफसोस ! ओ नामुन्सिफ शख्स ! जब मैं अज़ल का तालिब था तो फिर तुझे मरना नामुनासिब था। तूने मुझसे वह चीज़ छीन ली जो हफ़्त अक़लीम से मुझे प्यारी थी। हाँ, शायद अजल धोका खा गई कि, मेरे बदले तुझे आ गई। क्यों, ऐ कब्बीस अजल ! तेरे खरीदारों में था। मैं तलबगारों में था या यह तलबगारोंमें था। हैं, कौन ज़र्रार और दिल-फरेब ! यह कैसी ताज्जुब खेज़ वारदात ! नेवला और साँप के साथ ? (ज़र्रार और दिलफरेब का आना)

दिल०—कौन; गज़न्फर की रूह?

गज़न्०—ओ नाकारा! तो क्या कज़ा ने था मुझको मारा कितने मुझे रूह के नाम से पुकारा।

दिल०—तो क्या ज़र्रार ने तुम्हें जान से नहीं मारा फिर तो मुझे धोका दिया गया; धोका। ऐ मेरे प्यारे!

गज़न्०—ओ नाकारा! अगर तुझे मुझसे सच्ची मोहब्बत होती तो मेरे मरने की खबर सुनते ही खुदकुशी कर लेती। अपना नाम जाँबाज आशकों की फेहरिश्त में लिखवा लेती। ओ बेवफा! देख; इस वफा तलाश की लाश। ऐ कुश्तये तेग़ जफा! तसवीर महर वफा:—

हर एक को अज़मा देखा न निकला बावफा कोई।
हुआ हैगा न कोई बावफा न आमना कोई।
वफा की राह में एक तू बड़ा साबित कदम निकला॥

दिल०—गज़न्फर! ज्यादा न बोल; सोच समझ के जबान खोल। बेवफाई तो दिलफरेब का पेशा है, मगर तू बेवफाओं का बादशाह है।

गज़न्०—मैं बेवफा या तू?

दिल०—तू बेवफा।

गज़न्०—मैं कैसे?

दिल०—जब तेरा मासूम बेटा कत्ल हुआ,—नज़रे अजल हुआ; तो तूने ज़रा भी गम खाया; इन संगीन आँखों से एक कतरा भी आंसू न बहाया?

गज़न्०—आह!

दिल०—जब तेरा हक़ीक़ी भाई मारा गया; अजल के घाट उतारा गया; तूने ज़रा भी परवाह की; नाला किया, या आह की?

गज़न०—हाय! हाय!

दिल०—क्यों इसी पर वफ़ा का दम भरता है। आबे नदामत में डूब कर नहीं मरता है। और सुन; जबके तूने अपनी ब्याहता बीबी को कि, जिसके लिये ख़ुदा को गवाह बनाया था, तब अपने अक़्द में लाया था, उसको हलाल कर दिया; पाये जफ़ा से पायमाल कर दिया। तो ओ ख़ूनी जल्लाद! बता, क्या यही थी रस्म वफ़ा।

गज़न०—आह, ओ चुड़ैल! यह मैंने सब कुछ किया। मगर किसके लिये? तुझ बदज़ात के लिये। क़ातिल बना, बेवफ़ा हुआ, किस लिये? तुझ कम औक़ात के लिये। मगर उलटा तू मुझ पर तान करती है जाँफ़िशानी के एवज़ लान करती है:—

दिल को समझा था तेरे सीने मे सरकश निकला।
गुल सा रुख़सार तेरा शीशये आतिश निकला॥

दिल०—ओहो ओहो:—

जब चाह थी तब अब चाह नहीं है।
बिगड़ो मेरे जूती को परवाह भी नहीं है॥

गज़न०—अरी ओ काग़ज़ी फूल! बूये वफ़ा से ख़ाली; सूरत में मक़बूल; मेरे दुश्मन के पहलू में, खड़ी होकर बल खाना, मेरी छाती पर साँप लड़ाना।

दिल०—हाँ; बेशक मैंने किसी चाहने वाले को चाहा तो क्या बुरा किया। अपनी वज़ादारी निबाहा तो क्या किया।

गज़न०—क्या मैं एक ऐसी ज़ालिम औरत से अपना इन्तेकाम लिये बगैर छोड़ दूंगा। ओ नहीं; नहीं; ज़रीर! बदला लूंगा।

ज़रीर—खबरदार!

गज़न०—ओ शैतान! तू किसकी हिमायत पर आमादा है।

ज़री०—जिसका ज़रीर हज़ार जान से दिलदादा है।

गज़न०—फिर तो तुम गुनहगारों का खून करना हलाल है।

ज़री०—क्या मजाल है।

दिल०—बेहूदा ख्याल है।

ज़री०—अरे फौज आओ। इस पुरतकसीर को कर लो जंजीरों में असीर। (गज़न्फर बांध लिया जाता है)

गज़न०—खुदाया! क्या वह मेरी मोहब्बत एक बर्फ की डली थी, जो गल गई? क्या वह आँधी थी, जो एक मरतबा चल गई? क्या वह शफक की रंगत थी, जो तुर्फतुलऐन में दूसरी रंगत से बदल गई:—

> था वह भी एक ज़माना कि आलम था ख्वाब का।
> खाली मोहब्बतों की कोई बात ही न थी॥
>
> अब दिल से उसने कुछ हमें ऐसा भुला दिया।
> गोया कभी की हम से मुलाकात ही न थी॥
>
> ओफ! हूर के धोके में क्या मैंने भी पाली नागिन।
> डस लिया तूने जो बन कर काली नागिन॥

हाँ हाँ, इन मिटी हुई मूरतों में कलम से रूह फूंकने वाले मुअर्रिखो! इस मेरी तसवीर का खाका अपनी यादगार के

वर्के पर खैंच लो, ताकि दुनियां में आने वाली नसलें इस मेरी मुरक्कये हसरत को दीदये इबरत से देख कर नसीहत का सबक हासिल करें और ऐसी बेवफा हुस्नफरोश औरतों के प्यार से बचें। और मेरी मज़लूमों की रूहो ! मेरा गुनाह माफ करो। ओ मेरी मक्तूला रोशनअख्तर बीवी ! तेरी एक एक नसीहत सच निकली। मगर ओ सितमगर गज़न्फर ! ओ नंग उल्फत गज़न्फर ! तूने एक प्यारी बीवी को तहे तेग किया: कुछ न दरेग किया:—

रस्मे वफा को हाय जहां से मिटा दिया ।
मजनू ने हल्क लैला पर खंजर चला दिया ॥

हाय ! अब मैं कहां जाऊँ, हुस्नपरवर को कहां पाऊँ । हाय ! ऐ जज़बये दिल ! असर दिखला। ऐ जोश उल्फत ! उस दीवानी को यहां खींच ला। ऐ मेरी हुस्नपरवर ! तू कहां है। ऐ मेरी रश्के कमर ! तू कहां है ?

(हुस्नपरवर का आना)

हुस्नपरवर—यह आपकी लौंडी यहां है ।

गज़न्०—कौन, हुस्नपरवर ?

दिल०—हाय ! हाय ! बुरा हुआ इस बला का आना।

हुस्न०—हैं:—

यह कैसी पांव में बेड़ी पड़ी है ।
यह क्यों हाथों में डाली हथकड़ी है ॥

गज़न्०—कौन कहता है यह हथकड़ी फौलाद की है।
कौन कहता है कि जंजीर यह हद्दाद की है ।
कुन्डली मार के बैठी है यह काली नागिन ॥

हुस्न०—ओहो, मेरे प्यारे भाई ! तूने इसको कैद किया है।

ज़र्रा०—हाँ, मैंने ही इसे कैद किया है।

हुस्न०—हैं, क्या इस दिलफरेब की इजाज़त से ?

दिल०—हाँ हाँ, मेरी इजाज़त से ।

हुस्न०—ओफ ! क्या दुनियाँ में क़यामत आ गई, जो तुम दोनों में जुदाई फरमा गई ? आह ! ऐ दिलफरेब ! तूने मेरे शौहर से दग़ा की ।

दिल०—चुप; कैसी दग़ा; हुजूर ! यह आपकी हमशीरा है या गला काटने का शमशीर ?

हुस्न०—हाँ हाँ, यह नेकों के लिये हमशीरा है और बदों के लिये शमशीर है ।

ज़र्रा०—अरे ले जाओ इसको देखते हो क्या।

हुस्न०—आह ! नहीं नहीं ।

ज़र्रा०—बस; चल दूर ।

हुस्न०—खैर; ऐ दिलफरेब ! तूही मेरे प्यारे शौहर को रिहाई दिला ।

दिल०—इन झगड़ों को जाने मेरी बला। मैं आपके भाई की मर्जी के खिलाफ कुछ नहीं कर सकती हूं ।

हुस्न०—ओ एहसान फरामोश ! जिसने आज तक तेरे कहने से खुदा की मर्जी के खिलाफ काम किया, तो क्या आज तू उसके लिये मेरे प्यारे भाई की मर्जी के खिलाफ नहीं कर सकती ? (दिलफरेब से लिपट पड़ती है)

दिल०—ओफ ! छुड़ाओ छुड़ाओ मुझको; इस इन्तेक़ाम के ज़बरदस्त पन्जे से छुड़ाओ या इस कैदी की गरदन उड़ाओ ।

ज़र्रा०—हाँ, धर लो; इस गुनहगार को अपनी बरछियों की तेज अनियों पर। (रज़ापाशा, यूसुफ का मय डाकूदल के आना)

सब डाकू—खबरदार ।

गज़न०—कौन: रज़ापाशा ?

रज़ापाशा—हाँ, वही कुश्तये जफा ।

गज़न०—कौन लख्त जिगर यूसुफ ?

यूसुफ—अब्बाजान !

हुस्न० रज़ापाशा ! आपने इस वक्त हमारे साथ वह सलूक किया है, जैसे खेती के साथ अब्र रहमत ।

ज़ात०—और आप को भी इन कैदियों के साथ वह सलूक करना चाहिये जैसे गुनहगारों के साथ जहन्नुम ।

रज़ा०—नहीं नहीं; इससे भी ज्यादा ज़लील व ख्वार करना चाहिये ।

हुस्न०—नहीं नहीं; रहम करो मेरे अज़ीज भाई पर ।

रज़ा०—नहीं नहीं; ऐसे गुनहगार मुजरिम को बिला सजा के छोड़ देना गोया चीते को भैंस देना है ।

हुस्न०—नहीं नहीं; ऐसे मुजरिम गुनहगार को छोड़ देना गोया दो टूटे हुए दिलों को जोड़ देना है ।

गज़न०—खैर; ऐ दिल आरा ! मुझे मन्जूर है इरशाद तुम्हारा ।

रज़ा०—ऐ निगाहदार ! अपनी हिफाज़त को उठा लो ।

ज़र्रा०—ऐ रहम दिल शाह ! और मेरी मुहसिन बहिनः—

दुनियां में कोई मुझसा गुनहगार न होगा ।
और नेक भी तुमसा कोई ज़िनहार न होगा ॥

हुस्न०—प्यारे भाई, अगर मुझे और बादशाह को तेरी जानिब से कुछ भी मलाल होता तो काहे को तेरी रिहाई का ख्याल होता ।

दिल०—अब देखिये मेरे हक़ में क्या होता है।

ज़ात०—अजी आप का तो ऐसा फैसला होगा जैसे मेरी बीबी का फैसला हुआ। अब तो न किसी वकील की जरूरत होगी न अपील व बैरीस्टर वगैरह की जरूरत होगी।

दिल०—ऐ इन्साफ परवर बादशाहः—

निगाहे लुत्फ के उम्मीद वार हम भी हैं।
कि तेरे मुजरिम व तकसीर वार हम भी हैं॥

गज़न्०—अरे ले जाओ इस नाकारा को सूली पर चढ़ा दो; या इसकी गर्दन उड़ा दो।

दिल०--आह, ऐ गजन्फर ! कुछ तो मेरी उन अगली मोहब्बतों का पास कर और देख, यह वही तेरी दिलफरेब सामने खड़ी है।

गज़न्०—नहीं नहीं; वह मिश्र की मल्का न थी, वह एक काली नागिन थी। जिसने मुझ पर ज़हर कातिल का काम किया; मेरी जान लेने का सामान किया।

दिल०—ज़र्रार; ऐ नौगिरफ़्तार दाम उल्फत ज़र्रार !

ज़र्रा०—चल दूर हो, बाइसे ज़िल्लत नंगनामो उल्फत।

दिल०—हैं, यह क्यों ?

ज़र्रा०—इस लिये कि तूने एक ऐसे शख्स से दग़ा करने में कुछ कोताही न की जो तमाम उम्र तेरा वफादार ग़मगुसार बन कर रहा तो फिर मेरे साथ क्या वफादारी करेगी।

दिल०—तो क्या मैं सभों की ज़ात से नाउम्मीद हो जाऊँ ?

हुस्न०—हाँ; इस वक्त तेरा मददगार कोई नहीं हो सकता। क्योंकि दुनियां में किसो कार बद का नतीजा नेक नहीं हो सकता।

दिल०—तो क्या मुझ से क़त्तई इन्कार है ?

गज़न०—हाँ, हज़ार बार है।

दिल०—बस गज़न्फ़र बस, अब मैं ख़ुद मरती हूं, जान से गुज़रती हूं। हाँ, ऐ मेरी ज़िल्लत इलाज ! आ तेरा इम्तहान है आज। (काली नागिन जो पाले रहती है, डिबिये से निकाल कर ज़बान में डँसा लेती और मर जाती है)

ज़ात०—फ़ख़ किया करते हैं क्या नक़्ल जनाकारी में,

नफ़ा क्या मिलता है अस्मत की दूकानदारी में।

फ़र्क़ बीबी में है और क्या ज़ने बाज़ारी में,

क्या बुराई है स्याहकारी व बदकारी में।

चश्म इबरत से ज़रा देखो यह काली नागिन ॥

ड्राप

उपन्यास बहार

ग्राहक होने में—

[पेशगी एक पैसा भी नहीं देना होता]

उपन्यास ग्रंथमाला

उपन्यास-प्रेमी-पाठकों तथा अग्रिम चन्दा भेजने में हिच-किचानेवाले उपन्यास-प्रेमियों को प्रसन्न हो जाना चाहिये कि उनकी असुविधाओं तथा रुकावटों और शिकायतों को देखकर, क्योंकि मासिकपत्रों में (१) प्रायः अधूरे अधूरे उपन्यास रहते हैं, इससे प्रेमी-पाठकों को पहिले तो नायकों के नाम इत्यादि भूल जाते हैं, (२) किस्से का सिलसिला ख्याल से उतर जाता है, (३) यदि याद भी रहा तो कहीं यदि बयान किसी उलझन की जगह में टूट गया तो आगे के लिये जितनी बेचैनी होती होगी उनका ही दिल जानता होगा, और (४) कहीं यह सोचकर कि आगे का अंक आवेगा तो फिर पढ़ लेंगे, उसे उठाकर रख दिया और दूसरे अंक के आते आते वह खो गया तो सारी उम्मेदों पर पानी फिर गया। पाठकों की इन कठि-नइयों को देखकर बा० देवकीनन्दन, बा० जयरामदास, पं० किशोरीलाल गोस्वामी तथा अन्य अन्य प्रसिद्ध उपन्यास लिक्खाड़ों से लिखा कर यह "माला" प्रकाशित की जा रही है। इसके हर एक अंक में पूरा एक उपन्यास रहता है। आज तक इसकी नव संख्यायें निकल चुकी हैं। सिर्फ एक कार्ड पर ग्राहक होने की सूचना लिख भेजिये। जभी पूरी पुस्तक छपकर अंक तैयार हो जावेगा, तभी बिला डाक खर्च लिये दाम के दाम पर वी. पी. से भेज दिया जावेगा।

राजराजेस्वरी

इसका मूल्य केवल ॥=) मात्र है। बँगला के एक अत्यन्त लाभदायी और शिक्षाप्रद पुस्तक का अनुवाद है। अनुवादक भी हिन्दी संसार के एक परिचित महाशय हैं। बंगभाषा में इसके मूल पुस्तक के अब तक कई संस्करण निकल और पाठकों के गलहार हो चुके हैं। जिस प्रकार यह पुस्तक अपनी शिक्षाओं के कारण अपना सानी नहीं रखती, उसी प्रकार प्रकाशक ने इसके आवरण को भी आर्ट पेपर और दो रंगी स्याही से आवृत कर रंग रूप में भी इसे बे जोड़ बना दिया है।

अनन्त

इस दूसरी पुस्तक का मूल्यकेवल ≈) मात्र है। यह एक छोटी पर बड़े काम की पुस्तक है। इसके लेखक एक उत्साही नैपाली नवयुवक महाशय हैं। अपनी मातृभाषा में पुस्तक रचना की शक्ति रखते हुए भी हिन्दी-सेवा-प्रेम के वशीभूत हो कर उन्हों ने इस पुस्तक को लिख कर स्वयं छपवाया। परन्तु हमारे उपन्यास प्रेमी पाठकों के आलसी स्वभाव और पुस्तक छपवा कर बेच लेने के कठिन कर्म्म ने उन्हें बिलकुल हतोत्साह बनाकर इतना विवश कर दिया कि उन्होंने सम्पूर्ण पुस्तक मय कापी राइट के अधिकार के अध्यक्ष महोदय के सिर लाकर पटक दिया और उन्होंने पुस्तक संग्रहयोग्य देख और लेखक को अर्थहानि से बचाने के विचार से सब खरीद लिया। पुस्तक उत्तम है, छपाई कागज—दोनों अच्छे हैं। पाठकों को मँगा कर देखना चाहिये।

मिलने का पता—

मैनेजर, उपन्यास बहार आफिस,

काशी; बनारस।